सत्यसुकृत, आदिअदली, अजर अचिन्त, पुरुष, मुनींद्र, करुणामय, कबीर सुरति योग, संतायन, धनीधर्मदास चुरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रबोध गुरुबालापीर, केवलनाम, अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, उग्र नाम, दयानामकी दया, वंश-व्यालीसकी दया।

★

अथ श्रीबोधसागरे-

सुमिरनबोध प्रारंभः

★

पञ्चत्रिंशस्तरङ्गः

द्वितीय बोध

(गुरुआई विधिके सुमिरन)-सुमिरन चौकाके अजर गायत्री

अजर गायत्री अजपान। अजर चौका अजर नाम॥
अजर सिंहासन है परवान।
अजर थार भराये तहाँ। अजर पुरुष गवन किये जहाँ॥

अत्र नारियर सन्मुख धरिया । सुर्त सुपारी आगे विस्तरिया ॥
लौंग इलायची जहवां फरी । लौकी लौंग सोध बिस्तरी ॥
ज्ञान ध्यानकी केशर गारी ।
अग्र विचार परममत दिया । अमी अंक तामें कर लिया ॥
अत्र अमर पाटंबर ताना । अग्र सुगंध महाँ परवाना ॥
अजरपुरुषबैठेसिंहासनसम्हारी । संग हंस शोभा अधिकारी ॥
अजर आरती बहुविधि साजी । नानारंग तरंग विराजी ॥
उमगे प्रेम ज्ञान तह छाया । हंसा सोहंगम चौर दुराया ॥
उठे तरग बहुत विधि बानी । अमी अमृतकाशसाहिसमानी ॥
दुबिधा दुरमत दूर बढाई । प्रीति मिठाई थार भराई ॥
जगमग ज्योति रही ठहराई । परमल हंसा रहो समाई ॥
झमके तहवां नूर अपारा । गरज शब्द चहुँ और धारा ॥
चन्द्र सूर जहँ गम नहिं पावा । सकल हंस वसन सुख आवा ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा । यह छबिदेखतजगतहोउदासा ॥
हिम्मत प्रीतिसों आरती साजो । इत उत चित नेक नहिं राजो ॥

अग्र गायत्री नामकी, येही मुक्तिको मूल ।
धर्मदास दृढके गहो, जहाँ अत्र अस्थूल ॥
राजद्वारे जिन कहो, पण्डित सुन करे वाद ।
सो हंसा सतलोकके, लेहि शब्द पहिचान ॥

अत्र गायत्री तुमको दीन्हीं । एतीदयाहम तुमपर कीन्हीं ॥
नाहीं सुमिरन जिह्वा आवा । अधर निरन्तर ध्यानलगावा ॥
गायत्री भेद जानै कडिहारा । चौका निर्णय करै विचारा ॥
कहैं कबीर गायत्री कलसान । अजर अमर धरमूलठिकान ॥

सुमिरन अंशनके नाम बैठक पूजा

प्रथम कूप पीठपर चौका ।
सहज अंशकी बैठक मूलकरी । पूजा खडी सों चौका पोते ॥

सुजन जन अंशकी बैठक अग्रदीप, पुजा चन्दनको छरका ॥
भृङ्गमुनि अंशकी बैठक मंजुल करी, पूजा गादी चँदेवा ॥
अंश पक्षपालनकी बैठक पोहप दीप, पूजा फूलमाला अंगोछा ॥
अंश श्रवण लीलाकी बैठक जगमग दीप, पूजा चोला धोती ॥
अंश सर्वांग सुतंकी बैठक अचिन्त दीप, पूजा थारी कटोरी ॥
भावनाम अंशकी बैठक उदै दीप' पूजा दाख सहत ॥
सुर्त सुभाव अंशकी बैठक ज्ञानदीप, पूजा बदाम मरिच अबीर ॥
अक्षर सुभाव अंशकी बैठक पालंग दीप, पूजा केरा फूल ॥
सन्तोष सुजान अंशकी बैठक अक्षयदीप, पूजा मिश्रि अष्टमेवा॥
कदल ब्रह्माकी बैठक सुखसागर दीप, पुजा सुपारी छोहारा ॥
दयापाल अंशकी बैठक आदि दीप, पुजा झारी अष्ट सुगन्ध ॥
जलरंग अंशकी बैठक पताल पांजी पूजा, पान खरचा माला ॥
प्रेम अंशकी बैठक झँझरी दीप, पुजा घृत कपुर ॥
अष्टांगी अंशकी बैठक मानसरोवर, पुजारिष्ट भोग विलास ॥

प्रथम चार चौका ताके मध्य सिंहासन ।
पान मिष्टान्न नारियल पुरुषको भोग घृत पकवान ॥

उत्तर दिशा जम्बूद्वीप गुरु धर्मदास गोसाँई आरती ज्योति प्रकाश ॥
पूर्व दिशा गुरुराय बंकेज गोसाँई कलश पांचौ वाती प्रकाश ॥
दक्षिण दिशा गुरु चतुर्भुज गोसाँई दलकी झारी पांच पान खरचा साथ॥
पश्चिम दिशा गुरु सहेते जी गोसांई पास न बंशगादी ॥
इतनी विस्तार पुरुषसों ज्ञानी लगि ।
अपने अपने स्थान बैठाये । सब अंशकी लाग चुकाये ॥
धर्मदास को सन्धि बताये । धर्मदास को नाम चुकाये ॥
षोडष अंश पान पर लीन्हें । मुक्तामन सुरती की दीन्हें ॥
कहै कबीर सुनो धर्मदास ।यह भेदकडिहारसों कहो प्रकाश॥

इतना भेद कडिहार जो पावे। आप चले औ जीव बचावे ॥
धर्मराय है चौका माही। वह देखे सबके चतुराई ॥
सुनो धर्मदास चौका गुप्त हैं। ताकी सन्ध्य प्रकट है ॥
चार गुरुकी बैठक पूजा न्यारी न्यारी है।
चार दिशा कायमें हेली। चार दिशा बाहरेली ॥
एक एक गुरुके आठआठपूजाहै। चार गुरुके बतीस साज ॥
एकएकगुरूकेसंगचारचारअंश है। चार गुरुके सोरह अंश ॥

साखी–इतना भेद जो जाने, सो सांचो कडिहार।
इतना भेद नहिं पावै, तेहि छलै काल बटमार ॥
चौकाबैठा फूलके, गाफिल भया निशंक।
बिना भेद जो नारियर, मोर नाशिर चढै कलंक ॥
झूलों काल हिडोरना, नहिं जाने शब्दका तोल।
कहै कबीर धर्मदाससो, मम खाली परे न बोल ॥

सुमिरन बड़ी इकोत्तरी

अजरअचिन्त्यअकहअविनाशी। आदि ब्रह्मा अमरपुर वासी ॥
अदलीअमीअनेहअजावनसोई। आदि नाम सत्य सुकृते होई ॥
परमानन्द है अखिल सनेही। सत्य नाम तत्पुर्ष विदेही ॥
निः कामी निर अक्षर सांचा।अजरअविगतसबहिनमो राचा॥
अमर अपार अनन्त अभेदा। अचल अचिन्त न जाने भेदा॥
अक्षय अगुण अगोचर कहिये।अगमअलेखगहिसतचितरहिये॥
अभय औगाह अकथ बखाना। अम्बुज चरण औ पुरुष पुराना॥
दीनबन्धु करुणामय सागर। दयासिंधु हंसन पति आगर ॥
दीनदयाल सो अधम उधारन। हिरण्मय भवसागर तारन ॥
अरूप अथाह अनाहद राता। योगी जीत सबहिनके दाता ॥
करुणा मय संतन सुखदाई। अभय अचिन्त्य नामगुणगाई॥

सच्चिदानन्द सो सदा उजागर । योग संतायनपतिसुखसागर ॥
सुर्त नामसों जपिये ज्ञानी । अमी अंकूर बीच सहिदानी ॥
प्रथम पुरुष सबहीके मूला । अमीदीप नाम है अस्थूला ॥
आलख नाम पुरुषोत्तम गाऊँ । नाम मुनींद्र सदा गोहराऊँ ॥
सर्व मई साधनपति सोई । भक्तराज बूझो नर लोई ॥
सत संतोष सो सदा सनेही । शब्दसरूपी अविचल देही ॥
प्राण नाक पिब अमृत बानी । सत्यलोकपति नाम बखानी ॥
सद्गुरु जन्म निवारक जानो । बन्दीछोर निश्चय कै मानो ॥
अवागमनके दुःख मिटावो । चौरासी लक्ष बन्द मुक्तावो ॥
शील रूप संतोष पियारा । धर्मराय शिर मर्दन हारा ॥
मुक्तिदाता शीतल उजियारा । नाम परायण प्राण पियारा ॥
अस्थिर नाम अभयपद दाता । अक्षयराज नायक विख्याता ॥
सत्यसाहेब कहो बहोर बहोरी । अक्षय वृक्ष हिरामय डोरी ॥
पुहुपदीप मण्डप गुरु सांचा । हँस सोहँग नाम बिच राजा ॥
सोहँ शब्द नाम है सारा । सत्यवचन बोले कडिहारा ॥
इच्छा रूप संत जन गावै । ज्ञानहि बीज अमोल कहावै ॥
अबोल अशोच असंशय धीर । नाम एकोत्तर कहैं कबीर ॥
एकोत्तर नाम सुमिरे जो कोई । ताको आवागमन न होई ॥
नाम एकोत्तर सुमिरे जबही । सद्गुर बैठे सिंहासन तबही ॥
आरती नाम एकोत्तर चहिये । एकोत्तर विनाननरियन गहिये॥
आरती नाम एकोत्तर धारा । एकोत्तरी विनाकैसोकडिहारा ॥
विना एकोत्तर नहिं निस्तारा । कैसेहु निज मानो कडिहारा ॥
एकोत्तर नाम जानै विस्तारा । सो जानो सांचो कडिहारा ॥
पांच नाम इनहीमों भाषा । सहज पक्ष पालन है साषा ॥
सुर्तसहजपालजरंगश्रवणहै भाई । हँसनतिलकएकोत्तरिलेहोजाई॥

बायें श्रवण लीला सुत है भाई। सुर्त डोर कहों समुझाई ॥
एकोत्तर नहिं जाने विस्तारा। सो जनि जानहु है कडिहारा ॥
जो नहिं जानेएकोत्तरविस्तारा। मिथ्या सो जानो कडिहारा ॥
नहिं तो पूत आहे कडिहारा। लै जीवनको करै अहारा ॥

नाम एकोत्तर जानै नहीं, औ धरे सिंहासन पाँव।
कहैं कबीर तेहि शीशपर, कोटि वज्रको घाव ॥
धर्मदास हँसन तिलक, एकोत्तरि लेहो जान।
अंश सुजन जन मुक्तपद, सत्य शब्द परवान ॥
पिण्ड ब्रह्मण्ड खोजके, राखो शब्दकी आश।
तिलभर काया मूलकमलमें, जहां पुरुष रहिवास ॥
कहैं कबीर जो पाइहैं, एकटक सुमिरे ध्यान।
तिलभर काया सहज कमलमें, जहां पुरुषको स्थान ॥
सहजनाम युग बांधिया, बावन नामकी नेह।
दीप अजयकी ध्यानमें, भई सुर्तकी देह ॥
देह भई तब जानिये, गगनध्यान लौ लीन।
सुर्त सोहँगम शब्द है एकटक सुमिरो संतो जम होय बलछीन ॥
सोहँ शब्द निज सांच है, जपौ अजपा जाप।
कहें कबीर धर्मदाससों, देखो अगम अगाध ॥
साहे शब्द निज साच है, गहि राखो तुम पास।
सोहं शब्दमें मुक्तमें, सत्य मानो धर्मदास ॥
सुमिरन सार एकोत्तरी, चन्द्र सूर घइसार।
कहैं कबीर धर्मदाससों, तासु नाम कडिहार ॥

ज्ञान गम्य जाने जो पावै। भवसागरमें धन्यगुरू कहावै ॥
इति एकोत्तर नाम सिंहासन ध्यान नारियर अङ्कप्रथम स्मरण॥
चौका अङ्क सत्यकबीर धर्मदास को दीन्ह। अविचल

पुरुष नाम अबोल अडोल नाम । अजाबन राय रनछोर नाम ॥
शम्भु सन्तोष नाम । उदैचन्द अक्षैराज नाम ॥
एते नाम रहै लौ लाय । यमराजा तिहि देखि डेराय ॥
अम्बू अपावन नाम । अम्बू शम्भू नाम । एत सत्यकाया प्रकाश ॥
अजरनाम नरियर सचार ।
अम्बू नाम वे पुरुष कहावा । सोहं हंस तहां बिलमावा ॥
सोतो धर्मदासबैठे हैं पुरुषपुरान। सोहं सुर्त तुम मोर सुजान ॥
बेहंग नाम तुम जगमें देहो । हंस छोडाय काल सो लेहो ॥
एही नाम जीव जो पावै । बोधे हंस लोकमें आवै ॥
मैंकबीरदरवानीदरवाजेहौंठाढ।आवतजातसुखउपजैहंसनकोनहिंगाढ
एकोत्तरी नाम सुमिरे चितलाई । आवागमन रहित घर पाई ॥

स्मरण हस्तक्रिया

सुनो धर्मदास हस्तक्रिया सही । महापुरुष मुख अपने कही ॥
नरियर अंकुरमो जीव रहाई । तहाँ सुर्त राखो ठहराई ॥
नरियर उठाय हाथ के लेहू । नरियर मस्तिक हाथ जो देहू ॥
सुर्त समाय जीवमो गयेऊ । नरियर अमरलोक ले राखेऊ ॥
महा पुरुषके दर्शन कियेऊ । चरण बन्दिके शीश नवायेऊ ॥
महा पुरुष लै अङ्क लगाये । तब हंसा लिये हर्ष समाये ॥
अंकुर अंश बिनवे करजोरी । महा पुरुष सुनी बिनती मोरी ॥
अंकुर अंश नाम लौ लाई । भवसागर ते लेऊ मुक्ताई ॥
महा पुरुष सुर्त उतपानी । जाय सुर्त कडिहार समानी ॥
कडिहार सुर्त लीन्ह चितलोई । सोई सुर्त हंसा मो आई ॥
माथे हाथ जीवके दियेऊ । सुर्त समाय हंस मो गयेऊ ॥
गई समाय रही ठहराई । बहुत अनंद हंस तब पाई ॥

जब लग सुर्त रही बांही । कोइ कोइ सन्त सो जानत आही ॥
टीका मुदित पूजै जब आई । यह पिण्ड तबही खस जाई ॥
सुर्त हंस ले गये लेवाई । महा पुरुषके दर्शन पाई ॥
महा पुरुषके चरण छुवाई । करै वन्दगी शीश नवाई ॥
महा पुरुष लिये अंक लगाई । सुर्त हंस नाम तिन पाई ॥
अपने समसर लिये लगाई । महा पुरुष सम शोभा पाई ॥
सुर्त हंस बिनवे कर जोरी । महा पुरुष सुनो बिनती मोरी ॥
भवसागर कडिहार रहाई । तिनके शब्द मुक्त हम पाई ॥
धन्य शब्द धन्य कडिहारा । तिनके शब्द मो हंस उबारा ॥
महा पुरुष चितवे चितलाई । भवसागर ते लेव मुक्ताई ॥
मुक्त होय सतलोके आवै । छिन छिन गुरुके दरशन पावे ॥
महा पुरुष शब्द उचारा । वै कडिहार हैं सुर्त हमारा ॥
जहां जहां सुर्त चित्त लाई । सोई हंस लोकको आई ॥
भ्रमें जीव होय जसमाहीं । तिन सनकी गहे जो बाहीं ॥
भ्रमें जीवको नारियर लेई । हस्त क्रिया नरियरको देई ॥
हस्त क्रिया नरियर जब पाई । भमैं लोक हंस ले जाई ॥
जाहि स्थानमें जीव रहाई । जहां जाय सुर्त समाई ॥
गई समाय रही ठहराई । हंस उधार लोक ले जाई ॥
जो कडिहार हस्त क्रिया पावे । महापुरुष के सुरत समावे ॥
हस्त क्रिया गहे चित लाई । कहैं कबीर हंस लोक सिधाई ॥

स्मरण सिंहासन बैठनेका

अंगन गहे गहनी तहां पुरुष चेतो सन्त बिचार ।
सिंहासन है पुरुष को सुर्तसों रोपो पांव ॥
जीवन पार उतारों तुम्हारे शिर नहीं भार ।
आदि पवन सों बैठो मूलशोध कडिहार ॥

कहैं कबीर धर्मदास सों, सत्यपुरुष चितराख।
अमी अंक जो जाने, जासु जहाँ तत भाष॥

स्मरण दल अर्पणका

अर्पो दिल चौकामें उत्तिम दल बनाय।
कहैं कबीर धर्मदास सो सब अवगुण मिट जाय॥

स्मरण पाषाण रखनेका

पान पुराण हाथकर लीन्हा। सब साहेबका सुमिरण कीन्हा॥
सत्य पुरुष बोले परवाना। बैठे पुरुष मध्य जो स्थाना॥
रेखा लिखो पाषाणमें, अचिंत्य नाम घंट बोल।
कहैं कबीर धर्मदाससों, तब हंसा होय अडोल॥

स्मरण नरियर रखनेका

नरियर नरियर नरियर खरी। नरियर मोरे सत्य कबीर॥
औरसों नरियल मोर न जाई। पांच शब्द लै नरियरमोरेकबीर धर्मदास आई॥

स्मरण नरियर मोरनेका

जलदल लेके नरियर मोरा। सत्य शब्द गहितिनका तोरा॥
मोरो नरियर हुकुम कबीर। सत्य नाम गहि लागो तीर॥
पुरुष नाम है अमी अमोल। नरिययर मोरो खसमनिहोर॥

स्मरण नरियर मोडनेका

अमी सींचके नरियर कीन्हाँ। सो नरियर धर्मदासको दीन्हाँ॥
धर्मदास मृतु मण्डल आये। सकल सन्तमिलि मंगल गाये॥
नरियर मोरकेसत्यसुकृतकोशिरनाये। निकुतनामलेहंस बचाये॥
कहैं कबीर धर्मदास सों। नरियर मोरे वंश तुमार॥

स्मरण तिनका तोरनेका

यह विरवा चीन्हे जो कोय। जरा मरण रहित घर होय॥

कौन बिरवा जो बोलत है ताको चीन्हो। कबीरगोसांईकी आज्ञा सों। जिवसो यमसो तिनका टूट यमके मुखमें थूक ॥

स्मरण ज्योती शीतलकरनेका

साखी–आदि अन्त यक ज्योति है, अस्थिर थीर है नीर।
सात द्वीप नौ खण्डमें, एकहि सत्य कबीर ॥

स्मरणमिठाई मालूम करनेका

श्वेत मिठाई उत्तम पाना। लौंग लायची श्वेत प्रधाना ॥
केरा कदली और सुगन्धा। तबही हंसा होय अनन्दा ॥
यहिविधिकरोमिठाई। कहै कबीरधर्मदाससोतबहमकोभोगलगाई

स्मरण पानप्रसाद मालूमकरनेका

चौंका लेय मिठाई धरी नरियर धोती पान।
हंसा बैठे आसन पर पूर्वहि आज्ञामान ॥
पुरुष बैठे आसन हंसहि नाही मार।
कहै कबीर मिठाई मालुममानसरोवरपार ॥

स्मरण आरती सौंपनेका

जोई आरती वारे, सोई बुझावे आन।
जहां ज्योतिझिलमिल करै, सोई पहिचान ॥
अपनो तन मन खोजो, आप करो चितएक।
शीतल करो आरती, पुरुषनाम गहिटेक ॥
कहै कबीर यह सुमिरण, सन्तो करो विवेक।
अबकी बेरा चेतहु, तारों कुटुम समेत ॥

स्मरण आरती प्रकाश करनेका

सोहंग नामले आरती वारे आपतरे औरनको तारे ॥
सोहंग नामनिज सुमिरके, करो आरती प्रकाश ॥
कहै कबीर धर्मदाससों मिट गये यमके त्रास ॥

स्मरण परवाना लिखनेका

अमी अंककी लिखनी कीन्हा । सो लिखनी धर्मदासको दीन्हा ॥
उलटी लिखनी सींयेल द्वार । कटे कर्म भये जर छार ॥

खोजतखोजतखोजिया, यह सन्तनको काम ।
पुरुष देह धर देखिया, और एकोत्तर नाम ॥

स्मरण प्रवाना साजनेका

अहो साहेब कौन अङ्गप्रवान साजो । भाषो लेखा अंगमो ताको ॥
अहोधर्मदाससमध्यअङ्गश्वानासाजो । अंकचढाय नाम मुखभाषो॥
अजावन नाम पानके लीन्हा ।सुर्त सम्हार अङ्ग तुम चीन्हा ॥
कहैकबीरधर्मदाससोयहबीराअंकनामबिदेहचढावहूँहंसहोकेनिशंक

स्मरण पवाना साजनेका

अमी अंकका बीरा शब्द, सोहंगम डोर ।
कबीर हंस लोक लेराखो, यमसे बन्दी छोर ॥
सुर्त चढी आकाशको, उनमुनमहल बनाय ।
सोई हंस उजागर, जामो अमी समाय ॥

पुरुष मोहर अकह कबीर । कालमें सोहं धर्मदास कबीर ॥

स्मरण प्रवाना देनेका

श्वेत पान अम्मर है छाया । सोपान अमोदिक पुरुष पठाया ॥
भरमत पवन फिरे संसारा । पवन निर्मल होय असवारा ॥

अमी अंक पुरुष लिखि दीन्हा, कमल पंखुरी सार ।
कहैं कबीर कछु शंका नाहीं, रहो पुरुषके आधार ॥

स्मरण प्रवाना देनेका

अजर मूलसो बोरी उत्तारी सुर्त सोहंगम डोर ।
एही सुमिरणपायके, हंसा उतर लक्ष करोड ॥
एही स्मरण हाथले, काल रहो मुरझाय ।
कहैं कबीर धर्मदाससों, हंसलोक पहुँचाय ॥

स्मरण कण्ठी बाँधनेका

कण्ठी कण्ठ विराजे, सतगुरु तिलक कर दीन्ह।
जगसों तिनुका तोरिके, हंस आपन करि लीन्ह॥
माला कण्ठी नामकी, सतगुरु शब्द विचार।
बादविवाद जो बालक, सो करे, ताकेमुख परे छार॥
कहैं कबीर धर्मदाससों, बालक कबहुन न होय निनार।

स्मरण पांच नाम

आदि नाम अजरनाम अमीनाम। पताले सदा सिंधु नाम॥
अकाशे अदली निरनाम। एही नाम हंसको काम॥
खाले कूची खोली कपाट। पांजी चढे मूलके घाट॥
भर्म भूतको बांधो, गोला कहैं कबीर प्रवान॥
पांच नाले हंसा, सत्यलोक समान॥

स्मरण दक्षामंत्र

सत्यसुकृतकी रहनी रहे अजर अमर गहे सत्यनाम।
कहे कबीर मूलदशा, सत्य शब्द परवान॥

स्मरण तिनुका तोरनेका

दहिने छोडो धर्मका स्थाना। बायें चित्रगुप्तको जाना॥
सन्मुख नासिका देव पयाना। तब यम चले देखके पाना॥
टूटे घाट अठासी करोरी। हँसा चढे नामकी डोरी॥
सो जीवत हँसा भये, लिये प्रेमकी डोर।
सो जिव चले सत्यलोकको, यमसों तिनुका तोर॥
आसन वासन मन कल्पना औ सर्वा भूत।
एकोतरसे पुरुष के, यमसों तिनुका टूट॥
कहैं कबीर सद्गुरु मिले, मिथ्याके मुख चूक॥

तिनुका तोरनेका

मनपाप मनसा पाप महापाप पाप पुरविला पाप ।
नोग्रह ब्रह्मा जाई । हम सद्गुरुके शरण आई ।
आसन वासन मन कलपना, एतो सर्वाभूत ।
कहे कबीर सद्गुरु मिले, मिथ्याके मुख थूक ।

तिनुका तोरनेका

आसन वासन मन कलपना, देवो सर्वाभूत ।
यमसों तिनका टूट साहब शब्द प्रगटे भागेभूतयमदूत ।
ये जीव भये कबीर साहेबके यमसों तिनुका टूट ॥
कालके मुख थूक यमसों तिनुका टूट ॥
शब्दहि नेह लगावे कहैं कबीर धर्मदाससों कालदगामिटजाय ॥

तिनुका तोरनेका

आसन बासन मन कलपना, खेदो सर्वा भूत ।
कहे कबीर सतगुरु मिले, मिथ्याके मुख थूक ॥

जँजीरा तिनुका तोरनेका

भूतहि बांधों पिशाचहि बांधों बांधों धीमर धोखा ।
तीन निरंतर मन्तर बांधों मारों नाहर चोखा ॥
बोझा बांधों बोझइता बांधों पूजित बांधों पुजेरी बांधों।
मरहिया मनसा बांधों हाटक बांधों फाटक बांधों ।
औघट बांधों बाट बांधों नेहर बांधों सासुर बांधों ।
अरोसिन बांधों परोसिन बांधों बांधों डंकन डोरी ।
कहे कबीर भर्म सब बांधों निर्गुन तिनका तोरी ॥

स्मरण प्रवाना पावनेका

अजरकी लिखनी हीरा पाना । सत्य सुकृत लिखे परवाना ॥
देह पान लेवो कण्ठ लगाई । बालक देहू गर्भ में भाई ॥

भाषा भाषों अपबंल; परे अजर की छाय ।
मुक्तके अक्षर मुक्ता मन, होय चुरामनि नाय ॥

स्मरण प्रवाना पावनेका

अजर नाम अजर है प्राना । अजर नाम सत्यलोक पयाना ॥
अजर नाम गुरु दिया बताय । कर्म भर्म सर्व दिया बहाय ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास । अजर नामते लोक निवास ॥

स्मरण माथा पंजा देनेका

ठाढे दूत करत है गोला । धर्मदास मुख अजरे बोला ॥
धर्मदास मुख बोले बानी । दूत भूत गयेकुम्हिलानी ॥
अजर लोक अजर है नाम । अजर पुरुष अजर पुर्षको नाम ॥
येही नाम हृदयमें राखो । जादिनकाल दगापरे तादिनमुख भाषो ॥
उत्तर दिशा जगन्नाथके ठाईं ।
कहैं कबीर धर्मदास सों अजर बोल तुम जीवको सुनावो ॥

स्मरण दल प्रसाद लेनेका

अमृतदल अमरापुरी, तिरख नाम निज चीन्ह ।
अजर नाम कबीरका, अमृत दल करि दीन्ह ॥

इति सुमिरन चौकाको गुरुवाई विधि सम्पूर्ण

अथ लिख्यते चौका विस्तार विधि

स्मरण चँदोवाताननेका

सत्यसुकृतको समझके, कीजै मनको स्थीर ।
छत्र तनायो प्रेमसो, सद्‌गुरु कहैं कबीर ॥
पांच सुपारी पांच खूँटमें; स्वेत चँदेवा सोय ।
कहैं कबीर धर्मदास सो, आवागमन न होय ॥

स्मरण खडीसो चौका पोतनेका

स्वेत मृत्तिका निर्मल पानी । चौका पोते सुकृत ज्ञानी ॥

चौका पोतके चन्दन चढावा । सत्य सुकृत जिनलोक पठावा ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास । हंसा गये पुरुषके पास ॥

चन्दन चौका पोतनेका

सिन्धु नीर घट अमी मँगावा । सत्यसुकृतको शीश नवावा ॥
सोहं पवन लै कीन्ह पसारा । निकुत नाम लै हंस उबारा ॥
तन मन दैके चीन्ह शरीर । अंकनाम कहि दीन्ह कबीर ॥

स्मरण कनिक चौका पोतनेका

कनक छानके निर्मल कीन्हाँ । सहज नाम हृदे चित दीन्हां ॥
चौका पूरे युक्ति बनाई । सतगुरु दीन्हा भेद लखाई ॥
कहैं कबीर चौका है सारा । चौका बैठो सिरजन हारा ॥

स्मरण मानिक बनावनेका

अग्र आरती कर मन जाना । कीन पवनसो निकसे पाना ॥
शब्द अन्त है ताकर सार । सो जीवनका करै उबार ॥
उबारे हंस करै लोक निवास ।बाहर तत्त्व जानेअंशवंश हमार ॥
सत्यनाम मगन जेहि भीतर । कहैं कबीर हम प्रगट शरीर ॥

स्मरण थारमें परवाना धरनेका

थार परवाना कर सम तूला । आदि नाम भाषो मुख मूला ॥
मानिक सवार थारमें धरो । परवाना को सुमिरण करो ॥
कहैं कबीर सत्य है सार । अंश वंश हंस उतारे पार ॥

स्मरण मानिक धरनेका

स्थिरहि थारमें मानिक धरो । एकनाम सुस्थिर दृढ गहो ॥
कहैं कबीर गहो नाम अधार । निश्चल हंस साधि कडिहार ॥

स्मरण कपूर घृत परसेको

अग्र कपूर अग्र घृत धाइ । सो कदली है वाहा नेह ॥
शब्द कपूर तहां लै धरो । सतगुरु दयासों निर्भय रहो ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास । अग्र वासमें करी निवास ॥

स्मरण पान धोवनेका

सुख सागर है मूल स्थान । तहां ऊपजे श्वेते पान ॥
श्वेत पानकी अंमर छाया । अमी पुरुष संदेश पठाया ॥
कहैं कबीर सुनो संत सुजान । यहिविधि करो पान औ स्नान ॥

स्मरण पान चढावनेका

श्वेत पान लोकते आया । श्वेत पान पुरुष निर्मांया ॥
दिया वंश धर्मदास को । दीन्हों पान चलाय ॥
लेहु पान तुम शीश चढाय । श्वेत पान पावे निज मूल ॥
दृढमनचितकोराखोथीर । कहैकबीरधर्मदाससोंपहुँचेलोकअस्थूल ॥

स्मरण दल बाँटनेका

दल नाम दयाका मानाम करि पूर। नौग नाम वे पुरुष है।
बिन डोढीका फूल । सुतं लाय दल बाटहू जल दल धरहु सुधार ॥
कहैं कबीर धर्मपाससों भव तज लगे न वार ॥

स्मरण दल बनावनेका

यो दल सत्तर लोकसों जल आवा । सत्तर लोकसों अमृत लावा ॥
शब्दकी झारी अमृत भरी । तापेसा तोष रिचा धरी । तीन खरचा ॥
पहले तोराई । कइ कबीर यमदूत पराई ॥

नरियर जटा उतारनेका

प्रथम बीज धरतीको दीन्हा । लागे फल नरियर तहँ लीन्हा ॥
सो नरियर सन्त जन पाये । सत्य सुकुतको आनि चढाये ॥
तीन लोक है पिण्ड शरीर । भीतर बाहेर एकहि नीर ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास । यहि विधि नरियर भयो प्रकाश ॥

स्मरण नरियर स्नानका

सुख सागर है मूल अस्थान । तहाँ भये नरियरके स्नान ॥
श्वेत नरियर श्वेतहि छाया । अमी पुरुष सन्ध पठाया ॥

भरमित पवन फिरे संसारा । निर्मल पवन ताहि असवारा ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास । द्रुम नरियर स्नान प्रकाश ॥

स्मरण कलश धरनेका

दो पैसा औ एक सुपारी । अलश धरो उत्तम विस्तारी ॥
सवासेर लै तण्डुल धरौ । धर्मराय देख थरहरौ ॥
पांचो बाती देव लेसाई । तब गादी पर बैठो आई ॥
हृदय चरण वंशके धरो । सत्य कबीरकहिधोकपरिहरो ॥

कलश सही करनेका

पांचतत्त्व घट भीतरपांचहिनाम । तासों होय जीवको काम ॥
सो लेखा तियवार कहैं कबीर सुनो धर्मदास । धर्मरायसो हंस उबार । जोति अजरलोककी अम्रलोक देह पहुँचाय ॥ कहैं कबीर सुनो कडिहार । सारशब्द गहो टकसार ॥

स्मरण फूल चढावनेका

सुकृत वारिसों फूल मँगाये । सहजकी झारी आनि भराये ॥
सत्य पुरुषको आनि चढाये । धर्मदास उठ बिनती लाये ॥
हीरा मानिक लागे मोती । सत्य पुरुषकी निर्मल जोती ॥

स्मरण गादी बिछावनेका

चौका धरो मिठाई आनी । नरियर पान कपूर प्रवानी ॥
पुरुष बैठ सिंहासन आई । हंसहि नाहीं भार रहाई ॥
मान सरोवर कदली केरा । मेवा अष्ट लाय यह बेरा ॥
लौंगलाइची सत्यलोकके छोही । भौमे आनि मिठाई होई ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास । सिंहासन बैठे मम दास ॥

स्मरण फूल माला बाँधनेका

मन माली तन फूल मँगाये । अमी अंक लै शब्द सुनाये ॥
मनकरवारी तन कह पोष । काया कञ्चन भई निर्दोष ॥
कहैं कबीर निज सुमिरो मोही । मारों यमै उबारो तोही ॥

स्मरण आरती धरनेका

सत्य जीव आरती है नाम । सतगुरु शब्द सुनो परवान ॥
वोही नाममें बैठके लेहु धनीको पान । अंश वंश गुरु कीजिये ॥
देह धरो नहिं आन । धीर गुरुको चीन्हके रहो सत्य मनलाय ॥
देखो खसम कबीर को हंसलोकको जाय

स्मरण चौका हाथ देनेका

करधर चौका विनती कीन्हा । तुम्हरे कहे भार हम लीन्हा ॥
अहो साहेब मोहे नहिं भार । यह चौका विस्तार तुम्हार ॥
तुम जागो ओ शब्द तुम्हारा । समरथ मोहि उतारो पारा ॥
धर्मदास विनती करें, तुम हो सत्य कबीर ।
शिरके भार उतारहू, गहिके लावो तीर ॥

इति श्रीस्मरण गुरुवाई भेदादि चौकाविस्तार विधि सम्पूर्ण

अथ लिख्यते स्मरण अभेद

प्रथम समरथके मुखसो सहज अंश उतपन भये ताकोबीज । बुन्द दियो तामें सर्व रचना आई औ सात करी भई ॥

करीके नाम

प्रथम पोहप करी, दूसरे मूल करी, तीसरे अम्बुकरी, चौथे सुघर करी, पांचे सुखसागर करी, छटये पंकज करी, सातेमंजुलकरी । दूसरे समरथके नेत्र सो इच्छा सुतंउतपनभई ॥ ताकोजावनबुन्द दियो तासों पांच अंड भये ॥ तीसरे–समरथकेश्रवणसोमूलसुतं उतपन भई ताको अमी बुन्द दियो तासो पांच अंड पोषे तासो पांच ब्रह्म उतपन भये तिनको आज्ञा दिये एक एक ब्रह्म एक एक अण्डमों आये चौथे समरकी नासिकासे सोहंग सुतं उतपन भये तासो पांच अण्ड फूटे तासों आठ अण्डभये ॥

अंशनके नाम

प्रथम अचिंत्य, दूसरे जोहेंग, तीसरे अकह, चौथे सुकृत, पांचे हिरण्मय, छठे अक्षर, साते योगमाया, आठे निरंजन, अचिन्तको चिन्ता नही, तेज अण्डके मालक, प्रवान, पालंग १२ वंश ॥९॥ प्रथम माया, दूसरे कूर्म तिसरे अदल अष्ट, चौथे निरञ्जन, पांचे नभ, छठे समीर, साते तेज, आठे नीर, नवे पृथ्वी ॥ ९ ॥ दूसरे जो अङ्ग हंस, तिनको बैठक धीरज अण्ड दिये अण्डको प्रवान पालंग पचीस ॥ २५ ॥ और वंश सोरह ॥१६॥

वंशनके नाम

प्रथम अजरमुनि, दूसरे अगम मुनि, तीसरे हंसमुनि, चौथे चन्द्र मुनि, पांचे आपमुनि, छठये पुरुषमुनि, सातैं अलंजित मुनि आठे कलंक मुनि, नवें शीतलमुनि, दशयें श्रीं मुनि; ग्यारहे कण्ठमुनि बारहें कनक मुनि, तेरहे बेहंग मुनि, चौदहे गंगमुनि, पन्द्रहे सोम मुनि, सोरहे जलरंग ॥ १६ ॥

तीसरे अकहअंश

तिनको बैठक छिमा अण्डभो दिया, अण्डको प्रवान ग्यालिस ॥ ४२ ॥ वंश सत्ताईस ॥ २७ ॥

वंशकि नाम

प्रथम प्रेम, दूजे हुलास, तिसरे आनन्द चौथे विशाष, पांच हेत छठे प्रीति, साते निरख, आठे विवेक, नवें सुमत, दशें क्षमा, ग्यारहें धीरज, बारहें आलहाद, तेरहें शील, चौदहें संतोष, पन्द्रहें सुमन, सोरहें बुद्धि सत्रहें भाव, अठारहें भक्ती, उन्नीसवें दया, बीसे ज्ञान, एकइसे क्रिया, बाईसे विचार, तेइसे कृपानि, चौबिसे संतोष पचीसे भेद, छबीसे इच्छा, सताइसे भय, तिनको राज्य क्षमा अण्ड पुरुषके हजूरी ॥

चौथे सुकृत अंश

तिनके बैठक सत अण्डमोदिये, अण्डको प्रमान पालंग बहत्तर ॥ ७२ ॥ तिनके वंश बयालिस ॥ ४२ ॥

वंशनके नाम

प्रथम काय सर्वांग रहाई, सर्वांग कायाते बीज बुन्द निरमाई बीजबुन्दते अविगति काया। अविगत कायाकेदशोंभेदले।कायाके रूपसुर्त निर्मांया। रूप सुर्तके सतगुरु सोहंके गुंग पुरुष कहाये गुंग पुरुषके अचित पुरुष कहाये। अचित पुरुषके ज्ञानी अंश ज्ञानी अंशके सुजनजन अंश। सुजन जन अंशके चूरा मणी नाम। चूरामणी नामके सुदर्शन नाम। दूसरे कुलपति नाम। तीसरे प्रमोद नाम। चौथे कवल नाम। पांचे अमोल नाम। छठे सुर्त सनेही नाम। साते हक्कनाम। आठे याक नाम। नवें प्रकट नाम। दशों धीरज नाम। ग्यारहें उग्र नाम। बारहें दया नाम। तेरहे गग्र नाम। चौदहें प्रकाश नाम। पंद्रहें अदित नाम। सोरहें मुकुन्द मुनि। सत्रहें अधरनाम। अठारहें उर्द्धनाम। उनीसें ज्ञानी नाम।... बाइसें अजरनाम। तेइसे रस नाम। चौविसे गंग मुनि। पचीसे पारस नाम छबीस जागृत नाम। सताइसे भृंगमुनि। अठाइसे अखै नाम। उनतीसे कंठ मुनि। तीसै संतोषदास। एकतीसे चात्रकमुनि। बत्तीसे अजरनाम तेतीसवें दुर्गमुनि। चौतीसवें आदि नाम पैंतीसवें महा मुनि। छतीसवें निज नाम। सैंतीसवें साहब दास। अडतीसवें उर्द्धदास उनतालीसवें करु। चालीसवें दीर्घमुनि। एकतालीशवें महामुनि।

साखी—वंश ब्यालीसके आगम, चूरामणि सँतायन।
वचन हमारा प्रकटे, निःअक्षर निज नाम ॥
तिनको राज सत अण्डमें, चौकी लोक पांजी ॥

पांचे हिरण्मय अंश

तिनको बैठक सुमत अण्डमों दिया अंडको प्रवान पालंग ॥६४॥ वंश सात ॥ ७ ॥

वंशनके नाम

प्रथम वंशपारन, दूसरे स्वांतसनेही, तीसरे भृंगसनेही, चौथे ॥ लरसिंध, पांचेदीपकजोत, छटें जलभाव, सातें मलयागिरि॥ ७॥ तिनको राजसुमत अंडमें पुरुषके हजूरी ॥

चार गुरुके नाम-लोकके और भवसागरके

प्रथमनाम लोकमें जो हंस कहिये औरभवसागरमेंगुरु चतुर्भुज गोसाई तिनके वंश सोरह ॥ १६ ॥ दक्षिण दिशा सामवेद प्लक्षद्वीप दरभंगा शहर तथा प्रकट भये ॥ तिनकोमूलज्ञानबानी ता बानीले पंथ चलायो, ब्राह्मणकुलप्रकट भये ॥१॥ दूसरे नाम लोकमें अकह अंश कहिये ॥ २७ ॥ पूर्वदिशा यजुर्वेदकुशद्वीप करनाटक शहर तहाँ प्रकट भये । तिनको टकसारज्ञानतावाणीले पंथ चलायो ॥ २ ॥ कायस्थकुल शूद्र, तीसरेनामलोकमें सुकृत अंश कहिये और भवसागरमें गुरुधर्मदास गोसांईकहिये तिनके वंश ब्यालिस ॥ २४ ॥ उत्तरदिशा ऋग्वेद जम्बूद्वीपभरतखण्ड बांधो शहर तथा प्रकट भये, तिनके कोट ज्ञान बानी ताबानी ले पंथ चलाये ॥ ३ ॥ चौथे नाम लोकमेंहिरण्मयअंशकहिये। और भवसागरमें गुरुसहतेजी गोसांई कहिये तिनके वंश सात ॥ ७ ॥ पश्चिम दिशा अथर्वण वेद सिलमिल द्वीप मानिकपुर शहर तहां प्रकट भये । तिनको बीजक ज्ञान बानी ता बानीले पंथ चलाये क्षत्रियकुल ॥ ४ ॥

दश सोहंगकेनाम

प्रथम पुरुष सोहं दूसरे सहज सोहंग तीसरे इच्छा सोहंग ॥

चौथे मूल सोहंग पाचे वोहं सोहंग छटे अचिंतसोहंगसाते अक्षर सोहंग, आठे निरंजन माया सोहंग, नवें ब्रह्मा विष्णु महादेव सोहंग ॥ १० ॥

नौ सुर्तके नाम

प्रथम सहज सुर्त, दूसरे इच्छा सुर्त, तीसरे मूल सुर्त, चौथे सोहं सुर्त, पांचवें अचिंत सुर्त, छठें अक्षरसुर्त साते निरंजन सुर्त, आठें सुकृत सुर्त, नवें नौतम सुर्त ॥ ९ ॥

दश प्राणके नाम

प्रथम अपान, दूसरे समान, तीसरे प्राण, चौथे उदान, पांचे व्यान, छठें नाग, सातें कूर्म, आठें किलकिला, नवें देवदत्त, दशमें धनञ्जय ॥ १० ॥

आठ कर्मके नाम

प्रथम ज्ञानवंनी, दूसरे रसनावंनी, तीसरे वेदवनीं, चौथे ध्यानवनी पांचे अंतराय, छटें गोत, सातें प्रमान, आठें आव ॥ ८ ॥

तीन कर्मके नाम

प्रथम संचित, दूसरे क्रियमाण, तीसरे प्रारब्ध ॥ ३ ॥

दो कर्मके नाम

प्रथम विधि, दूसरे निषेध ॥ २ ॥

चार ज्ञानके नाम

ब्रह्मज्ञान अंचितको, अनुभवज्ञान अक्षरको त्वचाज्ञाननिरञ्जनको, छुद्रज्ञान माया त्रिदेवाको ॥ ४ ॥

चार ज्ञानीके नाम

प्रथम पिशाच ज्ञानी, दूसरे पंडित ज्ञानी, तीसरे उन्मतज्ञानी, चौथे जडज्ञानी ॥ ४ ॥

चार ध्यानके नाम

प्रथम पंडीसीतध्यान, दूसरे रूप सत्य ध्यान, तीसरे पद सत ध्यान, चौथे रूपातीत ध्यान ॥ ४ ॥

चार पदार्थके नाम

प्रथम अर्थ, दूसरे धर्म तीसरे काम, चौथे मोक्ष ॥ ४ ॥

तीन पदके नाम

प्रथम तत्त्वपद, दूसरे तत्पद, तीसरे असिपद ब्रह्म ॥ ३ ॥

तीन तापके नाम

प्रथम अध्यात्म, दूसरे अधिदेव, तीसरे अधिभूत ॥ ३ ॥

तीन जीवके नाम

प्रथम मोक्षी। दूसरे विषय, तीसरे पामर ॥

पांच खानके नाम

प्रथम मनुष्य खान। दूसरे पिण्डज खान। तीसरे अण्ड खान। चौथे उषमज खान। पांचे अस्थावर खान ॥

पांच वाणीके नाम

प्रथम सिंगिनी वाणी। दूसरे बिंगिनि वाणी। तीसरे किंगिनि वाणी। चौथे इंगिनि वाणी। पांचे रिंगिनि वाणी ॥

पांच तत्त्वके नाम

प्रथम आकाश। दूसरे वायु। तीसरे तेज। चौथे जल। पांचे पृथ्वी ॥

तिनको विभाग

मानुष खानमें सिंगिनि वाणी आकाश, वायु, तेज, नीर। पृथ्वी ये चार तत्त्व पिंडज खानमें वर्तते हैं। तीसरे अण्डज खानमें किंगिनि वाणी, वायु, तेज, जल ये तीन तत्त्व अंडज खानमें

वर्तते हैं। चौथे उषमज खानमें इंगिनि वाणी, वायु, तेज, येदो तत्त्व उषमज खानमें वर्तते हैं। पांचे अस्थावर खानमें किंगिणि वाणी जल एक तत्त्व वर्त्तते हैं ॥

जो इनको प्रवानजात

प्रथम चार लाख खान मानुषको। दूसरे पिंडज नौलाख जात। तीसरे अण्डज चौदह लाख जात। चौथे श्वेदज उषमज सताइस लाख जात पांचे अस्थावर तीस लाख जात ॥

अथ पुरुषसम्प्रथसो अंश भये तिनको नाम

प्रथम पुरुषके त्रिकुटी सो अंकुर। पुरुष नेत्र सो इच्छा। पुरुषको नासिका सोहं पुरुषके मुखसो। अचिंत तेज अंड पालंग बारह अचिन्त अंश प्रेम सुर्त। धीरज अण्डज पालंग पचीस जोहंग अंश सोहं सुर्त। छिमा अण्ड पालंग ब्यालीस अकह अंश मूल सुर्त। सत्त अंशुपालंग बहत्तर सुकृत अंश इच्छा सुर्त। सुमत अण्ड पालंग चौसठ, हिरण्मय अन्त अंकुर सुर्त ॥

इति श्री सुमिरपांजी आदि षट्कर्म विधि, चौकाविधि गुरुवाई भेदादि विस्तार विधि सम्पूर्ण

सत्यसुकृत, आदिअदली, अजर, अचिन्त, पुरुष, मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग, संतायन, धनी धर्मदास, चूरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रबोध गुरुबालापीर, केवल नाम, अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रकट नाम, धीरज नाम, उग्रनाम, दयानामकी दया, वंश ब्यालीसकी दया

★

अथ श्रीबोधसागरे

सुमिरनबोध प्रारंभः

★

षट्त्रिंशस्तरङ्गः

तृतीय बोध

अथ गुरुमहिमा शतक प्रारंभ :

गुरु संतन की आज्ञा पाई । गुरु महिमा अमृतरस गाई ॥
गुरू मिलै तो अगम बतावे । यमकी आँच ताहि नहिं आवे ॥
जेता नाम रूप जग माहीं । सबहींमें सत गुरुकी छाहीं ॥
सतगुरु सकल कलमके साखी । सकल भुवन गुरुतन्मय राखी॥

सतगुरु अजर अमर अविनाशी। सतगुरु परमज्योतिपरकाशी ॥
गुरु गोविन्द दोउएकस्वरूपा । नाम रूप गुण भेद अनूपा ॥
गुरु अविचल पद पूरणधामा । गुरु स्वामीगुरु जग विश्रामा ॥
सतगुरु जनम मरनते न्यारा । सतगुरु सबका सिर्जन हारा ॥
नर्गुण गुरू रूपसे न्यारा । छाइ रह्यो सबही संसारा ॥
है सतगुरु सत पुरषै आपे । जासो प्रकट ब्रह्म भयो जापे ॥

साखी-गुरु ईश्वर गुरु परब्रह्म, सतगुरु सबका देव ।
गुरु बिन पार न आवई, ताते शरणो लेव ॥

गुरुकी शरणा लीजै भाई । जात जीव नरक नहिं जाई ॥
गुरुकी शरण साधू जानै । गुरुकी शरण मूढ पहिचानै ॥
गुरु सरणा सबहिनसे भारी । समुझि गयो सोई नर नारी ॥
गुरु शरणा सो विघ्न विनाशे । दुरमति भाजे पातक नाशे ॥
गुरु शरणा चौरासी छूटे । आवगमनकी डोरी टूटे ॥
गुरु शरणा यमदण्ड न लागे । ममता मरै भक्तिमें पागे ॥
गुरु शरणासे प्रेम प्रकाशै । पारख पाद मिटै यम आसै ॥
गुरु शरणा परमातम दरशै । त्रय गुण छोडि सतपद परशै ॥
गुरु मुख होय परम पद पावै । चौरासीमें बहुरि न आवै ॥
सत्य कबीर बतायो भेवा । धर्मदास करु गुरुकी सेवा ॥

साखी-गुरुकी सेवा जो करै, हृदया ध्यान लगाय ।
काल जाल सो छूटिके, सत्य धामको जाय ॥

गुरुपद सेवे विरला कोई । जापर कृपा साहबकी होई ॥
गुरु सेवा जो करै सुभागा । माया मोह सकलभ्रम भागा ॥
नौ नाथ चौरासी सिद्धा । गुरु चरणों सेवे बहु विद्धा ॥
गुरुके सेवे कटे दुख पापा । जनम जनमको मिटे सन्तापा ॥
गुरुकी सेवा सदा चित दीजै । जीवन जन्म सुफलकरलीजै ॥

चौविस रूप हरि आपुहि धरिया । गुरु सेवाकरि सबही बिरिया ॥
शिव विरंचि गुरु सेवा कीन्हा । नारद दीक्षा ध्रुवको दीन्हा ॥
सकल मुनि गुरु सेवा चाही । गुरु सेवा करि पँथ अवगाही ॥
गुरुसेवे सो चतुर सयाना । गुरुपट तर कोइ और न आना ॥
गुरुकी सेवा मुक्ति निज पावे । बहुरि न हंसा भवजल आवे ॥

साखी–गुरुकी सेवा कीजिये, तजि मनका अभिमान ।
गुरु बिनु दोसर को नहीं, धर्मनि सतगुरु जान ॥

योग दान जप तीर्थ नहाना । गुरु सेवा बिनु निष्फलजाना ॥
गुरु सेवा विनु बहु पछतावे । फिरि फिरि यमके द्वारे जावे ॥
गुरुसेवा विनु कौन जो तारे । भव सागरसे बाहर डारे ॥
गुरुसेवा विनु जड का करि है । काकी नाव बैठिकर तरि है ॥
गुरुसेवा विनु कछू न सरि है । महाअन्ध कूपै महँ परि है ॥
गुरुसेवा विनु घट अँधियारा । कैसे प्रकटे ज्ञान उजियारा ॥
गुरुसेवा विनु सदा जो धावे । गुरु विनु सांच राह नहिं पावे ॥
गुरु सेवा विनु कान फुंकावे । भवँरि भवँरि भवजलमें आवे ॥
गुरुसेवा विनु द्वन्द अँधेरा । गुरु सेवा विनु कालको चेरा ॥
गुरुसेवा विनु प्रेम विहूना । दिन दिन मोह होयभ्रम दूना ॥

साखी–गुरुसेवा विनु ना छुटे, भवजलको सन्ताप ।
गुरुसेवा करि गुरु मुख, काटे सबही पाप ॥

गुरुमुख होई परम पद पावे । चौरासीमें बहुरि न आवे ॥
गुरुकी नाव चढे जो प्रानी । खेद उतारे सतगुरु ज्ञानी ॥
गुरुके चरण सदा चितलाना । क्यों भूले तू चतुर सुजाना ॥
गुरु भगता गुरु आतम सोई । वाहीके मन रहो समोई ॥
गुरुमुख ज्ञान ले चेते सोई । भवमें जनम बहुरि न होई ॥
गुरुमुख प्राणी सदाई जीवे । अमर होई ज्ञान रस पीवे ॥

गुरुसीढी चढि ऊपर जाई । सुख सागरमें रहे समाई ॥
गौरी शंकर और गणेशा । उनहू लीना गुरु उपदेशा ॥
गुरुमुख सदाअटल अविनाशी । सुर नर मुनिसबध्यानधरासी ॥
गुरुमुख सब भक्त औ दासा । गुरुमहिमा उनहीसे प्रकाशा ॥

साखी-गुरुमुख को सबही मिलै, चार पदारथ सार ।
निगुरा को तो कुछ नहीं, वहे सो नरकहि धार ॥

गुरु विनु मुक्ति ना पावै भाई । नर्क ऊर्द्ध मुख वासा पाई ॥
गुरु विनु काहु न पाया ज्ञाना । गुरु बिनुरहीयमलोकसिधाना ॥
गुरु विनु पढे जो बेद पुराना । ताको नाहिं मिलै सतज्ञाना ॥
गुरु विनु जो सो पशू कहावै । मानुष बुधि दुर्लभ होय जावै ॥
गुरु विनु दान पुण्य जो करई । होय निष्फल सब मतसो कहई ॥
गुरु विनु भ्रम ना छूटे भाई । कोटि उपाय करे चतुराई ॥
गुरु बिनु होम यज्ञ जो करई । जाय पुण्य पाप सो भरई ॥
भवसागर है अगम आगहा । गुरु बिनु कैसे पावै थाहा ॥
गुरु बिनु बूझे सकल अचारी । तैतीस कोटि देव सब धारी ॥
गुरु बिनु भरमें लख चौरासी । जनम अनेक नरकके बासी ॥

साखी-गुरु आज्ञा ग्रहणकरि, छोडे मनमुखताकाल ।
गुरु कृपा तब पावई, क्षणमें होय निहाल ॥

गुरुकी कृपा कटै यम फांसी । विलम्ब न होय मिलैअविनाशी ॥
गुरू कृपा शुकदेवहि पइया । चढि विमान वैकुण्ठहि गइया ॥
गुरुकी कृपा जब नारद पयऊ । मेटि चौरासीसुखी सो भयऊ ॥
गुरुकी कृपा रामपर सोहै । जीवन मुक्ति पाइ जग मोहै ॥
गुरु कृपा बामदेवहि दइया । गर्भ माहिं गुरुज्ञानहि पइया ॥
गुरु कृपा ध्रुव जो दरसा । अटल अमान परमपदपरसा ॥
गुरु कृपा ते भये उजासी । सनक सनन्दन नारद व्यासी ॥

गुरू कृपा ते जनक विदेही। सो गृह माहिं परमपद लेही ॥
गुरू कृपा ते जन प्रहलादा। दैत्य होइ भक्ति तिन साधा ॥
गुरू कृपा जो कोई पावै। सकलो दुरमति दूर बहावै ॥

साखी-गुरू कृपा ऐसी अहै, सुनो साधु चित देइ।
तातै गुरु सुमिरण करू, रहे कालको लेइ ॥

गुरु गुरु जाप करो मन मेरा। काल दूत नहिं आवै नेरा ॥
गुरुको ध्यान धरों नर नारी। सहजे सहज तरो संसारी ॥
गुरु गुरु सुमिरो मनसे प्यारो। गुरु गुरु कहो कोटि अवतारो ॥
गुरु गुरु जाप काज सबसारे। दुर्मति कपट दूर करि तारे ॥
गुरु गुरु जाप करो मन धीरा। गुरुके नाम मिटै सब पीरा ॥
गुरु गुरु मंत्र हृदय धरीजै। तन मन धन सब अर्पण कीजै ॥
गुरुको सुमिरन निशदिन कीजै। जीवन जन्म सफल करि लीजै ॥
एक नाम गुरु देत दिखाई। सो निजनाम कलपि नहिं जाई ॥
गुरु सुमिरण निज नाम विचारे। आप तरे औरनको तारे ॥
सतगुरु शब्द नाम निरधारा। भव सागरसे उतरे पारा ॥

साखी-गुरुको सुमिरण कीजिये, निशदिन ध्यान लगाय।
गुरु लक्षण अब कहत हो, सुनहु धीर चित लाय ॥

राग द्वेष दोनों से न्यारे। ऐसा गुरु शिष्यको तारे ॥
आशा तृष्णा कुबुद्धि जलाई। तन मन वचन सबन सुखदाई ॥
निरालम्ब भ्रम रहित उदासी। निर्विकार जानो निर्वासी ॥
निरमोही निरबंध निशंका। सावधान निरवान निबंका ॥
सार ग्राही और सरवज्ञी। संतोषी ज्ञानी सतसंगी ॥
अयाचक जन निर अभिमानी। पक्षरहित अस्थिर शुद्धवानी ॥
निस्तरंग बाही परपंचा। निष्करम निरलिप्त अबंचा ॥
बोल अडोल भाखे सो सांची। कोई बात कहै नहिं कांची ॥

जेहि विधि कारज जिवका होई । निर्णय वाक्य उचारे सोई ॥
झांई सन्धि कालका फेरा । पारख लाई करे निबेरा ॥

साखी-जाति बड़ाई आश्रमहि, मानबड़ाई खोय ।
जो सतगुरु के पल लगे, सांच शिष्य है सोय ॥

गुरु आगे राखे माथ । करै बिनय दुख मेटो नाथ ॥
अहौं अधीन तुम्हारे दासा । देहू अपने चरनन बासा ॥
यह तन मैं तोहि भेट चढायो । अपनी इच्छा कुछ न रखायो ॥
जो चाहो सो तुम अब करो । या भांडको जेहि विधि भरो ॥
भावै धूप छांइमें डारो । भावै बोरो भावै तारो ॥
गुण पौरुष कछु ओ नहिं मेरो । सब विधि शरण गही गुरु तेरो ॥
मैं अब बैठा नाव तुम्हारी । आशा नदी सो करिये पारी ॥
अपना कीजै गहिये बाहीं । धरिये शिरपर हाथ गोसाईं ॥
बहु विधि बिनती गुरुसे करई । मान मोह हृदय नहिं धरई ॥
देखि विनयगुरु होहिं अनन्दा । तब पावै सिख परमानन्दा ॥

साखी-गुरुके आगे जायके, ऐसी बोले बोल ।
कूर कपट राखे नहीं, अरज करे मन खोल ॥

देखि प्रसन्नता गुरुकी भाई । गुरुते कहिये शीश नवाई ॥
ऋद्धि सिद्धि फलमैंकछुनहिंचाहूँ । जगत कामनाको नहिं लाहूँ ॥
चौरासी मैं बहु दुख पायो । ताते शरण तुम्हरी आयो ॥
मुक्त होनेको मनमें आवे । अवागमन सो जीव डरावे ॥
सत्य भक्तिकी चाह हमारे । ताते पकऱ्यो चरण तिहारे ॥
सत्य ज्ञानते हृदया भीजै । यही दान दाता मोहि दीजै ॥
मैंहूँ दास सो लेहु उबारी । हौं मच्छी तुम मिष्ट सुपारी ॥
हौं पतंग मैं तुम हौ डोरा । मैं तो फिरूँ तुम्हारे जोरा ॥
होहु दयाल दया अब कीजे । बूडत भव में बाहँ गहीजे ॥

काल संधि झांईके जाला । पडिकेदुःखित भयो विहाला ॥

साखी–दया होय गुरु देवकी, छुटे अविद्याभान ।
मिथ्या माया सब मिटे, पावे अविचल ज्ञान॥

सारशब्द गुरूते पावे । जाते जीव काज बनि आवे ॥
पूछ गुरुसे सब अरथाई । सारशब्दको निर्णय भाई ॥
जाते होय जीवको काजा । पाछे सोई होय निर्व्याजा ॥
त्रिविधि शब्दको पारख बूझे । सत्य पदारथ तबहीं सूझे ॥
सार शब्दको अङ्ग विचारे । मानुष लक्ष भले निरुआरे ॥
पशुवत धर्मको रूप लखावे । करि निरुआर सब गुरू बतावे॥
हंस स्वरूपहु लीजे जानी । सबहि बतावे सतगुरु ज्ञानी ॥
सांच झूठका निर्णय करे । सत्य होय सो हिरदै धरे ॥
पक्का सौदा गुरुसे लेवे । देखि अधीन गुरू सब देवे ॥
गुरु सो देव सब कछु भाई । क्षणमें भेटे काल कलाई ॥

साखी–काल जालसे छूटिके, मोक्ष मिलनकी चाह ।
सत्य मिलनकी युक्ति सब, गुरू बतावे राह ॥

गुरुसे पूछे ब्रह्मस्वरूपा । गुरुसे पूछे प्रकृति अनूपा ॥
गुरुसे पूछे सूक्षम तत्ता । गुरुसे पूछे त्रिगुण सत्ता ॥
गुरुसे पूछे महाकारण देही । गुरुसे पूछे तुरिया लेही ॥
गुरुसे पूछे पाच तनमात्रा । गुरुसे पूछे पंचकी यात्रा ॥
गुरुसे पूछे सूक्षम कारण । गुरुसे पूछे स्थूल सवारन ॥
गुरुसे पूछे ज्ञान अरु कर्मा । दशों इन्द्री सहित स्वधर्मा ॥
गुरुसे पूछे त्रिकुटी भाई । चौदह यम सब देइ बनाई ॥
गुरुसे पूछे चतुर्दश स्थाना । चौदह देव तबे मनमाना ॥
चौदह पूछि करे प्रवेशा । तबही पावे ब्यालिस वेशा ॥
पंचकोश सो गुरु से जाने । आतम ज्ञान तबही मनमाने॥

साखी-पंचकोशमत प्रकट जग, वेद कहे सत सोइ ।
परख बुद्धि निज दृष्टि बल, गुरू कृपा करे जब होइ॥
द्वैताद्वैत का करे विचारा । शुद्धाद्वैतका करे उपचारा ॥
विशिष्टाद्वैत भली बिधि जानै । पूछत पूछत सबै मन मानै ॥
कर्मोपासना करै विचारा । ज्ञान विज्ञानका पावे सारा ॥
अर्थ धर्म मोक्ष रु कामा । सबका पूछे असली धामा ॥
नवधा भक्तिको रूप पिछाने । योगक्रियाको भली बिधि जाने॥
राजयोग हठयोग स्वरूपा । सबही आसन सिद्धि अनूपा ॥
ब्रह्म जीव अरु प्रकृतिका भेदा । द्वैतज्ञानका करे अछेदा ॥
नाना मत जग आहि जो भाई । सबका भेद जो गुरुसे पाई ॥
आस्तिक नास्तिक मन अनुहारा। सबही फंदा करे विचारा ॥
पूछि गुरूसे सबही सुधारे । गुरुके पारख काल फन्द टारे॥
साखी-संसाररी पारख बिना, कैसे पावे ठौर ।
विध युक्ति अनमिल सबे, भोग वहीं औरके और॥
कालजालकी विकट है चाला ।जीव विकल तेहिमध्य विहाला॥
पारख यथारथ प्रभु प्रकाशू । कठिन महातम काल विनाशू॥
काल चक्र चक्की कठिनाई । पारख पाये जात बिलाई ॥
पारख बल बहियां भौजेही ।सबहीविधि चीन्ह पडाखलतेही॥
गुरु प्रसाद पारख दृढ पाये ।विकट कला यम जालछुडाये॥
एक एक पारखे जेहि फांसा । सो संक्षेप करे प्रकाशा ॥
जाते जीव बचे यमफांसा । शरणागत दृढ परख विलासा॥
भक्तिभाव प्रेमहि अधिकाई । परख लहत बल काल नशाई॥
कालकला नहिं पावे ताको । भक्ति भाव गुरु पारख जाको॥
परम पारखी जीवन मुकता । नहिं पावे तेही कालक उकता॥
साखी-बिनु शरणागति परख गुरु, नहिं जीवन निस्तार ।
सरवोपरि गुरु परख हैं, लहै तो होय उबार ॥

गुरु से दीक्षा लीजे भाई। सदा गुरुकी कीजे सेवकाई ॥
दीक्षा लेई जले जो आडा। सात जनम सो सिरजे पाडा ॥
सतगुरुकी जो आज्ञा लोपे। ता ऊपर यम राजा कोपे ॥
सतगुरु की जो अदब न राखे। ताको दोजख शास्तर भाखे ॥
सतगुरु की न लाये बिश्वासा। ताको काल करत है ग्रासा ॥
गुरुसेती गूमान जनावै। जनम जनम सो यमपुरजावै ॥
गुरुसङ्ग आडी टेढी बोलै। श्वान होइ सो घरघर डोलै ॥
गुरुसङ्ग ज्ञान गर्व दिखावे। कोटि जनम कूकर को पावै ॥
गुरुसे बाद करे नरनारी। कोटि जनम सो नरक मँझारी॥
गुरुको शब्द मेटि पग धरई। यम किंकर के फन्दे परई ॥

साखी- गुरुसीढीते ऊतरे, शब्द विहूना होय।
ताको काल घसीटि है, राखी सकै नहिं कोय ॥

सतगुरु की मरयाद न धरई। लख चौरासी कुण्डमें परई ॥
गुरुको शब्द न सुने अज्ञानी। भवसागर डूबे अभिमानी ॥
गुरुको देखि धरत अभिमाना। व्यास बचन पड नरकनिधाना॥
गुरुको ज्ञान मेटि मत थापी। तीन लोकमें बडो ते पापी ॥
गुरुको मेटि बखानत आपा। धरती भार मरत तेहि पापा ॥
गुरुसे सो ऊंचा चढि बैठे। सात कुण्ड नरकमें पैठे ॥
गुरुसे उलटा बचन सुनावे। सात जनम कोढी को पावै ॥
गुरुको उलट सुनावे बैना। सात जनम अन्धा होय सो नैना ॥
गुरुको छोड देव जो पूजे। बादुर होय दिवस नहिं सूझे ॥
गुरु को छोड अनत जो जावे। उलूक होय सो जन्म गँवावे ॥

साखी-शिवपूजामें बैठिके, गुरुसे करि अभिमान।
काकभुशुण्ड शिवशापते, पड्यो चौरासीखान ॥

गुरुनिन्दा जाके मुख उपजे। कोटि जनम गदहा हो निपजे ॥

गुरु निन्दा जाके मुख होई । ताको मुख ना देखो कोई ॥
अपने मुख गुरु निन्दा करई । शूकर श्वान जनम सो धरई ॥
गुरु की निन्दा सुने जो काना । सो तो पावे नरक निधाना ॥
गुरु निन्दासुनेजो श्रवणसुनयी । अपने हाथ प्राख निज हनयी ॥
गुरु निन्दक नारायण होई । वाको मुख ना देखौ कोई ॥
गुरु निन्दक धरती पग चम्पे । ताके भार धरनि अति कम्पे ॥
गुरु निंदक अवनी पर सोवे । धरती धरत शेष अति रोवे ॥
गुरु निंदक जब ही मुख बोलै । धरती गगन मेरु ग्रह डोलै ॥
गुरु निन्दक जो बचन सुनावे । ज्ञानी कान मूँदिके जावे ॥

साखी-गुरु निन्दा छाडो सुजन, गुरु स्तुति मन धारि ।
गुरुको राखो शीश पर, सब विधि करे गुहारि ॥

सतगुरु मिले परम सुखदाई । जनम जनम का दुःख नशाई ॥
सतगुरु मिले तो अगम बतावे । यमकी आंच ताहिनहिं आवे॥
सुख सम्पति अपनो नहिं प्राणी । समझि देखु तुमनिश्चय जानी॥
तीरथ वरत और सब पूजा । गुरु बिनु होवे सबही लूँजा ॥
धारा दोई भल जग माहीं । गृह वैराग बिन औरन आहीं॥
दोऊ गुरुकी कृपासे पावे । गुरु बिनु भेदसोकौन बतावे ॥
करि त्याग सब गुरुको दीजे । पारख पाइ सदा सुख लीजे ॥
गिरही रही भगति अनुसारे । तन मन धनअर्पणकरि डारे ॥
दशवां अंश गुरू को दीजे । जीवन जन्म सुफल करलीजे ॥
सतगुरुके सब आगे धरिये । शीश नाइ गुरुदंडवत करिये ॥

साखी-गुरु सो भेद जो लीजिये, शीश दीजिये दान ।
बहुतक भोंदू पचिमुये, राखि जीव अभिमान ॥

गुरुसे रहे सदा मन जोरी । जैसे नटुवा चढत है डोरी ॥
पारख तार चढी भयनहिं पावे । छेडे पारख चूर होइ जावे ॥

लोपे नहीं सतगुरुका बाचा । सो सतगुरुका सेवक सांचा ॥
सोइ शिष पावै पारख घाटा । सोइ पावे सत्य सो बाटा ॥
निर्मोही सतगुरु की रीती । सांचा सेवक लावै प्रीती ॥
मिलि पारखसबभयमिटिजावै । गुरुमुख शब्द सदालौ लावै ॥
देखि दुसह दुख जीवन केरी । दया करी पारख प्रभु प्रेरी ॥
निज पद जानि दया सोकरई । बन्धन जीव छुटावन लहई ॥
केतिक पारख प्रभुके पाये । जरा मरण यम जाल मिटाये॥
जिन्ह जिवलहे पारखप्रभु केरा । महाराज यम जीव निवेरा ॥

साखी–गुरु महिमा पूरण भई, सतगुरु किरपा कीन ।
संतनकी वाणी बहुत, यामें संग्रह लीन ॥

पाठफल वर्णन

गुरुमहिमा सबते अधिकाई । शिव शिवाप्रति यही दृढाई ॥
ब्यास वचन औ वेदे गाया । गुरुसे अधिक नहीं रघुराया ॥
सत्यगुरु कबीरहु परखाये । धर्मदास गुरु महिमा गाये ॥
रामहरस जू पूरण दासा । सबही गुरु महिमा परकाशा ॥
जेते भये जग बुद्धिमति धारी । सब गुरुमहिमा कीन उचारी॥
सबका सार यामधि पइये । अब याकी महिमा सुन लइये॥
तीनों संध्या जो यहि पढयी । छोडि कुमारग सतपथ लहयी॥
सांची श्रद्धा मनमें लाई । बूझि बूझिके पाठ कराई ॥
बिन बूझे सो धुन्ध अँधेरा । परि अभिमानखायजग फेरा॥
गुरुके लक्षण भलिविधि यांचे । यम फन्दाते तबही बांचे ॥

साखी–बूझ विवेक सह जो पढे, गुरुमहिमा यक बार ।
कबीर दीनदयाल तेही, तुरत उतारे पार ॥

योग यज्ञ अरु जप तप अहई । पढि गुरुमहिमा सब फल लहई॥
विष्णु सहस्र अरु भगवद्गीता । भागवत आदिक आठपुनीता॥

एकबार गुरु महिमा पढयी । सोफल सबही क्षणमें लहयी ॥
काशी क्षेत्र बहुबिधि दाने । गया प्रयाग पुष्कर असनाने ॥
सो फल सबही यामधि पावे । श्रद्धासहित जो पाठ करावे ॥
निर्मल होय पाठ जो करई । सो नर सहजे भवनिधि तरई ॥
वेद पुराण अरु शास्त्र विलोई । जाहिनिकस्योगुरुमहिमासोई ॥
गुरु महिमा सारको सारी । गिरिजाप्रति भाष्यो त्रिपुरारी ॥
गुरु महिमा गुरुगमसे गाया । चढि सत पारख नादबजाया ॥
सत्तकबीर जब दाया कीनी । गुरुमहिमा तब वर्णन कीनी ॥

साखी–गुरुमहिमा गुरु गम अहै, जानै सन्त सुजान ।
पढे विचारे मन करे, पावै मोक्ष निदान ॥

गुरुमहिमा शतक यहि नामा । पाठ किये पूरे सब कामा ॥
सौ चौपाई यामहि आही । बीस दोहरा साख सदाई ॥
दो चौपाई दुइ सो साखी । फल वर्णन महँ पुनि राखी ॥
पांच चौपाई यक सो दोहा । संख्या तिथि वर्णनमहँ जोहा ॥
या विधि पूर्ण भयोयहग्रन्था । जाते जिव पावे सत पंथा ॥
याको पाठ करे जो कोई । उभय आनन्दफल पावे सोई ॥
गुरुसंतन पाऊँतिन शिर नाऊँ । मातु पिताके बलिबलि जाऊँ ॥
सत्य कबीर सत्य गुरु राई । जिनकी कृपा परख पद पाई ॥
धर्मदास गुरु जग आये । करि उपदेश जगजीवचिताये ॥
राम रहस पूरण गुरु राई । सबको वन्दो शीश नवाई ॥

साखी–नभ रस निधि चन्द्र कह, पौष पूर्णिमा जान ।
बिक्रम सम्बत जानिये, रविवासर दिन मान ॥

इति श्रीगुरुमहिमा शतक समाप्त

अथ गुरु उपदेशमहिमायोग प्रारम्भः

दोहा–गुरु संत वन्दन करूं, ऐहै सुखको पूर।
गुरुमाहिमा बरनन करूँ, शिर धरि पदरजधूर ॥
सन्त सबै शिर ऊपरे, निस्पृही निज नाम।
सबके मस्तक मुक्ति गुरु, पूरवे मनके काम ॥

चौपाई

परब्रह्मको आदि मनाऊँ। तिनकी कृपा गुरुचरनन पाऊँ ॥
गुरु सोई सब सिरजन हारा। गुरुकी कृपा होय भवपारा ॥
गुरु बिन होम यज्ञ नहिं कीजे। गुरुकी आज्ञा माहि रहीजे ॥
गुरु संतनके चरण मनायो। ताते बुद्धि उत्तम मैं पायो ॥
सब इष्टनमें सतगुरु सारा। सो सुमिरावे पुरुष हमारा ॥
शरण होय शिष आवै कोई। सहज पदारथ पावै सोई ॥
गुरु सुरतरु सुरधेनु समाना। आवे चरण भुक्ति परवाना ॥
मन बांछित फल पावै सोई। प्रीति सहित जो सुमिरे कोई ॥
तन मन धन अर्पि गुरु सेवै। होय गलतान उपदेशहि लेवै ॥
गुरु बिन पदारथ और न जानै। आज्ञा मेटि और नहिं मानै ॥
सतगुरुकी गति हिरदय धारै। और सकल बकवाद निवारै ॥
गुरुके सन्मुख बचन न कहै। सो शिष रहनि गहनि सुखलहै ॥
गुरुसे बैर करै शिष जोई। भजन नाश अरु बहुत बिगोई ॥
पीढि सहित नरकमें परिहै। गुरु आज्ञा शिषलोपन करिहै ॥
चेलो अथवा उपासक होई। गुरु सन्मुख ले झूठ संजोई ॥
निश्चय नरक परै शिष सोई। वेद पुराण भनत सब कोई ॥
सनमुख गुरुकी आज्ञा धारै। अरु पाछे ते सकल निवारे ॥
सो शिष घोर नरकमें परिहै। रुधिर राध पीवै नहिं तरिहै ॥
मुखपर बचन करै परमाना। घर पर जाय करै विज्ञाना ॥

जहँ जावै तहँ निंदा करई । सो शिष क्रोध अगिनते जरई ॥
ऐसे शिषको ठौर जो नाहीं । गुरु रूख लोपत है मनमाहीं ॥
वेद पुराण कहै सब साखी । साखी शब्द सबै यों भाखी ॥
मानुष जन्म पायकर खोवै । सतगुरु विमुखा युग युग रोवै ॥
ताते सतगुरु शरना लीजै । कपट भाव सब दूर करीजै ॥
योग यज्ञ तप दान करावै । गुरू विमुख फल कबहु न पावै ॥
गुरूही जपतप तीरथ कहिये । गुरूहीं सांच अरु मिथ्या पहिये ॥
सतगुरु बिना मुक्ति नहिं कोई । ऊंच नीच भावै जो होई ॥
आतम ब्रह्म गुरू तै मेरा । ताके शरणों आयो मैं चेरा ॥
चार युगन जे संतहि भयऊ । ब्रह्मरूप होय पारहि गयऊ ॥
सो जानहु गुरु संग प्रभाऊ । लोकहु वेद न आन पराऊ ॥

दोहा–गुरु आज्ञा जिन जिन लही, सऱ्यो सकल विधि काज॥
नरक रूप जग दूर धऱ्यो, श्रीगुरू महाराज ॥

उपदेश प्राप्ति लक्षण–चौपाई

दोउ कर जोरि गुरूके आगे । करि बहु विन्ती चरनन लागे ॥
अति शीतल बोलै सब बैना । मेटे सकल कपके वैना ॥
हे गुरु तुम हो दीनदयाला । मैं हूँ दीन करो प्रतिपाला ॥
तुम बन्दी छोर अतिहि अनाथा । भवजल बूडत पकड़ो हाथा ॥
दे उपदेश गुरु मंत्र सुनाओ । जनम मरन भवदुःख छुडाओ ॥
यो अधीन होय शिष जबहीं । शिषपर कृपा करै गुरु तबहीं ॥
गुरुसे शिष जब दीक्षा मांगै । मन क्रम वचन धरैं धन आगै ॥
ऐसी प्रीति देखै गुरु जबही । गुप्त मंत्र सुनावै तबही ॥
अरु भक्तिमुक्तिको पंथ बतावै । बुरो होय को पंथ छुडावै ॥
ऐसे शिष उपदेशी पावै । होय दिध्य दृष्टि पुरुषपैजावै ॥

गुरुसेवा माहात्म्य

गंगा यमुना बद्रीश समेते । जगन्नाथादि धाम हैं तेते ॥
सेवे फल प्राप्त होय न जेतो । गुरुसेवामें पावै फल तेतो ॥
गुरु महातम को वार न पारा । वरणे शिवसनकादिकअवतारा॥
गुरु महिमा मोपै वरणि न जाई । महिमाअनन्तममतिलघुताई॥

गुरु भावना

गुरुको पुरुप ब्रह्मकर जाने । और भाव कबहूँ नहिं आने ॥
काम क्रोध रहितगुरु मेरा । पाप पुण्यका करत निवेरा ॥
काम क्रोध लोभ समाना । तो शिष जानहु तीन समाना ॥
यही दृष्टिसे गुरुको सेवै । तबतन मन धन गुरुसबको देवै ॥
तनकरि टहल करै गुरु सेवा । सो शिष लहै मुक्तिको मेवा ॥
बचन उचारे पुहुम सम वाणी । द्रव्य लगावै गुरुहित जानी ॥
ऊँच नीच सबही सुन लीजे । कबीर बचन प्रमाण करीजे ॥
मेरे और कछु नहिं चहिये । गुरु भावना गुरुहिय लहिये ॥

दोहा—सात द्वीप नौ खण्डमें, औ इकीस ब्रह्मण्ड ।
सतगुरु विना न बाचिहो, काल बड़ो परचंड ॥

यहीभाव भक्तिका लक्षण कहिये । गुरुकेभावविनभवजल बहिये ॥
जिन बातनसे गुरु दुख पावे । तिन बातनको दूर बहावे ॥
वेद पुराण सबै मिलि गावै । नेमी धर्मी चौरासि न जावे ॥
अष्ट अङ्गसों दंड परनामा । संध्या प्रात करै निषकामा ॥
गुरुको शिष ऐसे नहिं मानै । सो त्रयतापजरत चारो खानै ॥
योगी यती तपी आशरमा । बिनु गुरु कोउ न जानै मरमा ॥

गुरुचरणोदक माहात्म्य

कोटिक तीरथ सब करआवै । गुरु चरणाफल तुरतहि पावै ॥
कदाचित चरणामृत पावै । चौरासीगत सतलोक सिधावै ॥

कोटिक जप तप करै करावै । वेद पुराण सबै मिलि गावै ॥
गुरुपद रज मस्तक पर देवै । सो फल तत्कालहि लेवै ॥

दोहा—गुरु चरणोदक अनन्त फल, हमते कही न जाय ।
मनकी पुरवै कामना, जो लेवे चित्त लगाय ॥
सतगुरु समान को हितू, अन्तर करो विचार ।
कागा सो हंसा करै, दरसावै ततसार ॥
गुरु महिमा ग्रंथ यह, कहैं कबीर समझाय ।
पाप ताप सबही हरे, अमरलोक लै जाय ॥

इति श्रीगुरु उपदेश महिमायोग समाप्त

[कबीर पंथी भारत पथिक स्वामी श्रीयुगलानन्दद्वारा संगृहीत और संशोधित कबीर दर्शन लाइब्रेरीसे संपादित]

गुरुमहिमा प्रारंभः

प्रथम खण्ड

चौपाई

गुरुकी शरणा लीजै भाई। जाते जीव नरक नहिं जाई॥
गुरु मुख हो परम पद पावे। चौरासीमें बहुरि न आवे॥
गुरु पद सेवे विरला कोई। जापर कृपा साहबकी होई॥
गुरु बिनु मुक्ति न पावे भाई। नरक उर्द्धमुख बासा पाई॥
गुरुको कृपा कटे यम फांसी। विलम्बनहोयमिलेअविनाशी॥
गुरु विनु काहु न पाया ज्ञाना। ज्यों थोथा भुसछडेकिशाना॥
गुरु महिमा शुक देवजो पाई। चढि विमान वैकुंठे जाई॥
गुरु विनु पढै जो वेद पुराना। ताको नाहिं मिलै भगवाना॥
गुरु सेवा जो करे सुभागा। माया मोह सकलभ्रम त्यागा॥
गुरुकी नाव चढै जो प्राणी। खेद उतारे सतगुरु ज्ञानी॥
तीरथ वरत और सब पूजा। गुरु विन देवता और न दूजा॥
नौ नाथ चौरासो सिद्धा। गुरुके चरण सेवे गोविन्दा॥
गुरु विनु प्रेत जनम सब पावै। वर्ष सहस्र गर्भ मांहि रहावै॥
गुरु विनु दान पुण्य जो करही। मिथ्या होय कबहूँनहिंफलही॥
गुरु विनु भरम न छूटै भाई। कोटि उपाय करै चतुराई॥
गुरु विनु होम यज्ञ जो साधे। औरो मन दश पातक बाधे॥
सतगुरु मिले तो अगम बतावै। यमकी आंचताहि नहिं आवै॥
गुरुके मिले कटे दुख पापा। जनम जनमको मिटै संतापा॥
गुरुके चरण सदा चित दीजै। जीवन जन्म सुफल कर लीजै॥
गुरुके चरण सदा चित जानो। क्यों भूले तुम चतुर स्थानो॥
गुरु भगता मन आतम सोई। वाके हिरदे रहो समोई॥

गुरु मुख ज्ञान ले चेतो भाई । मानुष जन्म बहुरिनहिं पाई ॥
सुख संपति आपन नहिं प्राणी। समझि देखु तुमनिश्चयजानी ॥
चौविस गुरु हरि आपहि धरिया। गुरु सेवा हरि आपहि करिया ॥
गुरुकी निंदा सुनै जो काना । ताको निश्चय नरक निदाना ॥
दशवां अंश गुरूको दीजै । जीवन जनम सुफल कर लीजै ॥
गुरु मुख प्राणी काहे न हूजे । हृदय नाम सदा रस पीजै ॥
गुरु सीढी चढि ऊपर जाई । सुखसागरमें रहे समाई ॥
अपने मुख निंदा जो करई । शूकर श्वान जन्म सो धरई ॥
निगुरु करे करै मुक्ति आशा । कैसे पावै मुक्ति निवासा ॥
औरो सुकृत देह जो पावे । सतगुरु बिन मुक्ती नहिं आवे ॥
गौरी शंकर और गणेशा । सबही लीन्हा गुरु उपदेशा ॥
शिव विरंचि गुरु सेवा कीन्हा । नारद दीक्षा ध्रुवको दीन्हा ॥
सतगुरु मिले परम सुखदायी । जनम जन्मका दुःख नसाई ॥
जबगुरु किया अटलअविनाशी। सुर नर मुनि सब सेवक रासी ॥
भवजन नदिया अगम अपारा । गुरु बिनु कैसे उतरे पारा ॥
गुरु बिनु आतम कैसे जाने । सुख सागर कैसे पहिचाने ॥
भक्ति पदारथ कैसे पावे । गुरु विनु कौन जो राह बतावे ॥
गुरुमुख नाम देव रैदासा । गुरु महिमा उनहूँ परकासा ॥
तैतिस कोटि देव त्रिपुरारी । गुरु विनु भूले सकल अचारी ॥
गुरुविनु भरमें लख चौरासी । जनम अनेक नरकके बासी ॥
गुरुविनु पशू जनम सो पावै । फिर २ गर्भ बासमें आवै ॥
गुरु विमुख सोई दुख पावे । जनम जनम सोई डहकावै ॥
गुरु सेवै जो चतुर स्थाना । गुरु पटतरकोई और न आना ॥
गुरुकी सेवा मुक्ति निज पावे । बहुरि न हंसा भवजल आवे ॥
भवजल छूटन यही उपाई । गुरुकी सेवा करो सब धाई ॥

साखी–सतगुरु दीन दयाल है, देवे भक्ति मुकाम ।
मनसा वाचा कर्मना, सुमिरो सतगुरु नाम ॥
सत्य शब्द के पटतरे, देवेको कछु नाहिं ।
कहले गुरु संतोषिये, हवस रही मन माहिं ॥
अति उण्डा गहरा घना, बुद्धिवन्त मति धीर ।
सो धोखा विरचे नहीं, सतगुरु मिलहि कबीर ॥

इति श्री प्रथमखण्ड गुरुमहिमा समाप्त

अथ गुरुदेवकी महिमा प्रारंभः

द्वितीय खण्ड

गुरुदेवकी महिमा बरणों । जे गुरु देव तुम्हारी शरणों ॥
गावत जे गुण पार न पावे । ब्रह्मा शंकर शेष गुण गावे ॥
प्रथमहि रुगुण ऐसा कीन्हा । तारक मंत्र रामको दीन्हा ॥
माता तिलक दिया सरूपा । जाको बन्दे राजा औ भूपा ॥
ज्ञानगुरू उपदेश बताया । दया धर्मकी राह चिन्हाया ॥
जीव दया घटहीमें होई । जीव दया ब्रह्म है सोई ॥
गुरुसे आधीन चेला बोले । खरा शब्द उर अन्तर खोले ॥
खारा मिशरी बचने खमैं । गुरुके चरणों चेला रमैं ॥
भीतर हिरदे गुरुसों भले । ताके पीछे रामहिं मिले ॥
गुरु रीझेसो कीजे कामा । ताके पीछे रामहिं रामा ॥
शिष सरस्वतीगुरु यमुना अङ्गा । राम मिले सब सरिता गङ्गा ॥
चेला गुरुमें गुरुमें राम । भक्ति महातम न्यारा नाम ॥
गुरु आज्ञा निरबाहें नेम । तब पावे सरबज्ञी प्रेम ॥
सरबज्ञी राम सकल घट सारा । है सबही में सब सों न्यारा ॥
ऐसी जाने मनमें रहै । खोजे बूझे तासो कहै ॥

गुरुकी महिमा संक्षेप भनी । गुरुकी महिमा अनंत घनी ॥
औतार धरी हरि गुरु करे । गुरु किये तब नारद तरे ॥
साख पुरातन ऐसी सुनी । बात हमारी गुरु चरणों बनी ॥
कीड़ी जैसा मैं हौं दासा । पडा रहा गुरु चरणों पासा ॥
गुरु चरणों राखों विश्वासा । गुरुहि पुरावै मनकी आसा ॥

साखी–गुरु गोविन्द अरु शिष मिलि, कीन्हा भक्ति विवेक ॥
तिरबेनी धारा बही, आगे गङ्गा एक ॥
गुरुकी महिमा अनंत है, मोसो कही न जाय ।
तन मन गुरुको सौंपिकै, चरणों रहों समाय ॥

इति श्रीद्वितीय खण्ड गुरु महिमा समाप्त

अथ गुरुमहिमा प्रारंभः

तृतीयखण्ड

गुरु सतपद भजु अमृतबानी । गुरु बिनु नहीं रे प्राणी ॥
गुरु हैं आदि अन्तके दाता । गुरु हैं मुक्ति पदके दाता ॥
गुरु गङ्गा काशिहि स्थाना । चारवेद गुरुगमसे जाना ॥
अरसठ तीरथ भ्रमि २ आवे । सो फल गुरुके चरणों पावे ॥
गुरुको तजे भजे जो आना । ता पशु याको फोकट ज्ञाना ॥
गुरु पारस परसे जो कोई । लोहाते जिव कञ्चन होई ॥
शुक गुरु किये जनकरुवैदेही । वो भै गुरुके परम सनेही ॥
नारद गुरु प्रह्लाद पढाये । भक्तिहेतु जिन दर्शन पाये ॥
काकभुशुंडि शंभु गुरू कीन्हा । अगम निगम सब कहि दीन्हा ॥
ब्रह्मा गुरू अग्निको कियेऊ । होम यज्ञ जिन यज्ञ दियेऊ ॥
वशिष्ट मुनि गुरू किये रघुनाथा । पाये दरशन भये सनाथा ॥
कृष्ण गये दुर्वासा शरणा । पाये भक्ति जब तारन तरना ॥

नारद उपदेश धिमरसे पाये। चौरासीसे तुरत बचाये ॥
गुरु कह सोई है सांचा। बिनु परचे सेवक है कांचा ॥
गुरु सामरथ सबके पारा। गहे शरण उतरे भवपारा ॥
कहैं कबीर गुरु आप अकेला। दशो औतार गुरूका चेला ॥

साखी–राम कृष्णसों को बडा, तिनहू तो गुरु कीन्ह ।
तीन लोकके वे धनी, सो गुरु आगे अधीन ॥
हरिसेवा युगचार हैं गुरु सेवा पल एक ।
तासु पटतर ना तुले, संतन किया विवेक ॥

अथ प्रचलित गुरुमहिमा कबीर दर्शन लाइब्रेरीके संस्थापक कबीरपंथी भारतपथिक स्वामी श्रीयुगलानन्दद्वारा संग्रहीत संशोधित और सम्पादित।

इति श्रीतृतीय खण्ड गुरुमहिमा समाप्त

सत्यसुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त, पुरुष, मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतान, धनी धर्मदास, चुरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रबोध गुरुबालापीर, केवल नाम, अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रकट नाम, धीरज नाम, उग्र नाम, दया नामकी दया, वंश-ब्यालीसकी दया

अथ श्रीबोधसागरे

सप्तत्रिंशतिस्तरंगः

कबीर चरित्र बोध प्रारम्भः

★

दोहा–गुरु कबीर जग विदित है, भक्त मुक्ति दातार ।
जिव मुक्तावन कारने, आये जगत मँझार ॥
कीन्ह चरित नाना जगत, सोई करों बखान ।
परमानन्द यश पाइ है, नहिं पावा कोइ आन ॥
उभय आनंदके प्राप्तिको, साधन अहै अनूप ।
गुरू चरित गायन करी, होवे हंसन भूप ॥

सत्य पुरुषकी आज्ञा

सत्यपुरुषने ज्ञानीजीसे कहा कि, ऐ ज्ञानीजी ! काल पुरुषने समस्त जीवोंको फँसाकर मार लिया, सब जीव भटक भटक कर कालकी फाँसीमें पड गये, कोई जीव मेरे लोकमें नहीं आता मैंने सुकृति जी (धर्मदास) को सत्य पंथके प्रचारके लिये पृथ्वी पर भेजा था—उनको कालपुरुषने धोखा देकर लोक वेदमें फँसा लिया और धर्मदासजी सत्यपुरुषकी भक्तिको छोड़कर कालपुरुषकी भक्तिमें लग गये। इस कारण आप पृथ्वी पर जाओ और सुकृतिजीको चेताकर मुक्तिपंथ पृथ्वीपर प्रकट करो। तब ज्ञानीजी सत्यपुरुषकी आज्ञा शिरोधार्य कर दंडवत प्रणाम करके सत्यलोकसे बिदा हुए।

कबीर साहिबका काशीमें प्रकट होना

सम्वत् चौदह सौ पचपन विक्रमी ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा सोमवारके दिन सत्यपुरुषका तेज काशीके लहर तालाबमें उतरा, उस समय पृथ्वी और आकाश प्रकाशित हो गया। उस समय अष्टानंद वैष्णव उस तालाब पर बैठे थे। वृष्टि हो रही थी, बादल आकाशमें घिरे रहनेके कारण अंधकार छाया हुआ था, और बिजली चमक रही थी, जिस समय वह प्रकाश तालाबमें उतरा उस समय समस्त तालाब जगमग जगमग करने लगा और बड़ा प्रकाश हुआ। वह प्रकाश उस तालाबमें ठहर गया और प्रत्येक दिशाएँ जगमगाहटसे परिपूर्ण हो गयीं और इस आश्चर्यमय प्रकाशको देखकर अष्टानंदजी आश्चर्यान्वित हुए। प्रकाशके फैलते ही मयूर चकोर आदि नाना प्रकारके पक्षी बोलने चहचहाने लगे, कमल तथा नीलकमलके पुष्प लहलहाने और भँवरे गूँजने लगे। अष्टानन्दजीने जो उस तेजके

देखा तो आनकर उसका समस्त विवरण रामानन्द स्वामीसे कहा कि, हे स्वामीजी! मैंने लहर तालाबमें एक ऐसी ज्योतिका निरीक्षण किया है जिससे मुझको अत्यन्त आश्चर्य हुआ है। उस ज्योतिको आकाशसे उतरते और लहर तालाबमें ठहरते देखा जब वह प्रकाश उस तालाबमें उतरा तब तालाब ज्योतिसे प्रकाशित हो गया। यह बात सुनकर रामानन्द स्वामीने अष्टानन्दसे कहा कि, वह प्रकाश जो तुमने देखा था उसका कौतुक शीघ्र ही तुम्हारे देखने तथा सुननेमें आवेगा।

वह तेज बालकके आकारमें हुआ उस जलके ऊपर कमलोंके पुष्पोंमें उतराने और बालकोंके सदृश हाथ पाव फेंकने लगा वह तेज अपनी समस्त प्रभाओंको पृथक् करके मनुष्यके बच्चेके आकारमें दिखलायी दिया।

नीरूके पूर्वजन्मका वृत्तान्त

श्वपच सुदर्शनके जो माता पिता थे वे दोनों भङ्गीका शरीर छोड़कर ब्राह्मण ब्राह्मणी हुए थे, और चँदवोर नगरमें रहते थे, इनके प्रेमसे कबीर साहब इनके घर गये और उनको मुक्ति-मार्ग बतलाने लगे, परन्तु उन्होंने ध्यान नहीं दिया, तब सत्य गुरु उनके गृहसे अन्तर्धान हो गये। इसके उपरान्त वे दोनों ब्राह्मण ब्राह्मणी परलोकगामी होकर काशीमें जोलाहा जोलाही हुए और उनका नाम नीरू और नीमाह्लाद है। सुदर्शनजीके माता पिता तीसरे जन्ममें जोलाहा जोलाही हुए थे। इनको मुक्तिप्रदान करनेके निमित्त पुनः कबीर साहब उनके घर गये और काशीमें लहर तालाबमें प्रकट हुए।

कबीर साहबका नीमाको मिलना

नीरू जोलाहा काशी नगरीमें रहता था, एक दिवस वह अपनी

स्त्री सहित चला आता था, दैवात् वह लहर तालाबके समीपसे होकर निकला। उसकी स्त्री नीमा प्यासी हुई और जल पीनेके निमित्त उस तालाब पर गयी वहीं देखा तो एक बड़ा ही सुन्दर बालक कमलोंमें पैरता फिरता है और हाथ पाँव फेंक रहा है। उस बालकको देखकर नीमा तालाबके भीतर घुसकर उस बच्चेको अपनी गोदमें उठा लिया और तालाबसे बाहर निकलकर नीरूके पास गयी।

नीमा और नीरूकी बातचीत

तब पूँछा कि, यह किसका लड़का ले आयी है? तब नीमाने उत्तर दिया कि, मैंने तालाबमें पाया है। नीरूने कह दिया कि, यह लड़का जहांसे तू ले आयी है वहां ही रख आ नहीं मालूम यह किसका लड़का है। तब उस स्त्रीने उत्तर दिया कि, ऐसा सुन्दर बालक तो मैं कदापि नहीं फेंकूँगी। तब नीरूने कहा कि, लोग मुझको हँसेंगे और ठट्ठाएँ उड़ावेंगे कि मुकलावेहीमें नीरू अपनी स्त्रीके साथ एक पुत्र भी ले आया, इस कारण इस बालकको तू फेंकि आ। इस बातको जब नीमाने स्वीकार नहीं किया तब नीरू अपनी स्त्रीको मारने पीटनेपर प्रस्तुत हुआ और झिड़कियां देने लगा। अब वह स्त्री खड़े खड़े अपने चित्तमें चिंता करने लगी। इतनेमें वह बालक स्वयम् बोल उठा कि, ऐ नीमा मैं तेरे पूर्वजन्म प्रेमके कारण तेरे घर आया हूँ। तू मुझको मत फेंक और अपने घर ले चल यदि मेरा कहना मानोगी तो मैं तुम्हें आवागमनके फेरेसे छुड़ा दूँगा और मुक्तिप्रदान करूँगा, समस्त दुःख संताप हर कर और वह शब्द बतलाऊंगा कि, जिससे कभी कालके फंदेमें नहीं पड़ेगी।

जब वह बालक इस प्रकार बोला तो उसकी बात सुनकर नीमा निर्भय हो गयी, बालककी बात सुनकर नीरू भी कुछ नहीं बोला । अब वे दोनों प्रसन्नतापूर्वक उस बालकको लेकर अपने घर आये । जब काशीके लोगोंने देखा कि, नीरू तो अपनी स्त्रीके साथ एक पुत्र भी ले आया तो लोग ठट्ठा और हँसी करने लगे । तब नीरूने लोगोंको समझाया कि, हमने यह बालक लहर तालाबमें पाया है, बालकका कुल विवरण कह सुनाया, फिर बुलाकर पूँछने लगा कि इस बालकका क्या नाम रखना चाहिये । ब्राह्मण पत्रा लिये विचार ही रहे थे, इतनेमें वह बालक स्वयम् बोल उठा कि ऐ ब्राह्मण ! मेरा नाम कबीर है, दूसरा नाम रखनेकी चिन्ता मत करो । यह बात सुनकर सब लोग अत्यन्त चकित हुए कि यह बालक तो स्वयम् ही अपना नाम बतलाता है यह कैसा बालक है यह किसी सिद्धका अवतार है कि कोई देवता है ? काशीमें इस बातकी चर्चा घर घर होने लगी कि, नीरूके घरमें एक बच्चा आया है सो बातें करता है । फिर नीरूने काजीको बुलाया और पूँछा कि, इस बालकका क्या नाम रखना चाहिये । जब काजी किताब खोलकर बालकका नाम स्थिर करने लगा तब कुरानके मध्यमें बालकके चार नाम निकले कबीर १ अकबर २ किबरा ३ किबरिया ४ ये चार नाम देखकर काजी चुप हो रहा और अपने दातोंके नीचे अँगुली दबाने लगा । फिर फिर वह कुरान खोलकर देखता तो समस्त कुरान उसको उन्हीं नामोंसे भरा दिखलाई दिया । अब काजीके मनमें अत्यन्त सन्देह उत्पन्न हुआ

कि, ये चारों नाम तो खुदाके हैं अब क्या करें हमारे धर्मकी अप्रतिष्ठा हुई ।

गरीबदासजीकी पारख, अंगकी सखियाँ

काशीपुरको कस्द किया, उत्तरे अधर अधार ।
मोमिनका मुजरा हुआ, जङ्गलमें दीदार ॥
कोटि किरन शशि भानु सुधि, आसन अधर विमान ।
परसत पूरण ब्रह्मको, शीतल पिंड औ प्रान ॥
गोद लिया मुख चूमिके, हेम रूप झलकन्त ।
जगर मगर काया करे, दमके पद्म अनन्त ॥
काशी उमडी गुल भया, मोमिनका घर घेर ।
कोइ कह ब्रह्मा विष्णु हैं, कोइ कहे इंद्र कुबेर ॥
कोइ कह वरुण धर्मराय हैं, कोइ कोइ कहता ईश ।
सोलह कला सुभान गति, कोई कहै जगदीश ॥
भगति मुक्ति ले ऊतरे, मेटन तीनों ताप ।
मोमिन घर डेरा लिया, कहै कबीरा बाप ॥
दूध पीवै नहिं अन्न भखे, नहीं पलने झूलंत ।
अधर आसन है ध्यानमें, कमल खिला फूलंत ॥
कोइ कहे छल ईश्वर नहीं, कोइ किन्नर कहलाय ।
कोइ कहे गुण ईशका, ज्यों ज्यों मारिये साय ॥
काशीमें अचरज भया, गयी जगतकी निंद ।
ऐसे दूल्हा ऊतरे, ज्यों कन्या बरबिंद ॥
खल्क मुल्क देखन गया, राजा परजा रीत ।
जम्बूद्वीप जहानमें उतरे, शब्द अतीत ॥

---

१ सकल कुरान कबीर है, हरफ लिखे जो लेख ।
काशी के काजी कहै, गयी दीनकी टेक ॥

दुनी कहे यह देव है, देव कहै यह ईश।
ईश कहै परब्रह्म है, पूर न विश्वे वीश॥
काजी गये कुरान ले, धर लड़केको नाँउ।
अक्षर अक्षरमें फुरे, धन्य कबीर बल जाँउ॥
सकल कुरान कबीर है, हरफ लिखे जो लेख।
काशीके काजी कहै, गयी दीनकी टेक॥
शिव उतरे शिवपुरीसे, अविगत बदन विनोद।
महके कमल खुशी भया, लिया ईशको गोद॥
नजर नजरसे मिल गयी, किया दर्श परणाम।
धन्य मोमिन धन्य पूरना, धन्य काशी निष्काम॥
सात बार चर्चा करे, बोलै बालक बैनु।
शिव सो कर मस्तक धरयो, ला मोमिन यक धेनु॥
अनब्यावरको दुहतही, दूध दिया ततकाल।
पीयो बालक ब्रह्म गति, वहां शिव भये दयाल॥
कष्ट मानुषके जब भई, नित दुनिया वर देहि।
चरण चले तत पुरीमें, यहि शिक्षा नित लेहि॥

जब काशीके सब काजियोंको यह समाचार मिला तब वे इस समाचारको सुनकर बड़े ही चिन्तित हुए कि, यह कैसा आश्चर्य अद्भुत व्यापार है कि, समस्त कुरानमें कबीर ही कबीर दिखाई देता है। अब कौन उपाय करना चाहिये कि; ऐसे दरिद्री जोलाहेके पुत्रका इतना बड़ा नाम न रक्खा जावे। फिर फिर कुरान खोलकर देखते तो यही चारों नाम निकलते। इन चारों नामोंके सिवाय और कुछ नहीं निकला। तब काशी-के काजियोंने आपसमें सम्मति की और नीरूसे कहा कि, ऐ नीरू! तू इस बालकको अपने घरके भीतर लेजाकर मार

खपा। तब वह जोलहा कबीर साहबको अपने घरके भीतर ले गया और उनको छुरीसे काटने लगा, छुरी एक ओरसे दूसरी ओर पार निकल गई न कोई घात हुआ और न लोहूका एक बूँद ही निकला और न गले पर कोई चिह्न हुआ। नीरू यह आश्चर्यमय वृत्तान्त देखकर एकदम डर गया और थर थर काँपने लगा उसके हाथसे छुरी गिर गयी और वह अचेत सा हो गया। तब कबीर साहब बोले कि, ऐ नीरू! मेरा कोई माता पिता नहीं है, न मैं उत्पन्न होता हूँ, न मरता हूँ, न मुझको कोई मार सकता है, न मैं किसीको मारता हूँ। और न मेरा शरीर है न मेरे मांस चर्म हड्डी और रक्त है और मैं स्वयंप्रकाश हूँ। यह बात सुनकर जोलाहा अत्यन्त भयभीत हुआ। अन्तमें विवश होकर जब यह वृत्तान्त प्रकट हुआ तब कबीरही नाम ठहराया। किसीका कुछ वश न चला कि, उसको बदल सके।

बाललीला

बिना भोजनादि किये ही कबीर साहबका शरीर बड़ा होता जाता था और दिन प्रति आपका तेज तथा प्रताप बढ़ता जाता था। जब जोलाहा जोलाहीने देखा कि, बालक तो कुछ भोजन करता नहीं है तब वे अपने मनमें अत्यन्त चिन्तित होकर कहने लगे कि ऐ कबीरजी! आप कुछ भोजन करो यदि आप अन्न न खाओगे तो हम भी नहीं खायेंगे। तब कबीर साहबने उत्तर दिया कि, ऐ नीरू! गायकी एक कुवाँरी बछिया और कुम्हारके घरसे एक कोरा बरतन ले आओ। कबीर साहबकी आज्ञानुसार नीरू गया और कोरी बछिया ढूँढकर और कुम्हारके गृहसे एक बरतन ले आया। तब कबीर साहबने उससे कहा कि, इस बछियाको मेरे सामने बांध दो और उसके स्तनोंके नीचे

बरतन रख दो, फिर कबीर साहबने उस बछियाकी ओर देखा तो उसके स्तनोंसे दूध निकलने लगा जिससे बरतन भर गया वही दूध लेकर नीरूने कबीर साहबके मुँहके सामने रख दिया। फिर तो नीरू नित्य उसी प्रकार प्रतिदिवस किया करता था।

जब कबीर साहिब कुछ बड़े हुए और छोटे-छोटे लड़कोंके साथ खेलने लगे तब आप उन लड़कोंसे ब्रह्मज्ञानकी बातें किया करते थे। वे बेसमझ लड़के कबीर साहबकी बातको तनिक भी नहीं समझते बल्कि जब वह उन्हें समझाने लगते तब वे मुँह देखने लग जाते। फिर कुछ दिनोंके पश्चात् आप साधुओं के साथ ज्ञानगोष्ठी करने लगे। जब साधु लोग आपका ज्ञान सुनते तब अत्यन्त चकित होते कि, यह छोटा बालक इस प्रकारकी बातें कैसे करता है। इन बातोंकी सुधि तो किसी साधुको भी नहीं है। तब साधुओंको विदित हो गया कि, यह बालक नहीं बरन् कोई सिद्ध ही लड़केके वेषमें प्रकट हुआ है।

कबीर साहबकी बालकपनके अनेक लीलाओंका विवरण ग्रंथोंमें लिखा है-उस समय जलनके रोगका काशीमें प्रकोप था। एक वृद्धा स्त्री आई और कबीर साहबसे बोली कि, मैं जलन रोगसे व्यथित हूँ, आप धूल मिट्टी खेल रहे थे। कबीरजी बोले, यदि तेरी इच्छा हो तो मैं आरोग्य लाभ करूं। तब कबीर साहबने उस स्त्रीपर थोडीसी धूल डाल दी और वह आरोग्य हो गयी जिसपर वह प्रसन्न होती चली गयी। इस प्रकारकी बातोंका कुछ विवरण हो नहीं सकता।

कुछ दिवसोंके उपरांत समस्त जुलाहे एकत्रित होकर कहने लगे कि, ऐ नीरू! अब तुम अपने पुत्रका सुन्नत (मुस-

ल्मानी) कराओ। फिर एक दिन मुकर्रर करके जुलाहे एकत्रित हुए और काजीको बुलाया। जब नाई उस्तरा लेकर कबीर साहबके सामने गया तब आपने पांच लिंग उसको दिखलाये और उससे कहा कि, इन पांचोंमेंसे जिसको चाहे तू काट ले। यह अवस्था देखकर नाई तो भयभीत होकर भाग गया और आपका सुन्नत नहीं हुआ।

एक दिन आप छोटे-छोटे बच्चोंके साथ खेल रहे थे,उस समय काजीने गोवधका प्रबंध किया और गऊके जबह करनेका समय आया तब आपने सब वृत्तांत जान लिया कि, काजी गऊके जबह करनेके विचारमें है। ऐसा जान करके बालकोंके साथका खेलना छोड़कर गऊकी ओर दौड़े। जबतक गायके समीप पहुँचे तबतक तो काजीने गऊको समाप्त कर दिया। कबीर साहब आकर उस काजीको उपदेश देने लगे जिससे लज्जित होकर काजी अपने अपराधके निमित्त क्षमाका प्रार्थी हुआ। फिर कबीर साहब उस गऊको जीवित करके और आप अंत-र्धांन हो गये।

जब आप अंतर्धांन हो गये तब जुलाहा जुलाही आपको ढूँढ़ने लगे। जब कई दिनों तक कबीर साहब उन्हें नहीं मिले तब उनको बड़ा दुःख हुआ और वे फूट-फूट कर रोने लगे। समस्त नगरमें ढूँढ़ डाला पर आप कहीं नहीं मिले। उसको तीन दिन भूखे प्यासे बीत गये, अन्नजल कुछ भी उसके मुँहमें नहीं गया। वे अत्यन्त निर्बल तथा अशक्त हो गये। जब आपने उन दोनोंको नितांत ही विह्वल पाया तब आप उनके सामने प्रकट हो गये।आपको देखते ही वे प्रसन्न होकर चरणोंपर गिर पड़े और कहने लगे कि, आप किधर चले गये ? हम

ढूँढते-ढूँढते हैरान हो गये ? तब कबीर साहबने उत्तर दिया कि, तुमने महापाप किया कि, गऊको जबह करवाया । जोलाहा जोलाही अनेक सौगंधें खाने लगे कि, हमने यह कार्य नहीं करवाया बरन् हमें इस बातकी तनिक भी सुधि नहीं है, यह कार्य काजीका है जब उन दोनोंने बहुत कुछ प्राथंना तथा बिनती की तब कबीर साहबने दोनोंको निर्दोष समझकर उनके घर पर गये ।

जब आप छोटे २ बालकोंके साथ खेलते थे तब "राम राम" "गोविंद गोविंद" " हरि हरि " कहा करते थे तब मुसलमान लोग सुनकर कहते थे कि, यह बालक कट्टर काफिर होगा । तब उनको कबीर साहब यह प्रत्युत्तर देते थे कि, काफिर वह होगा जो दूसरोंका माल लूटता होगा, काफिर वह होगा जो कपट-भेष बनाकर संसारको ठगता हो, काफिर वह है जो निर्दोष जीवोंका प्राणनाश करता होगा, काफिर वह होगा जो मांस खाता होगा, काफिर वह होगा जो मदिरा पान करता होगा और काफिर वह होगा जो दुराचार तथा बटमारी करता होगा मैं किस प्रकार काफिर हूं ।

साखी–कबीर साहब

गला काटकर बिसमिल करें, ते काफिर बेबूझ ।
औरनको काफिर कहैं, अपनो कुफ्र न सूझ ॥

कुछ दिनके बाद कबीर साहबने गलेमें यज्ञोपवीत डाल लिया और अपने माथेपर तिलक लगा लिया, तब ब्राह्मण देखकर कहने लगे कि, यह तो तेरा धर्म नहीं है तूने वैष्णव वेष कैसे बनाया ? तू राम राम गोविंद गोविंद नारायण नारायण कहता है–यह तो मेरा धर्म है तेरा धर्म नहीं । तब कबीर

साहब ब्राह्मणोंको उत्तर देते कि, हम तो ताना तनते हैं, जनेऊ तुम्हारा किस प्रकार हुआ ? और गोविंद और राम तो हमारे हृदयमें बसते हैं, तुम्हारे कैसे हुए। तुम तो गीता पढते हो और सांसारिक धनके निमित्त सदैव धनाढ्योंके द्वार द्वार पर दौडते और भटकते रहते हो, हम तो गोविंदके अतिरिक्त और किसी अन्यको नहीं जानते हैं। इतना सुनकर ब्राह्मण निरुत्तर हो जाते फिर तो हिन्दू तथा मुसलमान दोनों आपके साथ वाद विवाद किया करते और सब परास्त होने लगे। जब साधुओंने देखा कि, यह लड़का तो बड़ा ज्ञानी है, तब वे लोग पूँछते कि, कबीरजी आपका गुरु कौन है, उस समय तो आपका कोई गुरु नहीं था-इस प्रश्नपर आप निरुत्तर निस्तब्ध हो जाते। तब साधु लोग आपको ताना मारते कि, बिना गुरुके तुम्हारा ज्ञान किसी काम नहीं आवेगा-और न बिना गुरुके किसीको मुक्ति मिलेगी, तुम्हारा यह सब वार्तालाप तथा ज्ञान व्यर्थ है। जब साधु लोग कबीर साहबपर इस प्रकार कटाक्ष करने लगे तब आपने रामानंद स्वामीको गुरु करनेका संकल्प किया। जिस समय आपने स्वामी रामानंदको गुरु करनेका संकल्प किया उस समय आपको प्रकट हुए पूरे पांच वर्ष हो चुके थे और आपकी प्रसिद्धि भारतके बहुत भागोंमें हो चुकी थी।

आप रामानन्द स्वामीके पास गये और विनय किया कि, स्वामीजी ! मुझको दीक्षा देकर अपना शिष्य कीजिये और मुझसे गुरुदक्षिणा लीजिये मुझपर कृपा कीजिये। यह बात सुनकर स्वामीजीने उत्तर दिया कि, मैं शूद्रको दीक्षा नहीं देता।

रामानन्द स्वामी और कबीर साहबकी वार्तालापका वृत्तान्त

भक्ति द्रावड देश थी, यहां नहीं एक विरञ्च।

ऊत भूतको ध्यावना, पाखंड और परपञ्च ॥
रामानन्द अनन्द भये, काशी नगर मँझार ।
देश द्राविड छाड़िके, आये पुरी विचार ॥
योग युक्ति प्राणायाम करि, जीता सकल शरीर ।
तिरवेणीके घाटमें, अटक रहे बलवीर ॥
तीरथ वरत एकादशी, गंगोदक अस्नान ।
पूजा विधि विधानसों, सर्वकलासों गान ॥
करे मानसी सेव नित, आत्मतत्त्वको ध्यान ।
षट पूजा आदि भेद गति, धूप औ दीप विधान ॥
चौदह सौ चेले किये, काशीनगर मँझार ।
चार सम्प्रदा चलत हैं, और हैं बावन द्वार ॥
पांच बरषके जब भये, काशीमाहिं कबीर ।
दास कबीर अजीबकला, ज्ञानध्यान गुण थीर ॥
गुल भया काशी पुरीमें, अटपट बैन विहंग ।
दास गरीब गुणी थके, सुनि जोलहा परसंग ॥
रामानँद अधिकार है, सुनि जोलहा जगदीश ।
दास गरीब बिलम्बना, ताहि नवावत शीश ॥
रामानँदको गुरु कहै, तनसे नहीं मिलाप ।
दास गरीब दरस भये, पैयन लगी जो लाप ॥
पन्थ चलत ठोकर लगे, राम नाम कहि दीन ।
दास गरीब कसर नहीं, सीख लिये बरबीन ॥
आड़ा परदा देइके, रामानन्द बुझन्त ।
दास गरीब उलंग छबि, अधर डाक कूदंत ॥
कौन जाति कुल पंथ है, कौन तुम्हारा नाउँ ।
दास गरीब अधीन गति, बोलतही बलि जाउँ ॥

जाति हमारी जगद्गुरु, परमेश्वर यह पंथ ।
दास गरीब लिखत परे, नाम निरंजन कंत ॥
रे बालक दुर्बुद्धि सुन, घट मठ तन आकार ।
दास गरीब दरदर लगे, बोले सिरजन हार ॥
तू मोमिनके पालुवा, जुलहेके घर वास ।
दास गरीब अज्ञान गति, एता दृढ़ विश्वास ॥
मान बड़ाई छांड़िके, बोलौ बालक बैन ।
दास गरीब अधम मुखी, इतना तुम घर फैन ॥
कलियुग क्षेतरपाल है, क्या भैरो कोइ भूत ।
दास गरीब विटंबना, गया जगत सब ऊत ॥
मनी मगज माया तजो, तजिये मान गुमान ।
दास गरीब सो बात कहि, नहिं पावेगो जान ॥
हे बालक बुधि तोरि गति, कौडी साखन भांड ।
दास गरीबहि हदेसकरि, नहिं लेवेगे डाँड ॥
शाह शिकंदरके वधे, पग ऊपर तर शीश ।
दास गरीब अगाधि गति, तोर कहा जगदीश ॥
कान काट बूचा करे, नली भरत रे नीच ।
दास गरीब जहानमें, तुम सुर जोरा मीच ॥
मरत मरत सबजग मुआ, लखै नऽस्थिर ठौर ।
दास गरीब जहानमें, तुमसा नीच न और ॥
नादबिन्दकी देहमें, येता गर्व न कीन ।
दास गरीब पलक फना, जैसे बुदबुद लीन ॥
तिनकर तैसे बोलते, रामानन्द सुजान ।
दास गरीब कुजाति है, आखिर नीच निदान ॥
नीच मीच से ना डरे, काल कुल्हाड़ अशाश ।

दास गरीब अदत्त है, तैं जो कहा जगदीश ॥
जडिहों हाथ हथकड़ी, गले तौक जञ्जीर ।
दास गरीब परख बिना, यह वाणी गुणगीर ॥
परख निरख नहिं तोहिको, नीच कुलीन कुजात ।
दास गरीब अकल बिना, तू जो कही क्या बात ॥
हे बालक नीचा कला, तुमही बोलो ऊँच ।
दास गरीब पलक धरि, खबर नहीं हम कूँच ॥
महँके बरन खलास करि, सुन स्वामी परवीन ।
दास गरीब मनी मरी, मैं आजिज आधीन ॥
मैं अविगत गतिसे परें, चार वेदसे दूर ।
दास गरीब दशों दिशा, सकल सिंधु भरपूर ॥
सकल सिन्धु भरपूर हूँ, खालिक हमरो नाउँ ।
दास गरीब अजात हूँ, तेजि कहा बलि जाउँ ॥
जात पाँत मेरे नहीं, नाहिं स्त्री नहिं गाउँ ।
दास गरीब अनन्य गति, नहीं हमारे नाउँ ॥
नाद बिन्द मेरे नहीं, नहीं गोद नहिं गात ।
दास गरीब शब्द सजग, नहीं किसीका साथ ॥
सब सङ्गी बिछरू नहीं, आदि अन्त बहु जाहिं ।
दास गरीब सकल बसौं, बाहर भीतर माहिं ॥
हे स्वामी मैं सृष्टिमें, सृष्टि हमारे तीर ।
दास गरीब अधर बसूँ, अविगत पुरुष कबीर ॥
अनन्तकोटि सलिता बड़ो, अनन्तकोटिधर ऊँच ।
दास गरीब सदा रहूँ नहीं हमारे कूँच ॥
पुहमी धरनि अकाशमें, मैं व्यापक सब ठौर ।
दास गरीब न दूरसा, हम सम तुल नहिं और ॥

मैं माया मैं काल हूँ, मैं हंसा मैं वंश ।
दास गरीब दयाल हम, हमहीं करें विध्वंस ॥
ममता माया हम रची, काल जाल सब जीव ।
दास गरीब प्राण पद, हम दासा तन पीव ॥
हम दासनके दास हैं, कर्ता पुरुष करीम ।
दास गरीब अवधूत हम, हम ब्रह्मचारी सीम ॥
हम मौला सब मुल्कमें, मुल्क हमारे माहिं ।
दास गरीब दलाल हम, हम दूसर कछु नाहिं ॥
हम मोती मुक्ताहल, हम दरिया दरवेश ।
दास गरीब हम नित रहैं, हम तजि जात हमेश ॥
हमहीं लाल गुलाल हैं, हम पारस पद सार ।
दास गरीब अदालतँग, हम राजा संसार ॥
हम पानी हम पवन हैं, हमहीं धरणि अकाश ।
दास गरीब तत्त्वपञ्चमें, हमहीं शब्द निवास ॥
सुनु स्वामी सत भाखहूँ, झूठ न हमरो रञ्च ।
दास गरीब हम रूप बिन, और सकल परपञ्च ॥
हम रोवत हैं सृष्टिको, जो रोवति है मोहिं ।
दास गरीब वियोगको, और न बूझे कोइ ॥
मैं बूझूँ मैं ही कहूँ, मैं ही किया वियोग ।
गरीब दास गलतान हम, शब्द हमारा योग ॥
चारों रुकुनमें हम फिरें, नहिं आवें नहिं जाउँ ।
गरीब दास गुरु भेदसे, लखे हमारा ठाउँ ॥
रजगुण सतगुण तमगुण, रजबीरज हम कीन्ह ।
गरीब दास हम सकलमें, हम दुनियाँ हम दीन्ह ॥
लगी महम गनीम पर, काल कटक कट कन्त ।

गरीबदास निर्भर करूँ, जो कोई नाम जपन्त ॥
मैं बालक मैं वृद्ध हूँ, मैंही जवाँ जमान।
गरीबदास निज ब्रह्म हूँ, हमहीं चारों खान ॥
गगन शून्य गुप्ता रहूँ, हम परकट परवाह।
गरीबदास घट घट बसूँ, विकट हमारी राह ॥
आवत जात न दीसहूँ, रहता सकल समीप।
गरीबदास जलतरँग ज्यों, हमहिं सागरसीप ॥
गोता लाऊँ स्वर्गमें, फिर पैठूँ पाताल।
गरीबदास ढूँढत फिरूँ, हीरे माणिक लाल ॥
इस दरिया कङ्कर बहुत, लाल कहीं कहिं ठाउँ।
गरीबदास माणिक चुगूँ, हम मरजीवा नाउँ ॥
बोले रामानन्दजी, हम घर बड़ा सुकाल।
गरीबदास पूजा करें, मुकुट फई जद माल ॥
सेवा करो सम्हालके, सुन स्वामी सुरज्ञान।
गरीबदास शिरधर मुकुट, माला अटकी जान ॥
स्वामी घुंडी खोलके, फिर माला गले डार।
गरीबदास इस भजनको, जानत हैं करतार ॥
ड्योढ़ी परदा दूरकर, लीना कण्ठ लगाय।
गरीबदास गुजरी बहुत, बदनन बदन मिलाय ॥
मनकी पूजा तुम लखी, मुकुट माल परवेश।
गरीबदास किनको लखे, कौन वरन क्या भेष ॥
यह तो तुम शिक्षा दयी, मान लिये मन मोर।
गरीबदास कोमल पुरुष, हमरो बदन कठोर ॥
हे स्वामी तुम स्वर्गकी, छोड़ो आशा रीत।
गरीबदास तुम कारणे, उतरे शब्द अतीत ॥

सुन बच्चा मैं स्वर्गकी, कैसे छाँडूँ रीत ।
गरीबदास गुदड़ी लगी, जन्म जात है बीत ॥
चार मुक्ति वैकुण्ठमें, जिनकी मोरे चाह ।
गरीबदास घर अगमक, कैसे पाऊँ थाह ॥
हेम रूप जहाँ धरणि है, रत्न जड़े बहु शोभ ।
गरीबदास घर वैकुण्ठको, तन मन हमरो लोभ ॥
शंख चक्र गदा पद्म है, मोहन मदन मुरार ।
गरीबदास मुरली बजे, स्वर्गलोक दरबार ॥
दूधोंकी नदियां बहैं, श्वेत वृक्ष शोभान ।
गरीबदास मन्दिर मुकुट, स्वर्गपुरी अस्थान ॥
रत्न जड़ाऊ मनुष सब, गण गंधर्व सब सेव ।
गरीबदास उस धामकी, कैसे छाँडूँ सेव ॥
चार वेद गावैं उसे, सुर नर मुनी मिलाप ।
गरीबदास ध्रुव पुर यश, मिट गये तीनों ताप ॥
नारद ब्रह्मा यश रटैं, गावैं शेष गणेश ।
गरीबदास वैकुण्ठसे, और परे को देश ॥
सुन स्वामी निज मूलगति, कहि समझाऊँ तोहिं ।
गरीबदास भगवानको, राखा जगत समोहिं ॥
तीनलोकके जीव सब, विषय वासना भाय ।
गरीबदास हमको जपैं, तिसको धाम दिखाय ॥
कृष्ण विष्णु भगवानके, जहां गये हैं जीव ।
गरीबदास त्रिलोकमें, काल कर्म सर शीव ॥
सुनु स्वामी तोसों कहूँ, अगम द्वीपकी सैल ।
गरीबदास डूबे परे, पुस्तक लादे बैल ॥
कहो स्वामी कहाँ रहोगे, चौदह भुवन बिहंड ।

गरीबदास बीजक कहो, चलत प्राण और पिंड ॥
बोलत रामानन्दजी, सुन कबीर करतार ।
गरीबदास सब रूपमें, तुमही बोलनहार ॥
तुम साहब तुम संत हो, तुम सद्गुरु हम हंस ।
गरीबदास तुम रूप बिनु, और न पूजो वंस ॥
मैं भक्ता मुक्ता भया, किया कर्म्म कुल नाश ।
गरीबदास अविगत मिले, मेटी मनकी प्यास ॥
दोनों ठौर में एक तू, भया एकसे दोय ।
गरीबदास हम कारणे, उतरे मगहर जोय ॥
बोले रामानन्दजी, सुनो कबीर सुजान ।
गरीबदास मुक्ती भयी, उधरे पिंड औ प्रान ॥
गोष्ठी रामानन्दसे, काशी नगर मँझार ।
गरीबदास जिन्द पीरकी, हम पाये दीदार ॥

कबीर वचन

रामानँद गुरुदीक्षा दीजै । गुरुदक्षिणा कुछ हमसे लीजै ॥

रामानन्द वचन

शूद्रके कान न लागौं भाई । तीन लोकमें मोर बड़ाई ॥

जब रामानंदने उत्तर दिया कि, मैं दीक्षा नहीं दूँगा, कबीर साहब चुपचाप चले आये, स्वामीजीका यह नियम था कि, चार घड़ीके तड़के गंगास्नानको जाया करते थे, एकदिन जब स्वामीजी स्नान करने चले तब कबीर साहब एक छोटे बालक-का रूप धरके स्वामीजीके पथमें जा पड़े । स्वामीजी खड़ाऊँ पहने चले आते थे, आपकी खड़ाऊँकी ठोकर कबीर साहबके शिरमें लगी, कबीर साहब रोने लगे । एक लड़केको रोते देखकर स्वामीजी खड़े हो गये, और बालकके शीशपर हाथ धरकर

कहा कि, बच्चा रो मत राम राम कहो। तब कबीर साहब चुप हो गये और कहने लगे गुरुजी राम राम कहूँ ? स्वामीजीने कहा हाँ राम राम कहो। उस समयसे कबीर साहब बराबर राम राम कहने लगे, और गुरु शिष्यका सम्बन्ध बना लिया। जब गुरु चेले का सम्बन्ध बना चुके तब अपने घरमें जाकर सबेरे ही कंठी पहन लिया, और हाथमें तुलसीकी माला ले और मस्तक पर तिलक लगा ठीक वैष्णव मूर्ति धारण किया और राम रामकी धुन लगायी।

जब कबीर साहबने यह रंग बनाया तब आपसे अनेक मनुष्य प्रश्न करते कि, कबीरजी ! आपने यह वैष्णवका वेष कैसे बनाया है ? तब वे सब लोगोंको उत्तर देते कि मैंने रामानंद स्वामीको गुरु बनाया है। यह दशा देखकर और सुनकर कितने ही संन्यासी तथा वैरागियोंने स्वामीजीसे जाकर कहा कि, महाराज ! आपने ऐसी मर्यादा छोड़ दी कि, जोलाहे पुत्रको शिष्य कर लिया।

यह बात सुनकर स्वामीजीने कहा कि,मैंने चेला नहीं किया। तब लोग गये और कबीर साहबको बुला लाये। स्वामीजीका यह नियम था कि, वे मुसलमानका मुख नहीं देखते थे और कबीर साहबको नीरूके घरमें रहनेके कारण लोग मुसलमान कहते थे, इसलिये कबीर साहबको लोगोंने परदाके बाहर खड़ा किया और परदेके भीतरसे स्वामीजी बोले कि ऐ कबीर ! मैंने तुमको अपना चेला कब बनाया ? तब कबीर साहबने उत्तर दिया कि, स्वामीजी जब आप गंगा स्नान-को जाते थे और मैं पथमें पड़ा था आपके खड़ाऊँकी ठोकर मेरे माथेमें लगी और मैं रोने लगा तब आपने कहा राम राम

कह, उस समयसे मैं राम राम कहने लगा। तब स्वामीजीने कहा कि हाँ एक बालक तो था जिसको मेरे खड़ाऊँकी ठोकर लगी और उससे मैंने रामराम कहनेको कहा था। कबीर साहबने कहा कि, गुरुजी वह लड़का मैं ही था। स्वामीजीने कहा कि, क्या इस प्रकार कोई गुरु चेला हो सकता है? तब कबीर साहबने कहा कि, गुरुजी वेदशास्त्रमें रामनामसे बढ़कर और दूसरा क्या है? तब स्वामीने उत्तर दिया कि, सबसे बढ़कर यही है, उससे बढ़कर और कुछ नहीं है। फिर साहबने कहा कि, जो नाम सबसे बढ़कर है सो तो आपने मेरे माथेपर हाथ धरकर दे ही दिया-फिर गुरु और शिष्य किस प्रकार होता है? फिर स्वामीजी बोले कि, जिस बालकसे मैंने राम नाम कहा था वह छोटा था और तू बड़ा जान पड़ता है। तब कबीर साहब वैसाही छोटा बालक बनकर स्वामीकी गुफाके भीतर देख पड़े और गुरुजीके चरणोंपर गिरकर कहने लगे कि, मैं उस समय ऐसाही छोटा था न? यह कौतुक देखकर लोगोंको अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि, देखो यह बालक कैसा छोटा हो गया। उस समय स्वामीजीने कबीर साहब को गले लगा लिया, उसी समयसे कबीर साहब स्वामीजीके शिष्योंके साथ रहने लगे और स्वामीजीके जितने शिष्य थे सब कबीर साहबको अपना गुरु करके मानते और अत्यन्त मर्यादा तथा प्रतिष्ठा किया करते थे और स्वयम् कबीर साहब सबसे नितान्तही नम्रतापूर्वक मिलते थे। यहां तक कि रामानन्द स्वामीके चौदहसौ चौरासी शिष्योंमें कबीर साहब सबके सरदार हो गये थे।

फिर समय समय पर कबीर साहब और रामानन्द स्वामी में ज्ञान और मुक्तिके विषयमें सत्संग हुआ करता था। रामानन्द स्वामी तथा कबीर साहबकी वार्तालाप बहुत है जिसकी इच्छा हो ढूँढ़कर देख ले। कबीर साहबने समय समय पर स्वामीजीको अनेक कौतुक दिखलाये सो भिन्न भिन्न ग्रंथोमें लिखे हुए हैं।

एक बार स्वामीजी मानसिक ध्यान कर रहे थे। मानसमें ही भगवानकी मूर्ति कल्पना कर यथाविधि सब शृंगार किया किन्तु माला पहिराने भूल गये। पीछेसे याद पड़नेपर माला पहिराने लगे किन्तु मुकुटके ऊपरसे माला गलेमें नहीं जाती थी। तब स्वामीजीको बड़ी चिंता हुई कि, अब ठाकुरके गलेमें कैसे माला पहनाऊँ? क्योंकि, यदि मुकुट उतारकर माला पहिनाते हैं तो शृंगार भ्रष्ट होता है और माला नहीं पहनाते हैं तो शृंगार अपूर्ण रहता है। तब कबीर साहब स्वामीजीके मनकी बात जानकर बोले कि, स्वामीजी! मालाकी गाँठ खोलकर ठाकुरको माला पहनाओ।

इस प्रकारके अनेक कौतुकोंको देखकर स्वामीजीकी इच्छा हुई कि, जानना चाहिये यह कबीर कौन है जो ऐसे ऐसे कौतुक किया करता है। इस कारण स्वामीजीने ठाकुरका ध्यान किया तब ध्यानमें यह दिखाई दिया कि, ठाकुरके सिंहासन पर जो ठाकुरकी मूर्ति है उसके शिरके ऊपर कबीर साहबका सिंहासन रक्खा हुआ है। जबसे कबीर साहबकी ऐसी बड़ाई और उनका इतना प्रताप देखा तबसे स्वामी कबीर साहबकी

स्तुति करने लगे। रामानन्द तो कबीर साहबकी प्रशंसा करते और कबीरसाहब अपने गुरुका गुण गाया करते थे।

गोरखको जीतना

उस समय गोरखनाथ योगी जो बड़ा ही बलिष्ठ था और प्रायः रामानन्द स्वामीसे आकर वाद विवाद किया करता था उसका सामना कबीर साहबसे हुआ और कबीर साहबका गोरखनाथके साथ बड़ाही वाद विवाद हुआ और दोनोंही ओरसे अनेक कौतुक दिखलाई दिये जो लोगोंमें प्रसिद्ध हैं। अन्तमें गोरखनाथ परास्त हुआ और अपनी सेली और टोपी कबीर साहबके चरणोंपर चढ़ाकर तथा दंडवत् और प्रणाम करके एक ओरको चला गया।

शाह सिकन्दरलोदीका काशीमें आना और कबीर साहबसे मिलना तथा रामानन्द स्वामीका परलोक–गमन

सम्वत् १५४९ विक्रमीमें बहलोल लोदीका पुत्र सिकन्दर लोदी काशी नगरमें पहुँचा, बादशाहके शरीरमें कुछ दिनोंसे जलनका रोग था, रात दिन उसका शरीर जला करता था। उस रोगसे उसे तनिक भी चैन नहीं मिलता था।

काशीमें पहुँचनेपर बादशाहने सुना कि, वहाँ रामानन्द स्वामी महासिद्ध महात्मा हैं उनके आशीर्वादसे यह रोग दूर हो जायगा। बादशाह दुःखसे कातर हो स्वामी रामानन्दजीके आश्रमको पहुँचा। स्वामीजीने अपने नियमानुसार बादशाहका मुख देखना नहीं चाहा। बादशाहने बहुत विनती की किंतु स्वामीजीने नहीं माना।

चौपाई

आये सिकन्दर शाहसुलताना। है व्याधा बहु भेद न जाना॥

रामानन्दकी सुनी बड़ाई । ताते शाह आप चलि आई ॥
आये मंडप जबै सुलताना । रामानन्द तब देखि रिसाना ॥
बादशाह सम्मुख भये जबहीं । रामानन्द मुख फेरा तबहीं ॥
बार अनेक तिहिते मुख फेरा । ताकी ओर क्रोधकरि हेरा ॥

तब बादशाहने क्रोध करके तलवारसे स्वामी रामानन्दका शिर काट लिया । स्वामीका शिर काटते ही बादशाह विकल होकर वहाँही पृथ्वीपर गिर गया । लोगोंने हाथों हाथ शाहको उठाकर डेरेपर पहुँचाया ।

रामानन्द स्वामीके कत्ल होनेका समाचार शहरमें तुरंत फैल गया । बादशाहके जुल्मको सुनकर धर्मात्मा लोग तो ईश्वरेच्छा समझकर चुप हो रहे किन्तु अधर्मी मिथ्या धर्मके पक्षपाती लोग बढ़बढ़कर बातें करने लगे । कबीर साहबसे द्वेष रखनेवाले मुल्ला काजी और झूठे पण्डितोंने अच्छा दाव विचारा वे बादशाहको क्रोधित कराकर कबीर साहबको भी कत्ल करानेकी चिंतामें लगे ।

उधर बादशाहको भी कुछ चेति हुई तब उसने लोगोंसे पूछा कि यहां और कोई ऐसा नहीं है जिसकी कृपासे मेरे शरीरकी जलन दूर हो जावे । कबीर साहबके विद्वेषी प्रथमसेही घातमें लगे हुए थे । बादशाहके पूछते ही चट उन्होंने उत्तर दिया कि, कबीर नामक रामानन्दका एक शिष्य इस शहरमें बड़ा सिद्ध माना जाता है अगर वह आवे तो शाहकी बीमारी तत्काल अच्छी हो जावे । उन लोगोंकी बात सुनकर बादशाहने आज्ञा दी कि,पता लगावो कबीर साहब इस समय कहाँ विराजमान हैं, मैं इसी समय वहीं जाकर उनका दर्शन करूँगा । शाही नौकरोंने

शहरमें फिरकर उसी समय पता लगाया कि, कबीर साहब रामानंद स्वामीकी मृत्युका समाचार सुनकर स्वामीजीके आश्रमपर विराजमान हैं। बादशाह तुरत फिर उसी स्थानपर पहुँचा। अब कबीर साहबके विद्वेषियोंको निश्चय हो गया कि, आज कबीर साहब अवश्य कत्ल किये जायँगे, क्योंकि बादशाहने गुरु रामानन्दजीको कत्ल किया है इससे कबीर साहब क्रोधमें होंगे। जब गुरुघाती बादशाहको अपने सम्मुख खड़ा देखेंगे तब कबीरसाहब क्रोध किये बिना रह नहीं सकेंगे और जैसे ही कबीर साहब बादशाह पर क्रोध करेंगे वैसे ही स्वामी रामानन्दके समान बादशाह उनको कत्ल करेगा। अज्ञानी लोग ऐसे ही शोचते हुए बादशाहके पीछे पीछे रवाना हुए। मार्गमें न जाने वे क्या क्या मनोराज्य करते जाते थे।

बादशाह जैसे ही कबीर साहबके सम्मुख पहुँचा, दर्शन पाते ही उसके शरीरकी सब जलन शान्त हो गयी। केवल जलन ही नहीं जलनके साथ साथ मिथ्या धर्मद्वेष भी जो धर्मके नामसे अज्ञानियोंने उसके हृदयमें ठसा रखा था एकदम जाता रहा। कबीर साहबके दर्शनने उसका अंतःकरण ऐसा शुद्ध कर दिया कि, उसके समान कट्टर मुसलमान बादशाह मिथ्या धर्माभिमान छोड़कर एकदम दौड़कर कबीर साहबके चरणोंपर गिर पड़ा और स्वामी रामानन्दजीके कत्लकरनेके अपराध पर पश्चात्ताप करके क्षमाका प्रार्थी हुआ। बादशाहके पश्चात्ताप और आधीनताको देखकर कबीर साहबने उसके अपराधको क्षमा करके धैर्य्य दिलाया।

अपने विचारके विरुद्ध बादशाहको कबीर साहबके आधीन होते देखकर विद्वेषियोंके मनमें बड़ी ग्लानि आयी। उन्होंने

अपने हाथसे दाव चूकते देखकर परस्पर विचार करके दूसरा उपाय बलवा करने और कबीर साहबके अनिष्ट करनेका शोचकर रामानन्द स्वामीके शिष्योंके पास गये । वे उस समय गुरुके वियोगसे ऐसे विह्वल हो रहे थे कि, उनकी सारासार विचारिणी बुद्धि उस समय लुप्त हो रही थी । दुष्टोंने जाकर उन्हें समझाया कि, देखो कबीर अपने गुरुघातकसे ही घुल घुलके बातें कर रहा है । जात स्वभाव कभी छूटता है ? फिर तो अपनी जातिके ऊपर गया । मुसलमान मुसलमान एक हो गये । कबीरको गुरुके मृत्युकी भी चिंता नहीं है । तुम लोग तो गुरुका शोक मना रहे हो और वह बादशाहके साथ हँस रहा है । उन दुष्ट बिगाडुओंकी बातने स्वामीजीके शिष्यों-पर प्रभाव डाला, अखाडेके सब शिष्य और साधु एकमत हो-कर कबीर साहबके निकट आकर दुर्वचन बोलने और निन्दा करने लगे । प्रथम तो कबीरसाहब शान्तिसे उनके वचनको सुनते रहे पश्चात् जब उन लोगोंका क्रोध शान्त नहीं हुआ तब कबीर साहबने उन लोगोंसे कहा कि, तुम लोगोंकी श्रद्धा और विश्वासकी यहां तक ही समाप्ति हो गयी । गुरुने क्या तुम्हें यही उपदेश दिया और गुरुके उपदेशका यही परिणाम तुम लोगोंने निकाला है ? गुरुको मृतक समझने वाले तुम लोगोंकी बुद्धि स्थूल देहतक ही समाप्त हुई है । आगे भी तुम्हारे शिष्य लोग स्थूलकी ही पूजामें अपना जीवन व्यतीत करेंगे । उन्हें सत्यपदकी प्राप्ति कदापि नहीं होगी । जब स्थूलके करसे निकलकर सद्गुरुकी शरणको प्राप्त होगे तब सत्यपदको पावोगे । यदि तुम लोगोंको स्वामीके स्थूल शरीर-सेही सम्बन्ध है तो चलो स्वामीका शरीर तुम्हें जीवित दिखा

दूँ । इतना कहकर कबीरसाहब बादशाहको साथ लिये हुए वहां गये जहाँ स्वामी रामानंदका मृतक शरीर पड़ा हुआ था । वहां जाकर सबने देखा कि, स्वामीके दाहिने अङ्गसे खूनके बदले दूध बह रहा है और बाईं ओरसे रक्त निकल रहा है । यह आश्चर्य देखकर सब चकित हो गये । बादशाहने कबीर साहबसे पूछा कि इसका क्या कारण ? लोहूके बदले दूध कैसे निकला?

सिकन्दर वचन

पय औ रुधिर चल्यो गुरु अङ्गा। शाह कहैं यह कौन प्रसङ्गा ॥

कबीर उत्तर

जेहि तन मान्यो शब्द हमारा । तेहिते चले दूधकी धारा ॥
कीन्ह कालहू केर विचारा । आधा अंग रुधिर अनुसारा ॥
अगले जन्म मुक्ति जो होई । अंकुरी जीव कहावै सोई ॥

ज्ञानसागर

रामानन्द स्वामीका पुनर्जीवन

पश्चात् कबीर साहबने एक सफेद चादर मँगाया और स्वामीजीका शिर तथा धड़ इकट्ठा जोड़कर ऊपर वही चादर ओढ़ा दी । फिर बादशाह वगैरह ऐसे लोग जिनका दर्शन करना गुरु अच्छा नहीं समझते थे वे सब लोग अलग हो गये केवल कबीर साहबके सहित सब शिष्य लोग वहां रह गये, तब कबीर साहबने पुकारकर कहा-हे गुरो ! हे स्वामिन् ! ! अब राम राम कहनेका समय हुआ है । देखिये सन्ध्या निकट है । शिष्यवर्ग आपके दर्शनके लिये व्याकुल हो रहे हैं, अब कृपासागर उठिये और सबको दर्शन देकर कृतार्थ कीजिये ।

कबीर साहबके इतना कहते ही रामानन्द स्वामी राम राम कहते उठ बैठे ।

स्वामीजीके उठते ही शिष्य मण्डली आश्चर्य और आनं-दसे कोलाहल करने लग गयी। कितने तो उपकार मानते हुए कबीर साहबके पगपर आकर गिरे कितने ही खड़े २ स्तुति करने लगे। कबीर साहबने सबसे कहा कि, यह सब गुरुकाही प्रताप समझो और गुरुकी ही चरणबंदना करो।

स्वामी रामानन्दजी शिष्योंका कोलाहल और अपने निकट दूध और पानीकी बही हुई धारको देखकर आश्चर्यसे इधर उधर देखने लगे। इतनेमें सबको कबीर साहबकी स्तुति करते देखकर वृत्तांत जाननेके लिये जो आँख मूँदके ध्यान किया तो सब हाल उनपर प्रकट हो गया। फिर तो बड़ी श्रद्धा और भक्तिसे कबीर साहबके चरणोंपर गिरने ही जाते थे कि, कबीर स्वयं झुक गये और विनय करने लगे कि, स्वामिन्! आपके योग्य यह काम नहीं है। आप मर्य्यादा पुरुषोत्तम हो। आपको धर्मसेतुके तोड़नेका काम करना उचित नहीं है। आपको मैंने गुरु माना है। आप गुरुपद परही स्थित रहकर सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। मुझे दास पदमें ही आनंद आता है। कबीर साहबकी ऐसी आधीनता, नम्रता और निरभिमानता देखकर स्वामी सहित सब शिष्य दंग हो गये।

कबीर साहबकी महिमा देखकर वैरियोंके दांत खट्टे हो गये। उधर बादशाहने भी सिंहासन मंगाकर तय्यार रखा जैसे ही कबीर साहब आश्रमसे बाहर हुए वैसेही बादशाहने आपको तख्तपर बैठाया और आप हाथ जोड़के सामने खड़ा होकर स्तुति करना आरम्भ किया।

कहते हैं कि उसी दिनसे रामानंद स्वामीने सब भ्रम और पाखण्डको अलग कर पर्दा वगैरह हटा दिया और सब जातिके

मनुष्योंको अपने सम्मुख आनेकी आज्ञा दे दी। उसी दिन यह कहावत भी प्रसिद्ध हुई।

हरिको भजे सो हरिका होय। जाति पांति पूछै नहिं कोय॥

बादशाहका दोबार कबीर साहबका परचा देखना और उनपर पूर्ण विश्वास करना

यह कौतुक देखकर वैरियोंके दांत खट्टे हो गये और जिह्वा बंद हो गयी तब फिर सब ब्राह्मण और काजी जो कबीरसाहबसे द्वेष रखते थे बादशाहसे फरियाद करने लगे कि, यह कबीर बड़ा काफिर है। इसने जादूसे रामानंद स्वामीको जीवित किया है। और हिंदू तथा मुसलमान दोनों दीनोंका खण्डन करता है और अपनेको परमेश्वर कहता है। प्रत्यक्षमें ही पुकारता फिरता है कि, मैं समस्त संसारका रचयिता हूं और सदैव कुफ्र बकता रहता है। तब बादशाहने कबीर साहबसे पूछा।

शाह सिकंदर बोलता, कह कबीर तू कौन।
गरीबदास गुजरे नहीं, कैसे बैठा मौन॥

उत्तर कबीर साहबका

हमही अलख अल्लाह हैं, कुतुब गोस गुरु पीर।
गरीबदास मालिक धनी, हमरो नाम कबीर॥
मैं कबीर सर्वज्ञ हूँ, सकल हमारी जात।
गरीबदास पिण्ड प्राणमें, युगन युगनसँग साथ॥
शाह सिकंदर देखकर, बहुत भए मिसकीन।
गरीबदास गति शेरकी, थरकी दोनों दीन॥

जब कबीर साहबने सर्व साधारणके सामने बादशाही इजलाशमें अपने परमेश्वर होनेका दावा किया और खुल्लमखुल्ला

कहा कि, मैं समस्त सृष्टिका रचयिता हूं। तब बादशाहने एक गाय मँगवायी और सामने हलाल करवाकर कबीर साहबसे कहा कि, यदि आप परमेश्वर हो तो इस गायको जीवित करो। कबीर साहबने बादशाहसे कहा क्या ईश्वरकी परीक्षा इसीसे होती है तुम्हारे पीरने तुम्हें यही उपदेश किया है? इतना कहकर-

चुटकी तारी थाप दे, गऊ जिलाई बेग।
गरीबदास दूहन लगे, दूध भरी है देग॥

जब शाहने गायको हलाल करवाय और कबीर साहबसे कहा कि, इस गऊको जीवित करो तब कबीरसाहबने उस गायको थापी दिया, चुटकी मारा, उसी समय वह गाय उठ खड़ी हुई और उसका सब घाव तथा दर्द मिट गया। उसका स्तन दूधसे भर गया और उसके दुग्धसे बरतन भर गये जिसको (उस दुग्धको) पीकर लोग अत्यन्त हर्षित हुए। और शाह सिकन्दर तथा उसके सभासद्गण इस कौतुकको देखकर अत्यन्त आश्चर्यान्वित हुए। बादशाहने विशेष श्रद्धा विश्वास किया।

शेखतकीका क्रोध और कबीर साहबकी कसनी

जब शाह सिकन्दरके पीर शेखतकीने देखा कि, अब तो शाह सिकंदरने कबीर साहब पर बहुत विश्वास किया और उनकी अत्यन्त प्रतिष्ठा तथा मर्यादा करता है तब वह जल मरा, कारण यह कि, वह बड़ा ही द्वेषी तथा ईर्षा करनेवाला था। तब उसने बादशाहसे कहा कि ऐ सिकन्दर! आपने जोलाहेसे प्रेम तथा मुझसे वैर किया। तब बादशाहने कहा कि, ऐ गुरुजी! आप तो मेरे पीर हो और वह एक दुरवेश (साधु) है। आपने आज्ञा दिया था कि, गुरु तथा फकीर

स्वयम् परमेश्वर हैं। आप और कबीर एक ही हैं। मैं जलनकी बीमारीसे मर रहा था, मेरे जाते हुए प्राण उसने रख लिये और मैंने घातक रोगसे आरोग्य लाभ किया।

जब बादशाहने ऐसा कहा तब शेखतकी चुपचाप अपने डेरेको चले गये। शेखतकी और बादशाहसे जो जो बातें हुईं उन सबोंका पता लगाकर वैरियोंने अपने मतलबका अवसर पाया। जब शेखतकी अपने डेरेमें बैठे तब वे लोग शेखतकीके पास आकर एकत्रित हुए। और ब्राह्मण तथा मुल्ला सब मिलकर कहने लगे कि, यह कबीर बड़ा काफिर है। यह हिन्दू तथा मुसलमान दोनोंकी निन्दा करता है। हम लोग गुरु तथा देवताके नामपर जो बलिप्रदान करते अथवा कुरबानी चढ़ाते और बकरी मुरगा चढ़ाते हैं उसको देख-कर यह हम लोगोंको कसाई कहता है। इसको समस्त काशीवासी मानते हैं और हमारी कोई बात नहीं पूछता, यदि यह जोलाहा किसी प्रकार मारा जावे तो हमारी छातियोंपर का भारी बोझा टल जावे।

जब शेखतकीने ब्राह्मणों तथा मुसलमानोंसे ऐसा सुना तब अत्यंत प्रसन्न हुए और कहने लगे कि, जोलाहेसे और मुझसे तो पहलेसे ही वैर हो रहा है और अब तुम लोग इस बातपर उद्यत हो तो मैं निश्चय कबीरका वध करूंगा उसे कदापि जीवित न छोडूंगा। मेरा नाम शेखतकी है और मैं बादशाह सिकंदरका पीर हूँ। देखूं तो वह मेरे हाथसे किस प्रकार बचता है। चाहूँ तो नदीमें डुबवाऊं, चाहूं तो अग्निमें दहन कर दूं, चाहूं तो दीवारमें चुन दूं, चाहूं तो टुकड़े टुकड़े काटकर चूरा करूं और यदि चाहूं तो देगमें चुरा डालूं

यदि चाहूं तो तोपके सामने रखकर उड़ाऊं, चाहूं तो कुएँमें बंद कर दूँ और चाहूँ तो हाथीसे चिरवा डालूं।

यह बात सुनकर काजी तथा पण्डितगण अति प्रसन्न हुए और शेखतकीकी स्तुति करने लगे कि, क्यों न हो ? वाहवाह आपसे सब कुछ होगा, अब आप कृपा करें कि, यह जोलाहा किसी प्रकार मारा जावे।

यह बात सुनकर शेखतकी बादशाहके पास चले और जाकर कहा कि, ऐ सुलतान ! तू मेरा कहना मान ले और इस जोलाहेके कत्लकी आज्ञा दे। इसने बड़ा कुफ्र मचाया है, यदि तू इसको मरवा न डालेगा तो मैं तुझकोशाप दूंगा जिससे तेरा सत्यानाश हो जायगा।

यह बात सुनकर शेखतकीको बादशाहने समझाया कि, ऐ पीरजी ! आपने तो मुझसे कई बेर कहा था कि पीर फकीर स्वयम् परमेश्वर हैं तब आप क्योंकर कबीर साहबके प्राणघातके निमित्त आग्रह करते हैं, उन्होंने तो आपकी कोई हानि नहीं की फिर आपने क्यों ऐसा कुफ्र मचाया ?

शाह सिकन्दर वचन

कहो कबीरके मारन ताई। कुछ न हमारो यहां बसाई।
पीर फकीर जात अल्लाहा। मेरो जोर न पहुँचे ताहा ॥
जो वह होते रैयत, तो हम करते जोर।
वह अलमस्त फकीर है, तहां न फावै मोर ॥
तुमहूँ कही समझाय, पीर फकीर अल्लाह।
अब तुम कहते मारने, यह न होय हम पाह ॥
अहो पीरजी तुम वह एका। अपने मनमें करो विवेका।
इन कुछ तुमरो नाहिं बिगारा। काहे तुमने कुफ्र पसारा ॥

बुजुर्ग सब नेकी फरमावे। जोर जुल्म कुछ ताहि न भावे ॥
कहा हमारा कीजिये, छोड़ दीजिये रार।
सुलह कुलह दे बैठिये, अह्वा ओर निहार ॥

शेखतकी वचन

कहे तकी सुलतान सुन, तुझे नहीं कछु दोष।
जो मैं कहूं सो मानिये, कर मेरो सन्तोष ॥

सिकन्दर वचन

कहे सिकन्दर पीर सुन, मेरो शिर बरू लेहु।
फक्कड़ कबीर न मारिये, यह माँगे मोहि देहु ॥
सुन्ते ही तकी क्रोध प्रचारा। शिरसे ताज जमीपर मारा ॥
निपट विकल देखा तेहि भाई। तब हम शाहसे कहा बुझाई ॥

कबीर वचन

कहे कबीर सुनो सुलताना। करो पीरको वचन प्रमाना ॥
पीर कहै सो करो तुम, हमें नहीं कछु त्रास।
हमहूं कहैं सत नाम बल, कहैं कबीर सुदास ॥

सिकन्दर वचन

कहै सिकन्दर सुनो जी पीरा। मन मानै सो करो कबीरा ॥
डारो मार कबीरको, हम नहिं मानैं ऊन।
ताका कबहुं न भला हो, जो करे फक्कड़ खून ॥

शेखतकी वचन

शेखतकी तब कहे रिसाई। है कोई बाँध कबीरा भाई ॥

गंगामें डुबाया जाना

शेखतकी आपै उठै, काजी पण्डित झार।
बाँध बाँध सब कोइ कहे, कोई न करे गोहार ॥
बाँह बाँध पग बाँधके, बोर गंगजल नीर।

नहिं संशय निश्चित होइ, निर्भयदास कबीर ॥
गंगाजलपर भइ आसन, बंद परे खहराय ।
जन कबीर सत नाम बल, निर्भय मंगल गाय ॥
शाह सिकन्दर देखही, औ ठाढ़े सब लोग ।
धन्य कबीर सब कोइ कहै, शेखतकी भा सोग ॥

शेखतकी तब मींजे हाथा । सूखे मुहँ नहिं आवै बाता ।

सिकन्दर वचन

शाह सिकन्दर जोर कर, कहै सुनो तुम पीर ।
किसको बाँध डुबावहू, निर्भयदास कबीर ॥

जब शेखतकीने कबीर साहबको इस प्रकार लोहेकी शृंखलामें जकड़कर गंगामें डाल दिया उस समय जन्जीरें गलकर जलके नीचे बैठ गईं और कबीर साहब जलके ऊपर आसन मारकर बैठे मंगल गा रहे थे ।

यह कौतुक देखकर काशीके लोग धन्य कबीर २ कहने लगे । शाह सिकंदरने अपने पीरसे कहा कि ऐ पीरजी ! आप किसको जलमें डुबाते हैं; कबीर साहब तो अछूते जलके ऊपर बैठे हैं । उस समय शेखतकीका मुँह सूख गया और मुँहसे बात नहीं निकली । तब शेखतकीने कहा मैं जानता हूँ कि कबीरने जादू किया, इस कारण वह नहीं डूबा । यदि अबकी मैं कबीरको पाऊँ तो अग्निमें जला दूँ-यदि वह अग्निसे बच जावेगा तो मैं उसको परमेश्वरका सत्य अंश समझूँगा ।

उसी समय कबीर साहब गंगासे बाहर निकल आये और शाह सिकन्दरके निकट गये । आपको देखते ही शाह उठ खड़ा हुआ और अत्यन्त मान संभ्रम सहित कबीर साहबको अपने बराबर आसन पर बैठाया । यह देखके शेख अत्यन्त

क्रुद्ध हुआ, उसके नेत्र रक्तवर्ण हो गये। उसने कहा ऐ कबीर! तूने जादू किया इसी कारण जलमें नहीं डूबे। तब कबीर साहबने कहा कि ऐ शेखजी! जैसे आप हो वैसा मुझको मत समझो, मैं जादू क्या जानूँ; मुझको तो केवल साहब नामका आधार है।

आगमें जलाया जाना

तब शेखने कहा अब आगसे बचो तब मैं आप पर विश्वास करूंगा। तब कबीर साहबने कहा कि जो आपकी इच्छा हो सो करो, अब आगमें जलाओ। तब शेखजीने बहुत सा काष्ठ मँगवाया और कबीर साहबका हाथ पांव बांधकर आगमें डाल दिया। उसी समय वह अग्नि बुझ गयी और बिलकुल ठंढी हो गयी।

तलवारसे काटा जाना

फिर शाहसिकन्दरने अपने पीरको बहुत समझाया कि ऐ पीरजी! अब कबीर साहबसे आप वैर छोड़ दीजिये, पर शेखजीने इस बातको ग्रहण नहीं किया। फिर शेखजी तलवार लेकर अपने हाथसे काटने लगे-कबीर साहबकी शरीरसे तलवार इस प्रकार बाहर निकल जाती थी कि जैसे हवा, अथवा आकाशसे कृपाण निकलकर पार हो जाय। कबीर साहबके शरीर पर तनिक चिह्न भी नहीं हुआ-और न कोई रोम मैला हुआ। शेखजी मारते-मारते थक गये।

देगमें चुराया जाना

तब शेखजीने कबीर साहबको एक देगमें बंद करके और देगका मुँह भली भाँति बन्द करके अग्निपर धर दिया और स्वयं खड़ा हो देगके नीचे अग्नि जलवाने लगा। उस समय

बादशाहने समाचार भेजा कि पीरजी ! आप किसको आंच दिलाते हैं; कबीर साहब तो मेरे पास बैठे हैं । तब शेखने देगका मुँह खोला तो उसको खाली पाया ।

तोपपर उड़ाया जाना

फिर शेखने कबीर साहबको तोपपर बांधकर उड़ाया, तोपमें जल भर गया ।

हाथीसे चिराया जाना

फिर हाथीसे चिरवाया और वह हाथी चीख मारकर भाग गया ।

कुएँमें डुबाया जाना

फिर शेखने आपको कुएँमें डाल दिया और उस कुएँको ईंट तथा पत्थरोंसे भर रहे थे और कबीर साहब शाह सिकन्दरके समीप जा बैठे । तब शाह सिकन्दरने अपने पीरके पास समाचार भेजा कि पीरजी ! आप किसको कुएँमें बंद कर रहे हो कबीर साहब तो मेरे निकट बैठे हुए हैं ।

जब शाहने समाचार भेजा तब शेखतकी शाहके पास आया और वहां कबीर साहबको बैठा देखकर लज्जित हुआ ।

कमालका प्रकट होना

तब शाह सिकन्दरने कबीर साहबका बड़ा संमान किया और आपको अपने साथ लेकर इलाहाबाद गया । एक दिन गंगातटपर बादशाह, कबीर साहब और शेख बैठे थे, उस समय गंगामें एक बालककी लाश बही जाती थी । शेखने कहा कि ऐ कबीर साहब ! गंगामें जो मुरदा बहा जाता है उसको आप जीवित करो । तब कबीर साहबने कहा कि ऐ मुर्दे ! "उठ कुदरतके कमालसे" तब वह उठ खड़ा हुआ ।

जब कबीर साहबने उस मुरदाको जीवित किया, तब बादशाह और शेख एकदम आश्चर्यमें आकर बोल उठे कि, वाह आपने तो बड़ा कमाल किया। कबीर साहबने कहा अच्छा लो आजसे इस लड़केका नाम भी कमाल हुआ। यह जगत्में मेरा पुत्र कहलाकर प्रसिद्ध होगा। उसी दिनसे कमाल हुआ और वह कबीरका पुत्र कमाल कहलाता है।

इस प्रकार शेखने कबीर साहबसे बावन लीलाएँ देखी तब बादशाह और शेखजी दोनों कर जोड़कर खड़े हुए और निवेदन करने लगे कि, ऐ कबीर साहब! आप परमेश्वर हो और आपही खुदा हो और आपही हमारे गुरु तथा पीर हो। हमारा सब अपराध क्षमा करो। तब कबीर साहबने कहा कि; आपका कुछ दोष नहीं है।

साखी-कंध कुल्हाड अघाल, मस्तक दीना भार।
गरीब शाह यों कहे, बखशो अबकी बार॥
तहँ सतगुरु लौलीन हो, परचा अबकी बार।
गरीबदास शाह यों कहे, अल्ला देव दीदार॥
सुनो काशीके पंडितो, काजी मुल्ला पीर।
गरीबदास उस चरण गहि, अल्ला अलख कबीर॥
यह कबीर अल्लाह है, उतरा काशी धाम।
गरीब शाह यों कहे, झगड़ मुए बेकाम॥
क्यों बिगड़ी डगरी दुनियां, कहत कबीर समूल।
गरीबदास उस वृक्षके, अनंत कोटि रँगफूल॥
ऐ कबीर तुम अल्ला हो, पलक बीच परवाह।
गरीबदास कर जोरके, ऐसे कहता शाह॥

तुम दयालु दरवेश हो, घर आये नररूप।
गरीबदास शाह यों कहै, बादशाह जहाना भूप॥
उठे कबीर करम किया, बरसै फूल अकाश।
गरीबदास सेली चले, चँवर करे रैदास॥
तीन एक चंडोलमें, रैदास शाह कबीर।
गरीबदास चौरा करें, बादशाह बलवीर॥
मुकुट मनोहर शीशधर, चढ़े फील कबीर।
गरीबदास उस पुरीमें, कोई न धरता धीर॥

कबीर साहबके भण्डारेका वृत्तान्त

जब ब्राह्मणोंने देखा कि, अब तो कबीर साहबका माहात्म्य और भी अधिक हुआ और हम लोगोंकी कोई युक्ति नहीं चली तब आपसमें सलाह करके यह निश्चय किया कि, अब ऐसी युक्ती करनी चाहिये जिसमें कबीर साहबकी प्रतिष्ठा भंग हो जावे। तब उन लोगोंने बहुत ब्राह्मणोंको नियत किया कि, तुम लोग देश देशान्तरोंमें जाकर समाचार दो कि, अमुक दिवस कबीर साहबके घर भण्डारा है, सब संत महंत कृपा करके आवे। तब उन ब्राह्मणोंने डाढ़ी मूँछ मुँडवाय वैष्णव वेष बनाया और दो दो चेले कर बाहर हुए। ये ब्राह्मण सब स्थानोंमें दौड़ गये और समस्त सन्त महन्तको समाचार पहुँचाया कि अमुक दिवस कबीर साहबके यहां भंडारा है।

यह बात सुनकर सन्त महंत उस दिवस कबीर साहब की कुटीपर आये बड़ी भीड़ हुई। कबीर साहबने जब ब्राह्मणोंकी धूर्तता जान ली तब अपना एकतारा लेकर वनका मार्ग लिया।

भोजनका समय निकट होता जाता है। अनगिन्ती साधु-

ओंकी भीड़ कबीर साहबकी पर्णकुटीको घेरे खड़ी है किन्तु कबीर साहबका पता नहीं है। कबीर साहबके न मिलनेसे भेषमें कोलाहल होने लगा। जिनके मनमें जो आया वही बकने लगा। यह हाल देखकर विद्वेषियोंकी बन आयी, सब अपने मनही मन अपनी सफलता जान प्रसन्न होने लगे। इतनेमें रसद बाटनेके समय नौ लाख बोरे खानेकी वस्तुओंके भर-कर केशव नाम वनिजारा आया और भण्डारा आरंभ हो गया। सब साधुओंकी सेवा तथा पहुनाई आरंभ हो गयी। किसीको यह जान न पड़ा कि, ये कौन लोग हैं तथा कहांसे आये हैं जो भण्डारा कर रहे हैं। पन्द्रह दिन पर्यंत बराबर भण्डारा होता रहा, इसके उपरान्त समस्त सन्त महन्तको भेंट तथा वस्त्रादि देकर केशवने बिदा किया और सब धन्य कबीर धन्य कबीर और जय जय कबीर कहते हुए बिदा हुए और विद्वेषी ब्राह्मण सब मुँह पसारकर रह गये, कुछ न बना।

लक्ष्मीजीका कबीर साहबको लुभाने आना

विष्णुने लक्ष्मीजीसे कहा कि तीनों लोकमें तो ऐसा कोई नहीं है जो तुम्हारे नयनबाणद्वारा आहत न हुआ हो और तुम्हारी मोहिनी मूर्ति और तुम्हारी कटाक्षद्वारा आत्म विस्मृति न कर गया हो, पर जब कबीर साहबपर अपना जादू डालोगी तब मैं तुम्हारे मन-मोहन मंत्रकी प्रशंसा करूंगा, तुम काशीजीको जाओ और कबीर साहबको लुभाओ, तब लक्ष्मीजी रूप बदलकर काशीमें कबीर साहबके पास अत्यंत हावभावके साथ आयीं और कबीर साहब-के सामने खड़ी होकर कहने लगीं कि, ऐ महाराज! आप मुझको अपने घरमें रक्खो, मैं आपके साथ निवास किया चाह-ती हूँ। तब कबीर साहबने उसकी ओर दृष्टिपात भी नहीं किया

और कहा कि, ऐ लक्ष्मी ! तू मेरे समीप क्यों आयी है ? क्या स्वर्गलोक उजाड़ पड़ा है जो तू मेरे पास यहां आयी है, मुझे तेरी कामना नहीं है, तू यहांसे शीघ्र चली जा तब लक्ष्मी निराश होकर वैकुण्ठको पलट गयी ।

फिर विष्णु आये और कहने लगे कि, कबीर साहब ! आप जो कुछ माँगो राजकाज धनसम्पत्ति सो सब मैं तुमको दूँ । तब कबीर साहबने कहा कि, इन सब वस्तुओंकी तो मुझको कामना नहीं है, यदि तुम्हारे पास वह नाम हो कि, जिससे आवागमन मिट जावे तो वह मुझको दो । विष्णुने कहा कि यह तो मेरे अधिकारसे बाहर है और धन्य कबीर धन्य कबीर कहते हुए वैकुण्ठको पलट गये ।

यह सब कौतुक जब सिकन्दरशाह आप देख चुका तब उसने कबीर साहबको उत्तम वस्त्र पहनाये और जड़ाऊ मुकुट शीशपर रक्खा और आपको हाथीके ऊपर सवार करा और सत्यगुरुके पीछे आप खड़ा हुआ चँवर करता तथा सत्य गुरुकी प्रशंसा करता हुआ अपने साथ ले चला। यह लीला देखकर समस्त काशीके लोग चकित हो रहे और ब्राह्मण और मुल्ला काजी इत्यादि सब लज्जित होकर रह गये । शाहसिकन्दर कबीर साहबको दिल्ली ले गया ।

इति श्रीकबीर चरित्रबोध प्रथम भाग समाप्त

कबीर चरित्र

द्वितीय भाग

★

आश्चर्य चरित्रोंका वर्णन

★

सम्मनभक्तकी कथा

एक बार कई संतोंको साथ लिये हुए कबीर साहब सम्मन भक्तके घर गये। संमनकी स्त्रीका नाम नेकी और पुत्रका नाम शिव था। जिस दिन कबीर साहब सम्मन भक्तके घर गये उस दिन खानेकी कुछ भी सामग्री नहीं थी। कई घरोंमें उधार माँगने पर भी निराश होकर सम्मन अपने पुत्रके साथ किसीके घरमें चोरी करनेका विचार करके बाहर हुआ और एक साहूकारके घरमें जाकर सेंधमार कर शिव अन्दर गया वहाँसे आवश्यकतानुसार खानेकी सामग्री लेकर बाहर खड़े पिताको दिया। जब शिव सेंधसे बाहर निकलने लगा। तब महाजनने भीतरसे पांव पकड़ लिया। तब शिवने अपने पितासे कहा कि, मैं तो पकड़ा गया अब मेरी हुरमत जाती रहेगी, इस कारण तू मेरा शिर काट ले-जिसमें मैं पहिचाना न जा सकूँ। तब सम्मनने अपने पुत्रका शिर काट लिया और आटा सीधा और अपने पुत्रका शिर लेकर अपने घर आया। शिवका शव वहांही पड़ा रहा। सम्मनने अपने बेटेके शीशको एक ताकपर रख दिया और आटा सीधा अपनी स्त्रीको देकर कहा कि, भोजन तय्यार कर रोना नहीं। यदि रोवोगी और दुःख प्रकट करोगी तो साधु भोजन नहीं करेंगे। तब नेकीने तुरंत भोजन तय्यार किया और सम्मन उन तीनों साधुओंके निमित्त भोजन ले गया तीन पत्तल कबीर साहबके सामने

रख दिये और कहा कि, महाराज ! आप तीनों साधु भोजन कीजिये। तब कबीर साहबने तीन पत्तलके छः टुकड़े किये और छः भाग करके कहा सम्मन अब तुम अपने पुत्रको बुलाओ कि, हम छः मनुष्य एक साथ भोजन करें। सम्मनने कहा कि, महाराज ! हम तीनों पीछे आवेंगे आप तीनों संत पहले भोजन कर लीजिये । कबीर साहबने कहा कि ऐसा कदापि न होगा, हम सबके सब एकत्रित भोजन करेंगे। जब सम्मन अनेक प्रकारका बहाना करने लगे, तब कबीर साहबने कहा कि, शिव तू कहाँ है ? तब शिवके शीशसे शब्द निकला कि, महाराज ! मैं किस प्रकार आऊं ? मेरा तो शीश कटा हुआ ताकपर धरा है और धड़ कहीं पड़ा है, तब कबीर साहबने कहा कि, शिर तो चोर डाकू और ठग इत्यादिके कटते हैं। भक्तोंके शीश नहीं कटते तू चला आ। जब इतना कबीर साहबने कहा तब शिवका शव आकर मस्तकसे मिल गया। और वह उसी समय जैसा था वैसा जीवित होकर प्रसन्नतापूर्वक कबीर साहबके पास आ बैठा और छः मनुष्योंने भोजन किया।

कबीर साहबका भैंसेसे वेद पाठ कराना

एक बार कुछ वैरागी जो रामानन्दके चेले थे कबीर साहबके सहित अपने गुरुद्वारे दक्षिण देश तोतादरीको चले। एक भैंसा भी अपने साथ ले लिया। उसके ऊपर सब साधुओंने अपनी गुदड़ी तथा कठारी इत्यादि लाद ली । चलते चलते अपने गुरुद्वारे जो स्थान राजानुज स्वामीका है वहां पहुँच गये। रामानुज स्वामीके सम्प्रदायी आचारी हैं वे स्नानादिका बहुत ध्यान रखते हैं और अपने हाथसे परदा करके भोजन बनाते और भोजन करते हैं। यदि किसी शूद्रकी छाया भोजन

पर पड़ जावे तो वे उसको नहीं खाते हैं उन लोगोंमें जातीय अभिमान भी विशेष है। प्रायः वे जातिके ब्राह्मण होते हैं। उन आचार्योंने कबीर साहबको अपने बराबरमें बैठाकर भोजन कराना उचित न समझा इस कारण उन लोगोंने एक बहाना निकाला और कहा कि, जो कोई वेदकी ऋचा पढ़े वह हमारे साथ बैठकर भोजन करे जिसको वेद पाठ न आवें वह हमारी पंक्तिमें न बैठे। सबोंने वेदका कोई न कोई विशेष भाग पढ़ पढ़-कर सुना दिया। उन लोगोंका मुख्य अभिप्राय यही था कि, कबीर साहब वेदपाठी नहीं हैं, इस बहानेसे हम अपनी पंक्तिमें कबीर साहबको न बैठावेंगे। जब कबीर साहबकी पारी आई तब कबीर साहबने भैंसेके शीशपर हाथधर दिया और कहा कि, ऐ भैंसे! तू वेद पढ़। तब वह भैंसा अत्यन्त स्वच्छता और स्वरके साथ वेद पढ़ने लगा। जब उस भैंसेको वेद पढ़ते देखा तब समस्त आचारी कबीर साहबके चरणोंपर गिरे और अपना अपराध क्षमा करवाया।

रविदासका झगड़ा

कबीर साहब तथा रविदासजीसे सत्संग हुआ। तब रविदा-सजीका पक्षपात करनेके निमित्त देवी तथा ब्रह्मा विष्णु शिव सब आये, कबीरसाहबने सबको परास्त कर दिया।

जहांगस्तका वृत्तान्त

जहांगस्तशाह एक सिद्ध साधु था, और वह समस्त भारत की सैर किया करता था। उससे साधुओंने पूछा कि, तुमने कभी कबीरसाहबका दर्शन किया? तब जहांगस्तशाह काशीको चले। कबीर साहबने जान लिया कि, जहांगस्त शाह आते हैं। तब कबीर साहबने एक सूवर मँगाकर अपने द्वारपर

बँधवा दिया। जब जहांगस्तने दूरसे कबीर साहबकी कुटीको देखा और द्वारपर सूवर बँधा हुआ पाया तब बड़े क्रुद्ध हुए और झल्लाकर पलट पड़े। तब कबीर साहबने पुकारा कि, ऐ जहांगस्त! क्यों पलटे जाते हो? मेरे समीप आओ। इतनी बात सुनकर जहांगस्तने मालूम कर लिया कि, कबीर साहबने जान लिया और मुझको पहचान लिया। तब उनके मनमें निश्चय हो गया कि, कबीर साहब कोई सिद्ध पुरुष हैं। वहां से पलटे और कबीर साहबके पास आकर कहने लगे कि, मैंने सुना था कि, कबीर साहब बड़े सिद्ध हैं इस कारण मैं आपसे भेंटके निमित्त आया था। आपने द्वारपर हराम बाँध रक्खा है, यह कैसी बात है? यह बात सुनकर कबीर साहब ने उत्तर दिया कि, ऐ जहांगस्तशाह! मैंने तो हरामको अपने घरके बाहर बाँधा है आपने हारामको अपने भीतर बाँध रक्खा है। फिर बाहर निकाल देना अच्छा कि,भीतर बाँध रखना अच्छा।कारण यह कि, क्रोध अहंकार मद आदि सब हराम हैं सो तुम्हारे भीतर हैं। जिसको तुमने हराम समझा है वह हराम नहीं बरन् क्रोध हराम है। इस शिक्षासे जहांगस्तशाह प्रसन्न हो गये संध्याका समय निकट आया तब जहांगस्तशाहने इच्छा प्रकट की कि, मैं मक्कामें निमाज पढ़ा चाहता हूँ। कबीर साहबने एक पलमें मक्कामें प्रवेशित करा दिया। यहां फिर सिद्धोंके बीच जहांगस्तसे जाया न जावे तब कबीर साहबने उनको वहां भी पहुँचाया, तब जहांगस्त अधीन हुए।

रामदासको विष्णुदर्शन

रामदास नामक धनाढ्य एक ब्राह्मण जागीरदार था।वह दक्षिण देश नर्मदा नदीके किनारेपर रहता था। एकबार कबीर साहब

उसके गाँवके निकट भ्रमण करते हुए पहुँचे और विश्राम करनेके लिए नदी तटपर बैठे। जब रामदास स्नान करनेके निमित्त गया तो वहां कबीर साहबको बैठे देखा, तब उसने निवेदन किया कि, महाराज ! आप समर्थ हो मुझको विष्णु दर्शन करवाओ। तब कबीर साहबने उससे कहा कि कल दोपहरको विष्णु तुम्हारे घरपर जावेंगे। यह बात सुनकर राम दासको निश्चय हुआ कि, कबीर साहबका वचन हुआ है। अब विष्णु निश्चय कल मेरे घर आवेंगे तब उसने अपने घर जाकर बड़ी तैयारी की दूसरे दिवस घरको भली भाँति स्वच्छ और पवित्र कराया बिछौने इत्यादि बिछवाये और नाना प्रकारके स्वादिष्ट भोजन पकवाये। और सिंहासन इत्यादि रखकर प्रतीक्षा करते हुए बैठे कि, अब विष्णु महाराज आया चाहते हैं। कुछ कालके उपरान्त देखा तो एक भैंसा कीचड़से लत-पत आया और उस फर्शके ऊपर बैठ गया। तब रामदासको अत्यन्त क्रोध आया कि, इस भैंसेने फर्शको बिगाड़ दिया। सोंटा लेकर इस भैंसेको मार भगाया जब दिवस व्यतीत हो गया कोई नहीं आया। तब वह ब्राह्मण निराश हुआ। जब प्रातःकाल वह नदी स्नानके निमित्त गया तब फिर कबीर साहबको उसी स्थान पर बैठा देखकर कहा कि, महाराज ! मुझको विष्णु महाराजका दर्शन तो न हुआ आपकी बातें मिथ्या कैसे हुईं। तब कबीर साहबने कहा कि, ऐ रामदास ! मेरे कथनानुसार विष्णु तुम्हारे घर गये परन्तु तुमने अच्छी विष्णुपूजा की, सोंटे मारकर भगा दिया। यह बात सुनकर वह ब्राह्मण लज्जित तथा दुःखी हुआ। कारण यह कि, विष्णुका भक्त था इससे जान लिया कि, विष्णु भैंसाके सरूपमें थे।

कमालीका प्रकट होना

कमालको कबीर साहबने मुरदासे जीवित किया तब शेखतकीने कहा कि, मैं इस लीलाको नहीं मानता कारण यह कि, यह लड़का सकते में था इस कारण जीवित हो गया—मेरी बेटी आठ दिवसोंसे कब्रमें मरी पड़ी है यदि आप उसको जीवित करें तब मुझे विश्वास हो। कबीर साहब सिकन्दर शाह और शेखतकी सहित उस लड़कीकी कब्रपर गये। वहां पहुँचकर कबीर साहबने पुकारा 'उठ शेखतकीकी बेटी' वह नहीं उठी; फिर कहा 'उठ शेखतकीकी बेटी, फिर भी वह न उठी तब तीसरी बेर कबीर साहबने कहा उठ 'कबीरकी बेटी' उस समय वह लड़की जीवित होकर कब्रसे निकल पड़ी। शेखतकी उसके जीवित होनेसे उसका हाथ पकड़कर अपने घरको ले चले; तब उस लड़कीने कहा कि, मैं तुम्हारे नामसे जीवित नहीं हुई हूँ—वरन् कबीर साहबके नामसे उठी हूं। अब मैं कबीर साहबकी बेटी हूं अब मैं इनके साथ रहा करूँगी, तुम्हारे गृहपर न जाऊँगी। वही लड़की कबीर साहबकी बेटी प्रसिद्ध हुई और उसका हृदय सत्यगुरूकी कृपासे प्रकाशित हो गया।

तेरह गाड़ी कागजोंका लिख जाना

बादशाहने तेरह गाड़ी सादे पुस्तकोंकी कबीर साहबके पास भेजी और कहा कि, मैं तब विश्वास करूंगा जब आप उन समस्त पुस्तकोंको ढाई दिवसमें लिख देवें। जब वे पुस्तकें कबीर साहबके पास पहुँची तब कबीर साहबने अपनी लाठी उन सब पुस्तकोंपर फेरकर कहा कि, इन लिखी हुई किताबोंपर क्या लिखें ? बादशाहको यह लीला देखकर विश्वास हो गया कि, कबीर साहबने उन ग्रंथोंको दिल्लीमें गड़वा दिया।

ग्रन्थोंमें लिखा है कि, जब मुक्तामणि साहबका समय आवेगा और उनका झण्डा दिल्ली नगरीमें गड़ेगा तब वे समस्त पुस्तकें पृथ्वीसे बहिर्गत होंगी । सो मुक्तामणि साहबका अवतार वंशकी तेरहवीं पीढीमें होगा । तब वंशगुरुगद्दी दिल्लीमें स्थिर होगी ।

सर्वानन्दका वृत्तान्त

सर्वानन्द ब्राह्मण भारतवर्षके समस्त नगरोंमें जाकर और पंडितोंके साथ शास्त्रार्थ करके विजयी हुआ था । कोई पंडित जब उसके सामने न ठहरा तब वह अपने घर आया और अपनी मातासे कहा कि, हे मातः ! अब तुम मेरा नाम सर्वजित् रक्खो और मेरे माथे पर विजय तिलक कर दो । क्योंकि, अब मेरा सामना करनेको कोई पंडित नहीं रहा । तब माताने कहा कि, ऐ पुत्र ! तूने काशीमें जाकर कबीर साहबके साथ भी वाद-विवाद और सामना किया था ? तब उसने कहा कि, नहीं । तब माताने कहा कि, जबलों तू कबीर साहबपर विजयी न होगा तबलों तेरा नाम सर्वजित् नहीं रक्खूंगी । तब सर्वानन्दने कहा कि, कबीर कैसा बड़ा पंडित है । मैं अब चलकर उसके साथ वाद विवाद करता हूं । और बहुतसे ग्रन्थ और वेद इत्यादि लादकर काशीमें कबीर साहबके पास पहुँचे । कबीर साहबने कितनी लीलाएँ दिखलाईं तो भी सर्वानन्दको निश्चय नहीं हुआ । अन्तमें सर्वानन्द कबीर साहबके साथ वाद विवाद करने पर उद्यत हुए । सर्वानन्दने श्लोकोंकी झड़ी लगा दी; यद्यपि कबीर साहब समझाते पर वह न मानते । बात बात पर श्लोक, प्रमाण, तथा पुस्तकोंकी साक्षी देते । तब कबीर साहबने देखा कि, इसके पीछे तो घमंडका भयानक रोग लगा है, यह

कदापि न हटेगा और न कहना मानेगा। तब कबीर साहबने कहा कि, ऐ सर्वानन्द अब तुम्हारी क्या कामना है और किस बातके इच्छुक हो ? तब सर्वानंदने कहा कि, मेरी विजय लिख दो तब कबीर साहबने कहा कि, मैं तो लिखना नहीं जानता तुम स्वयम् लिख लो तब सर्वानन्दने लिख लिया कि, कबीर साहब हार गये और सर्वानन्द जीत गये। भली भांति लिखकर तथा वह विजय पत्र कबीर साहब तथा अन्यान्य लोगोंको दिखलाकर अपने घरको चले और आनकर अपनी मातासे कहा कि, माता मैं कबीर साहबसे वादविवाद करके उनपर विजय पा गया हूँ। तब माताने कहा कि, ऐ पुत्र ! मुझको तो विश्वास नहीं होता कि, तुम कबीर साहबपर विजयी हुए हो। तब सर्वानन्दने कहा कि, मैं विजयपत्र लिखवा लाया हूँ तू देख ले। तब माताने कहा कि कागज निकालो। जब कागज निकाला और पढ़ा तो उसमें लिखा था कि सर्वानन्द परास्त हो गए और कबीर साहब विजयी हुए। यह लिखा देखकर आश्चर्यान्वित हुए कि, यह तो मेराही लिखा था यह उलटा कैसे हुवा। कदाचित् मैं लिखनेमें भूल गया और मातासे कहा कि मातः ! मैं लिखनेके समय भूल गया अब पुनः जाता हूं और अत्यंत सावधानीपूर्वक ले आऊंगा। तब सर्वानन्द पुनः कबीर साहबके पास आये और कहा कि, मैं लिखनेमें भूल गया अबकी बेर सँभाल कर लिखूँगा। तब कबीर साहबने कहा कि भली प्रकार सँभालकर लिखो तब फिर सर्वानन्दने उसी विषयको भली प्रकार संभालकर लिखा और अपनी माताके समीप आकर प्रकट किया कि अब मैं सँभाल कर लिख लाया हूं। जब कागज खोला तो वही पूर्वकी बात लिखी पाई कि, कबीर साहब विजयी हुए तथा सर्वानन्द

परास्त हुए। जब इस प्रकार तीन बेर हुआ तब सर्वानन्दको निश्चय हो गया कि, निस्सन्देह कबीर साहब ईश्वर है और चरणों-पर आन पड़े और शिष्य हो गए। कबीर साहब तथा सर्वान-न्दका विवरण भिन्न भिन्न स्थानोंमें लिखा है।

चौरासी सिद्धोंका परास्त होना

एक स्थानपर नव नाथ चौरासी सिद्ध कबीर साहब तथा नानक साहब सहित एकत्रित थे। उस समय एक महाजन जो नानक साहबका परिचयी अथवा सेवक था जा पहुँचा, तब उसने विचारा कि, सन्त गुरुके समीप विना कुछ लिए जाना उचित नहीं कुछ भेंटके निमित्त ले चलना उचित है। तब उसने अपनी जेबमें हाथ मारा पर कुछ न पाया, परन्तु एक तिल उसके वस्त्रोंमें मिला। तब उसने उसी तिलको नानक शाहके समक्ष रक्खा-तब नानक शाहने कबीर साहबसे कहा कि, मैं इस तिलको इतने साधुओंमें किस प्रकार बांटूं-तब कबीर साहबने कहा कि, इस तिलको जलमें घोटकर सकल साधुओंमें बांटो तब नानक शाहने कहा कि, यहां तो जल भी नहीं है, किस प्रकार घोटें। यह बल आप ही में है इसको बांटिये। तब उस स्थानपर एक शुष्क नदी थी, उसको कबीर साहबने जारी किया और उसमेंसे जल भरकर उस तिलको घोटा और सब साधुओंको पिलाया और उसके पीनेसे अत्यन्त आनंद आया और उन्होंने कहा कि, कबीरजी मांगो जो मांगो सो हम लोग आपको देंगे। तब कबीर साहबने कहा कि, तुम लोग तो दरिद्री जान पड़ते हो मैं तुमसे क्या मांगू और तुम मुझको क्या देंगे ? तब उन लोगोंने कहा कि जो कुछ तुम मांगोगे सो हम तुमको देंगे। तब कबीर साहबने कहा पांच पैसेभर दरिद्रता

मुझको दो। तब नवनाथ चौरासी सिद्धोंने परामर्श किया कि, यह गुण तो हम लोगोंमें नहीं कारण यह कि, हम लोगोंको तो अपनी सिद्धि और जप तपका घमंड है। चलो ब्रह्मासे पांच पैसे-भर दरिद्रता मांगें। तब ब्रह्मलोकमें गए और पांच पैसेभर दरिद्रता ब्रह्मासे मांगी। ब्रह्माने शोच समझकर उत्तर दिया और कहा कि मेरे पास दरिद्रता कहां मैं तो इस बातका अहंकार करता हूं कि, मैं सृष्टिका उत्पन्न करता हूं यह अहंकार मुझमें है। तब नवनाथ और सब सिद्ध कैलासको शिवजीके पास गए और वही प्रश्न किया तब शिवजीने भी वही उत्तर दिया कि, मुझमें दरिद्रता तो नहीं, कारण यह कि, मुझमें तो यह अहंकार है कि, मैं नष्ट करता हूं तब सब ओर ढूंढ़ते ढूंढ़ते थके परन्तु दरिद्रताको कहीं न पाया। अन्तमें विष्णुके पास गए और दरिद्रताके निमित्त प्रार्थना किया तब विष्णुने कहा कि, ऐ सिद्ध साधु पांच पैसेभर दरिद्रता अथवा जो कुछ दरिद्रता है सो सब कुछ उसीके पास है जिसने तुमको भेजा है। मेरे पास तो केवल तीन पैसेभर दरिद्रता है, जिसके कारण मैं समस्त संसारका रचयिता कहलाता हूं, दरिद्रताके समूह तो स्वयम् कबीर साहब हैं, और दूसरा कोई नहीं। तब समस्त सिद्ध साधु कबीर साहबके पास पलट आए-और आपको दण्डवत् तथा प्रणाम करके प्रदक्षिणा किया। और समस्त वृत्तांत प्रकट किया। तब कबीर साहबने कहा कि, क्या मैंने तुमसे इतः पूर्व ही न कहा था कि, तुम लोग तो दरिद्री हो तुमसे क्या मांगूं।

नानक बोध

कबीर साहब नानक साहबके निकट पञ्जाब देशमें आए तब नानक शाह अत्यंत आवभगत तथा सन्मान सहित उनसे

मिले और कहा कि, जिस सेवाके निमित्त आप आज्ञा देवें उसको मैं करूँ। तब कबीर साहबने आज्ञा दिया कि, पाँच दिवसकी उत्पन्न हुई बछियाके स्तनसे दूध दुहकर मेरा कमण्डलु भर दो–तब नानक शाहने कहा कि, पांच दिवसोंकी उत्पन्न हुई बछिया कैसे दूध दे सकती है ? तब कबीर साहबने कहा कि, यही मेरी सेवा है तुम करो। तब नानकशाहने ढूँढ़ ढाँढ़ कर पाँच दिनसोंकी उत्पन्न हुई बछियाको उपस्थित किया, जब दूध लेनेको उसके समीप गए, तब वह बछिया लात चलाकर भाग गई। तब नानकशाहसे कबीर साहबने कहा कि, अब तुम जाओ और मेरे नामसे उस बछियासे दूध माँगो–और कमण्डलु उसके स्तनके नीचे रख दो। नानकशाहने बछिया-के स्तनके नीचे कमण्डलु रखकर कबीर साहबके नामसे दूध माँगा और बछियाके स्तनसे आपसे आप इतना दूध निकला कि वह कमण्डलु भर गया। तब कबीर साहबने नानक साहबसे कहा कि, ऐ नानकजी ! आपने वंदना तो बहुत की परन्तु अभीलों आपकी कमाईमें त्रुटि है। और आपका पंथ चलेगा और बहुत लोग आपकी आज्ञामें चलेंगे और भविष्यत्‌में ये रंग ढँग होंगे। और नानकशाहसे कबीर साहबने बहुत कुछ कहा–और इसी ग्रन्थमें नानक शाहके विषयमें भविष्य वाणी है। और नानक धर्म्मका विवरण किया जो भविष्यत्‌में होनेवाला है। और इसी स्थानपर यह साखी है। "तिल घोंटतारे लगे" इत्यादि है और इसी स्थान-पर यह है।

ऐसो दाता सत्य कबीर, सूखी नदी बहावे नीर।
भूखेको खिलावै खीर, नंगेको पहनावे चीर॥

इत्यादि महाराजा श्रीरामचन्द्रजीको कबीर साहब (मुनीन्द्रजी) ने योगयुक्ति सब कछु सिखलाया और सीताके चुराये जानेके समय अत्यंत कठिनता उपस्थित हुई और समुद्रोल्लंघन करना अत्यंत कठिन था—तब रामचन्द्रजीपर कबीर साहबकी दया हुई। और पत्थरोंपर सत्य नाम लिखा उसके कारण बहुतेरे पर्वत तथा पत्थर पैरने लगे। और पुल प्रस्तुत हो गया। और इसी साहबकी दयादृष्टिके कारण लंका पर विजय पाकर मंगलपूर्वक अपने घर पहुँचे। देखो ग्रन्थ ज्ञान संबोध तथा अन्यान्य ग्रंथोंमें।

कबीर साहबका बांसुरी बजाना

कृष्णचन्द्र बाँसुरी बजाते और गोपियोंका मन चुरा लिया करते थे जब कबीर साहबने बाँसुरी बजाया तब तीनों लोक मोह गये। और जड़ चैतन्य सभी मोहित हो गए। और यमुना नदीका जल स्थिर हो गया। और स्थावर जंगम सभीको आनन्द आया वह बाँसुरी ऐसी बजी कि, फिर कभी न बजी। लोगोंने जाना कि, कृष्णचन्द्रने बजाया था। गोप तथा गोपियोंकी बड़ी कामना थी कि, वैसी वंसी पुनः बजे, परन्तु वह फिर किस प्रकार बजे ? उस बाँसुरीके बजाने वाले तो कृष्ण नहीं थे उसके बजानेवाले तो कबीर साहब थे और इस बाँसुरीकी प्रशंसा हंस कबीर किया करते हैं, जिनको इसका ज्ञान है।

गोरखको जीतना

जब प्रथम कबीर साहब और गोरखनाथका सामना हुआ और गोरखनाथ कबीर साहबकी श्रेष्ठता कीर्तिसे अनभिज्ञ थे तब गोरखनाथने कबीर साहबसे कहा कि, आओ हम

तुम वादविवाद करें। उस समय गोरखनाथने अपना त्रिशूल गाड दिया और कहा कि, आओ कबीर साहब उस त्रिशूलकी एकशाखापर आप बैठो और एकपर मैं बैठता हूं, तब वादविवाद करें। तब कबीर साहबने सूतके एक तारको अकाशकी ओर चलाया और शून्यमें उस सूतके ऊपर जा बैठे और कहा कि, नाथजी! आओ हम और तुम इस सूतपर बैठकर बाद विवाद करेंगे, तुम्हारा त्रिशूल तो पृथ्वीसे लगा हुआ है कबीर साहबकी यह लीला देखकर गोरखनाथ दंग हो गये।

गोरखनाथजीने कबीर साहबसे कहा कि, मैं छिपता हूँ आप मुझको ढूँढ़ निकालो, तब गोरखनाथ मेंढ़क होकर जलमें छिप रहे। तब कबीर साहब उस मेंडकको पकड़ लाये और कहने लगे कि, अब किधर जाओगे? तब गोरखनाथ पुनः अपने प्राकृतिक स्वरूपमें आयेंगे? तब कबीर साहबने कहा कि, अब मैं छिपता हूँ तुम ढूँढ लो। तब कबीर साहबने जलमें डुबकी मारी और जल होकर जलके साथ मिल गये और गोरखनाथ ढूँढ़ते २ थके और तीनों लोकमें ढूंढ़ते फिरे परन्तु कहीं पता नहीं लगा तब विवश हो बैठे। जब कबीर साहबने देखा कि, अब तो गोरखनाथ हारके बैठ गये तब कमण्डलुके जलमेंसे कबीर साहब प्रकट हो गये।

गोरखनाथने कबीर साहबके मारनेके निमित्त दो सर्प भेजे वे दोनों साँप कबीर साहबके पास आये और आपने उन दोनोंको अपने शरीरमें लगा लिया, जब बहुत विलंब हुआ और वे सर्प पलटकर नहीं गये तब स्वयं गोरखनाथ कबीर साहबके गृहपर पधारे और पुकारा कि, कबीर साहब! बाहर आइये

तब कबीर साहबने भीतरसे उत्तर दिया कि, नाथजी मेरे गृह दो अतिथि आये हैं, मैं सेवा सत्कारमें लगा हुआ हूं। तब गोरखनाथने जाना कि, कबीर साहब कैसे प्रतिष्ठित पुरुष हैं और आपमें कैसी क्षमा तथा संतोष है। प्रथम तो गोरखनाथने कबीर साहबसे बहुत वाद विवाद किया और बहुत कौतुक देखे जब भली प्रकार जान लिया कि, आप अद्वितीय हैं और मनुष्यमात्रमें दूसरा ऐसा कोई नहीं और कबीर साहबने गोरखनाथका भली प्रकार संतोष किया और बहुत कुछ कहा और सब कौतुक दिखलाये और गोरखनाथको भलीप्रकार निश्चय कराया कि, कबीर साहब स्वयं अलख अविनाशी हैं तब सत्यगुरुके चरणोंपर गिरे और शिष्य होकर परम गतिको पहुंचे और योग युक्ति सबको व्यर्थ समझा।

सिद्ध बना देना

जब कबीर साहबने कमालीके मस्तकपर हाथ रक्खा तब उसका हृदय प्रकाशित हो गया और उसपर आरंभसे अन्त-पर्यंत समस्त समयोंका वृत्तान्त प्रकट होगया और उसकी जिह्वासे ज्ञानके फौव्वारे छूटे और सब वृत्तांतोंका विवरण करने लगे और जब कब्रसे बाहर आतेही उसका हृदय प्रकाशित हो गया तब वह यह शब्द बोली।

कमाली वचन शब्द

हंसा निकल गया मैं न लडीसी।
पांच सहेली संग हैं मेली, पांचों मेंसे मैं अकेली खडीसी ॥
नौ दरवाजे बन्द करलीने, दशवीं मोरी खुली जो पडीसी ॥
न मैं बोली न मैं चाली, ओढ़े दोपट्टा किनारे खडीसी ॥
कहत कमाली कबीरकी बालकी, सादीसे मैं कुमारी भलीसी ॥

इसी प्रकार माई आमीन जो धर्मदास साहबकी स्त्री थी उसके शिरपर जो कबीर साहबने हाथ रक्खा उसकी जिह्वासे ज्ञान-सोता बहने लगा और सब वृत्तांत कहने लगी ।

आमीन बचन शब्द

साधो नाम सबनसे न्यारा लखि पुरन गुप्त विस्तारा ।
जानेगा कोइ जाननहारा ॥
जब नहीं अंशवंश निर्मायो, नहिं कछु किया पसारा ।
चर औ अचर चराचर नाहीं, नहिं मनको विस्तारा ॥
जब नहिं पुरुष नहीं तब ज्ञानी, यह मत सबसे न्यारा ।
जब नहिं पांच अमी निर्माया, नहिं सोहंग विस्तारा ॥
धर औ अधरधराधर नाहीं, नहीं पुरुषकी काया ।
तब नहिं पूरम नहिं जल रंगी, नहिं तब जलकी छाया ॥
धूप दीपलीला दहजा हैं, नहिं अदली औ तारा ।
करमन कहै सुनो धर्मदासा, यह मत सबसे न्यारा ॥
इसी प्रकार रानी इन्द्रमती राजा चन्द्रविजयकी जो रानी थीं मंदोदरी राजा रावणकी स्त्री माणिकमती राजा वीरसिंहकी स्त्री । लीलावती पुरती राजा योगधरकी पचास स्त्रियां, राजा अमरसिंहकी रानी, मीराबाई राजा उदयपुरकी रानी, क्षेम श्रीग्वालिन, और वह अनगिनत स्त्रियां जिनके माथेपर कबीर साहबने हाथ रक्खा वे सब परमधामको गयीं ।

कबीर साहबका उपदेश

तीन कालके जितने धर्मके अगुवा हैं और हुए, तथा होंगे उन सबसे कबीर साहबकी शिक्षा पृथक् है-इस शिक्षाका मुख्य अभिप्राय यही है कि, गर्भका आवागमन बंद हो जावे । इस आवागमनका बड़ाभारी दुःख है । जिस शिक्षा तथा धर्मसे

बारम्बार जन्म और मृत्युका दुःख दूर हो वही मनुष्यका धर्म है। और उसी गुरु तथा शास्त्रको धारण करना मानुषिक बुद्धिका कर्तव्य है। जो कोई मनुष्य देह पाकर मुक्तिमार्ग न ढूँढे वह महा अभागा है। कारण यह कि,वह पुनः ऐसा समय न पावेगा और सदैव भवसागरमें डुबकियां खावेगा। योगमुक्ति तथा समस्त तंत्र मंत्र बंधनके प्रधान कारण हैं। यदि योग समाधिसे योगी अमर होता तो फिर कदापि कोई योगी न मरता। संन्यासी जो ब्रह्मके ध्यानमें रहते हैं सो ब्रह्म उनका भ्रम है सो संन्यासी भ्रमरूप होकर आवागमनमें पड़ा रहता है, सो ब्रह्म उनका भ्रम होकर भ्रममें फँसे रखते हैं। ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादिक इत्यादि सब भ्रम नदीमें पड़े डुबकियां खारहे हैं इस भ्रमकी कोई सीमा नहीं है।

स्वयम् वेदके विना पढ़े किसीकी मुक्ति नहीं होती जो कोई ध्यानपूर्वक पढ़े और उसके विषयोंपर विचार करे और स्वसम्वेदकी आज्ञाओंपर भली भांति दृढ हो और समस्त मिथ्याओंसे पृथक् हो सो मनुष्य है और वही कालपुरुषके पञ्जेसे छुटकारा पावेगा। कंजूस, व्यभिचारी पुरुषको स्वसम्वेद पढ़नेसे किसी प्रकारका लाभ नहीं है।

अपने गुरुके स्वयम् सत्य पुरुष करके जानना और गुरुके मुँहसे स्वयम् सत्यपुरुष खाता पीता है और गुरुके शरीरसे वस्त्रादि पहनता है जिसको गुरुकी बातपर विश्वास न होवे और जिसके मनमें घमंड हो तथा जिसके मनमें नम्रता न हो तो वह नरकमें जावेगा। सेवा सब पुण्योंसे बढ़ा चढ़ा पुण्य है। सेवाका कर्तव्य सबके ऊपर है जो गुरुकी सेवाका कर्त्तव्य पूर्ण करेगा उसका हृदय प्रकाशित होगा और उस गुरुकी ही

मूर्तिसे पारख गुरु निकलकर उसकी समस्त कामनाओंको पूर्ण करेगा और कोई अपने गुरुके प्रतिका कर्त्तव्य न पालन करे और उससे अपने प्रतिका कर्त्तव्य पालन करावे और उसकी दी हुई वस्तुओंको मांगे तो वह चोर और ठग है। एक अवस्थामें गुरुकी सेवा न मांगी जावेगी जब कि, मनुष्य भली भांति डुबा रहे और दिनरात वंदनामें संलग्न हो जावे और किसी अन्य ओर ध्यान न हो और अपने शरीरकी चिंता भी न हो तब गुरुसेवा क्षमा होगी और गुरु उसकी वंदनाका भागी होगा। जबलों ऐसी अवस्था न हो तबलों गुरुसेवासे यदि अपनेको न बचायेगा तो उसके मनमें तेज न चमकेगा, इस कारण समस्त जीवन गुरुकी सेवा तथा उसकी आज्ञामें रहना उचित है। कारण यह कि, गुरुके प्रतिका कर्त्तव्य कभी किसीसे पूर्णरीतिसे निबह नहीं सकता। केवल एक नामके प्रतिफलमें तीनों लोकोंमें कोई वस्तु नहीं हैं जो दी जावे। गुरु ही धर्मकी जड़ है और जड़के सींचनेसे डाल पात सब हरे होते हैं और निश्चयके वृक्षमें सब फल फूल लगते हैं।

कंजूसकी मुक्ति कभी नहीं होती यह कंजूस बहुत बड़ा शैतान है यह जिसके मनमें प्रवेशित होता है वह जीवित श्मशानीभूत है। यह एक घृणा उत्पादक लत है और इससे स्वयम् परमेश्वरको घृणा होती है और समस्त पीर पैगम्बर तथा सिद्ध साधु इसको बुरा जानते हैं। किसी प्रकारकी वंदना तथा सेवा मनुष्य करे परन्तु एक कृपणता ऐसी वस्तु है जिससे वह सब विनाश हो जाती है। और कंजूससिद्धकी समस्त सिद्धि धूलमें मिल जाती हैं।

साखी–कामी तो बहुते तरे, क्रोधी तरे अनन्त ।
लोभी जिवडा ना तरै, कहैं कबीर सिधन्त ॥

साधुओंकी सेवा बहुत बड़ी पूजा है और भक्ति तथा मुक्तिकी देनेवाली है । और जो कोई साधुओंको भोजन इत्यादि देता है और उनकी आवश्यकताकी वस्तुओंको एकत्रित कर देता है उसकी समस्त कठिनाइयां और पाप दूर होते हैं और साधु-ओंकी कृपासे समस्त पदार्थ प्राप्त होते हैं और साधु समस्त युक्तियां बतलाते तथा समस्त अच्छे कार्योंको सिखलाते हैं और साधु नरकसे बचाते और वैकुण्ठको खींचकर ले जाते हैं और ज्ञान तथा मुक्तिकी समस्त युक्तियां समझाते हैं और समस्त भ्रम और धोखेको पृथक् कर देते हैं और साधु सत्यपदमें लगाते हैं और साधु समस्त संसारके पदार्थपर आज्ञा करते हैं। और साधु समस्त दुःख संतापका अपहरण करते और साधु समस्त पातकसे पृथक् हो जाते हैं और साधु तो अनेक हैं परंतु वह साधु जो समस्त भ्रम तथा धोखेको दूर कर दे और सत्य पदसे लगावे उस साधुसे विशेष प्रेम करना और उसीकी वंदना तथा सेवासे उसकी हार्दिक मना पूर्ण होगी। रोटी कपड़ा इत्यादि आवश्यकीय वस्तुओंका देना और मानसंभ्रम तो समस्त साधु-ओंका करना चाहिये परंतु विशेषतःवह साधु जो अपने स्वरूपमें मिलनेका मार्ग बतलावे वही साधुशिरोमणि है । साधुके विवर-णसे बाहर है । साधुओंकी सेवा तथा आज्ञापालन सौभाग्यके लक्षण हैं, वे बड़े बड़भागी हैं सो जो साधुओंकी संगत करते हैं साधुओंको भोजन देना बड़े पुण्यकारक कार्य हैं उसके समान अन्य कार्य जगतमें नहीं है। और साधुओंको वस्त्र देनेसे समस्त दुःख निवारण होते हैं ! और जबतक साधुओंके शरीरपर

वस्त्र रहता है तबतक देनेवालेकी समस्त आपत्तियाँ उससे दूर रहती हैं। साधुकी सेवासे समस्त बंधनोंसे मुक्ति होती है। यदि साधुकी दया न हो तो कोई मनुष्य गतिको प्राप्त न होगा। साधुओंकी दयासे मनुष्य धर्म तथा संसारकी समस्त विद्या और बुद्धि प्राप्त करता है। कितनेक साधु ऐसे भी हैं जो सत्य पुरुषकी भक्तिसे भटकाते हैं और काल पुरुषकी भक्तिमें लगा देते हैं। सो उनकी शिक्षा और बातोंसे पहचान लेना चाहिये। ऐसा न हो कि, उनके धोकेमें आ जावें। वे साधु कालपुरुषके दूत हैं उनसे सावधान रहना और जिस साधुमें अपने गुरुका ज्ञान और उसकी शिक्षा देखना उसकी मर्यादा तथा सेवा अपने गुरुके समान करना और धोखा धड़ी देनेवाले साधु अपनी वार्तालापसे पहचाने जाते हैं।

सत्य पुरुषकी भक्तिके अतिरिक्त और समस्त भक्तियां जाल तथा बंधनमें डालनेवाली हैं। कालपुरुषका विष ब्रह्मा विष्णु और शिव सनकादिकसे लेकर समस्त जीवोंमें समाया हुआ है। बिना सत्यगुरुकी दयासे कोई सत्य पदमें लग नहीं सकता है, समस्त शरीर तथा नक्षत्रोंमें काल पुरुषका विष छिपा हुआ है। जिसको सत्यगुरु अपनी ओर दया करके खींचे वह आवे और दूसरेमें क्या सामर्थ्य है कि, यमके नीचेसे निकल सके धर्मरायके मंत्रने समस्त मनुष्योंकी बुद्धिको अंधी कर रक्खा है और किसीको इस विषयका ध्यान तथा सोच नहीं कि, मैं जान बूझकर क्यों कुएँमें पडता हूं मेरे पुरुषा तो सब इसी धोकेमें पड़कर मरे, मैं इस अंधकारमय पथपर क्यों चलूं। इनकी बुद्धि डुबकियां खारही है और सत्यको मिथ्या तथा मिथ्याको सत्य मान रही है। और छुटकारेको बंधन तथा बंधनको

छुटकारा मान रही है। इनकी बुद्धि तथा इनका चित्त ठिकाने नहीं है। इनकी बुद्धि तथा पाशविक बुद्धिमें मनुष्यताका लेश-मात्र नहीं है।

चार वेद तथा चार पुस्तकें ये आठों काल पुरुषके जाल हैं। इस जालमें फँसाकर उसने समस्त मनुष्योंको मार लिया और मनुष्योंको उसने ऐसा धोखा दिया कि, जितने नाम सत्य पुरुषके थे वे सब अपने नाम प्रकट किये। और सत्य पुरुषके धोखेमें समस्त मनुष्य कालपुरुषकी बंदनामें लगे और काल-पुरुषने सत्यपुरुषका नाम छिपाया और यह भेद ब्रह्मा विष्णु और शिवसे भी नहीं कहा इस धोखेसे समस्त मनुष्य इस शिकारीके शिकार हो गये। जो कोई चार वेद तथा चार पुस्तकों से पृथक् होगा उसको सूक्ष्म वेदकी ज्ञान प्राप्ति होगी। जिनका प्रेम पुरुषम वेदसे है वे स्वसम्वेदसे कैसे प्रेम कर सकते हैं।

विष्णुको तीनों लोकोंकी सरदारी तथा अधिकार मिला है उसीके अधीन सब हैं। निर्गुण निरञ्जन और सगुण विष्णु यही समस्त लोकोंके रचयिता तथा कर्ता धर्ता हैं, तीनों लोकों-में विष्णु सम्यक् रूपसे उपस्थित रहते हैं। दोनों रूपसे निरंजन तीनों लोककी ठकुराई करता है।

तीनों लोक भवसागरका ठीकादार निरंजन है। और सत्रह असंख्य चौकड़ी युगका उसका ठीका है इतने समयपर्यन्त तो बिना पारख गुरुके कोई मुक्ति नहीं पावेगा। जब ठीकाकी यह सीमा बीत जायगी तब अक्षर पुरुषके राज्यका समय आवेगा। इस राज्यमें समस्त जीवोंके छुटकाराकी आशा होगी।

प्रथम स्वसम्वेद ब्रह्मसृष्टिमें था। जब कालपुरुषने भरमाया सृष्टिकी रचना की तब उसमेंकी निकृष्ट बातोंको निकालकर

पुरुष्मवेद बनाया और इस पुरुष्म वेदमें अपनी मत्यनुसार समस्त सृष्टिको उपदेश दिया और अज्ञानी लोग इस पुरुष्म अर्थात् पराकृत वेदको अपने धर्मका मार्ग और मोक्षकी निसेनी समझने लगे। तब निरंजनने अपनी सन्तानको पृथ्वीपर भेजना आरंभ किया और सहस्त्रों ऋषि मुनि पीर पैगम्बर पृथ्वीपर आए। और काल पुरुष निर्गुण तथा सगुणकी भक्ति सिखलाते चले आए और इन ऋषीश्वरोंमें सहस्त्रोंने अपना नवीन ढंग निकाला और वेदकी शिक्षाको अरुचिकर समझकर दूसरा पंथ बतलाया। वह भी काल पुरुषके फन्देमें फँस मरे और किसीने बिना पारख गुरुके सत्य लोकके पथको नहीं पाया।

जो कोई किसी जीवका रक्तपान करेगा उसका प्रतिशोध अवश्य देना पड़ेगा। जो कोई किसीको दुःख देवे अथवा मांसाहारी हो वह भी निश्चय दुख पावेगा और अपना मांस उसको खिलावेगा किसीका प्रतिशोध कदापि नहीं छोड़ेगा।

मांसाहारी तथा मद्यप कदापि मुक्ति नहीं पावेगा जो पुरुष मुक्तिके इच्छुक हैं उनको सम्यक् प्रकारसे स्वच्छ तथा पवित्र होना चाहिये।

गृहस्थके निमित्त अपनी स्त्रीके अतिरिक्त समस्त दूसरी स्त्रियोंके साथ संभोग करना महापापकी गणनामें है और साधुके निमित्त विवाहिता अथवा विनविवाही दोनोंसे संभोग निषेध है।

गुरुकी आज्ञोल्लंघनके समान मनुष्यके निमित्त और कोई महापाप नहीं है।

सत्यगुरुकी शरण सब जीवोंके निमित्त सुखदायी है। उसीकी शरणमें समस्त पातक क्षमा हो जावेंगे। इस कलियुगमें गुरुके

प्रतिका कर्त्तव्य कौन पूर्ण कर सकता है। परन्तु सत्यपुरुषको अपने शरणकी लज्जा है उसकी शरण आकर धर्मपर स्थिर रहो। जो धर्म्मविमुख हुवा वह निर्दयी तथा घातक शैतानके जालमें फँसा। सत्यगुरुके शरणपर पूर्णतया निर्भर रहना और यह समझे कि, सत्यगुरु मेरे अपराधोंको क्षमा करेगा मेरी और नहीं वरन् अपनी दयाकी ओर दृष्टिपात करेगा कारण यह कि उसका नाम पतितपावन है।

घमंडी तथा द्वेषीको सत्यपुरुषकी भक्ति कदापि नहीं प्राप्त होगी जो मनुष्य बड़ाई और उग्र श्रेणी पाकर नम्र हो गए तथा अपना शीश नवा दिया और धन पाकर दान तथा साधु सेवाको ग्रहण किया, उनके निमित्त भक्ति और मुक्तिका द्वार खोला जावेगा। वह मनुष्य जिसने ऐसा ध्यान किया कि, मैं तुच्छ सेवक हूं और जितनी मूर्तियां हैं, सब मेरे अधीन और सत्य गुरु हैं। और सब जीवोंमें उसकी कान्ति जाने तो मुक्तिका अधिकारी है।

मैं अपने कार्योंका अधिकारी नहीं बरन् सत्यगुरुसे सहायता माँगते रहना कि, वह मेरी मनकामना पूर्ण करें और भले कार्योंमें सदैव उद्योग करते रहना।

मैं नहीं जानता कि, मैं क्या हूँ और मेरा परमेश्वर क्या है, इस कारण सत्यगुरुपर पूर्णतया निर्भर रहना कि, जब वह मुझको दृष्टिप्रदान करेगा तब मैं जानूँगा।

कालपुरुषके जितने धर्म्म पृथ्वीपर प्रचलित हैं, सबमें वैष्णव धर्म्म श्रेष्ठ–और सबका सरदार है। यह सतोगुणी धर्म्म है। इस धर्म्मके नियम तथा इसकी आज्ञाएँ सत्यपथकी सीढ़ी हैं और सत्यपथ परम धामकी सोपान है।

सत्यगुरु कबीरका नाम बंदीछोर है। और वह सर्वाधिकारी है जिसको चाहे मुक्ति प्रदान करै, जिसको इस बातका पूर्णतया विश्वास हो गया उसका बेड़ा पार हुआ।

सत्यपुरुष और कबीर साहबको जिसने एक जाना उसका बंधन टूट गया और कालके पञ्जेसे छूट गया। तन मन धन गुरुके अर्पण करना तो भलाईका निचोड़ है, परन्तु अपनी कमाईसे दशवाँ भाग देना गुरुका हक है। बुद्धिमान् पुरुषही मुक्तिका भागी होता है।

जो कोई मनुष्यताकी श्रेणी प्राप्त करने योग्य है, उसीमें बुद्धि होती है। पशु सुन्दर मनुष्य हैं-उनमें बुद्धि नहीं होती है।

पारख गुरु प्रत्येक स्थानोंपर उपस्थित है, परन्तु जबलों उसके पथमें अपनेको मैं न्योछावर न करूं तबलों उसका दर्शन न होगा।

सब झूठे झूठोंके साथ मिलते हैं-जो कोई सत्यका प्रेमी होगा वह झूठेके साथ कभी योग नहीं देगा।

यह तीनों लोक विषवृक्षका फल है। और प्रत्येक वस्तु प्रत्येक खाना तथा मकानमें विष भरा हुआ है बिना सत्यगुरु-की भक्तिसे वह विषयोंसे बहिर्गत नहीं होगा और न किसी अन्य युक्तिसे पृथक् हो सकता है।

जान बूझकर विष खाना मनुष्यताके विरुद्ध है। आप सत्य पुरुषकी भक्ति करना और दूसरोंसे करवाना और करते देखकर प्रसन्न होना-वंदना है।

प्रत्येक मनुष्य बिना जाने बूझे अपने २ धर्म्मकी ओर खींचता और द्वेष करता है। परन्तु मनुष्य वह है कि, जो द्वेषरहित होकर वह धर्म ढूँढ़े जिससे उसके आवागमनका मार्ग एकबारगी ही बंद हो जावे।

मनुष्यके चार चक्षु हैं परन्तु पशु चारों चक्षुसे अंधे हैं, यद्यपि उनकी आँखें प्रत्यक्षमें खुली हुई हैं, तो भी वे अन्धे माने जाते हैं। इस कारण कि वे देखकर भी घातक मार्गसे नहीं टलते। इस कारण वस्तुतः वे पशु मनुष्यके स्वरूपमें हैं।

पशुओंकी मानवी शिक्षा रुचिकर नहीं होती-जैसे चोर, डाकू, व्यभिचारी इत्यादि सत्संग तथा सत्य पथसे भागता है।

सत्यपुरुषके जो अंकुरी जीव हैं वे सत्यगुरुकी शिक्षा सुनकर ऐसे दौड़कर मिलते हैं-जैसे लोहेसे चुम्बक चिपट जाता है। और जो काल पुरुषके जीव हैं उनपर सत्यपथकी शिक्षाका कुछ प्रभाव नहीं पड़ता है।

दान, वीरता, न्याय और धर्म्म इन चारों गुणोंकी शिक्षा सब लोग करते हैं, परंतु सत्यगुरुके साथ नहीं करते, इस कारण उनकी कामना पूर्ण नहीं होती।

यह कलियुग अत्यन्त कठिन समय है। इसमें पापीकी ओर तो तुरत मनुष्योंकी रुचि होती है और पुण्यसे दूर भागती है, ऐसी अवस्थामें सत्यगुरुके शरणके अतिरिक्त और कोई दूसरा उपाय नहीं है।

हलालके भोजनसे हृदयकी स्वच्छता होती है।

जो कोई न्यायी बादशाहके सामने पाप करेगा और अत्याचारपर बद्धपरिकर होगा तो उसका सत्यानाश होगा। ऐसेही जो कोई कबीरपंथमें प्रवेशित होकर पापकी ओर चित्त लगावेगा, तो उसकी दशा बड़ीही दीन होगी।

जिसको अपने गुरुपर सच्ची श्रद्धा है उसकी बुद्धिपर पिशाची बल काम नहीं करता है। उसकी बुद्धि बदल नहीं

सकती है और न काल किसी प्रकारकी बाधा उपस्थित कर सकता है।

जो कोई अपने गुरुसे सच्ची प्रीति करेगा उसका विश्वास अचल रहेगा और उसकी बुद्धि स्वच्छ रहेगी। विना गुरुके मनुष्यके हाथका जलपान पर्यंत उचित नहीं है।

कबीर साहबका रेखता

खलक है रैनका सपना। समझ दिल कोई नहीं अपना॥
कहीं है लोभकी धारा। बहा जग जात है सारा॥
घड़ा ज्यों नीरका फूटा। पतर जैसे डारसे टूटा॥
ऐसी निर्जान जिंदगानी। अजौं क्यों न चेत अभिमानी॥
सजन परवार सुतदारा। सभी उस रोज हों न्यारा॥
निकल जब प्राण जावेंगे। कोई नहिं काम आवेंगे॥
निरख मतभूल तन गोरा। जगतमें जीवना थोरा॥
तजो मद लोभ चतुराई। रहो निस्संग जगमाहीं॥
सदा जिन जान यह देही। लगाओ सतनामसे नेही॥
कटे यम कालकी फाँसी। कहैं कबीर अविनाशी॥

यथा

साँई यादमें रहना, नहीं यह जिन्द जावेगा।
करो उस पीरकी बन्दगी, तुझे यारां लखाऊंगा॥
बना है खाकका खेला, इसीमें खोज पावेगा।
मुझे मुर्शिद मेहर मनशाल, गो दीदार पाया है॥
मुझीको देखले परकट, किसी से न छिपाया है।
कबीरा पीर है साचा, सकलमें आप छाया है॥

यथा

समझ दिलसोच अबकीना। मुर्शिदसे पूछ नालीना॥

कहांसे रंग यह आया । न काहूँ मोहिं बतलाया ॥
सुरति बहि रंगकी प्यारी । पपरा भये हैं वनवासी ॥
न आवे हाथ वह करनी । सिधारो जाय गुरु शरनी ॥
मुझे मुर्शिद मेहर करके । मुरीदी मन सिखाया है ॥
किताबें खोल दिल अन्दर । हकीकत निज बताया है ॥
कि है कोई गैबका वासी । दिखावे खेल परकासी ॥
बसावैं गैबका खोरा । मिटावे भर्मका फेरा ॥
अचम्भौ देश है न्यारा । लखे कोई नामका प्यारा ॥
दिया जिन प्रेमका प्याला । सोई हैं संत मतवाला ॥
कि निशिदिन मोह ना भूले । विरहकी झोंकमें झूले ॥
चरण कबीरको ध्यावे । इलाही ज्ञान भर पावे ॥

पद

हैली तीरथ जाय बुलाए । रे हरदम परब नहाये ॥
तीरथ कोटि अनन्त हैं रे गंग यमुन जहँ दुई ।
मध्य सरस्वती बहत है रे नहाय निर्मल होवे ॥
ब्रह्म अग्निके घाटमें रे आगे शिवके लिंग ।
ताहूपे दछिना दीजिये रे बहुत सहसमुख गंग ॥
आगे कलालीकी हाट है रे चोखा फूल चुनन्त ।
बिन सद्गुरु पावे नहीं रे कोई साधू जन पीवन्त ॥
शीश उतार धरणी धरे रे ऊपर धरले पाए ।
ब्रह्म अगिनके घाटपे रे इस विधिपर बेनहाए ॥
ऋग यजुर साम अर्थनवारे चारों वेदका ज्ञान ।
उनके वहां कहो कौन गति रे बांधे गांठ परवान ॥
चारों वेदको पिता है रे सूक्ष्म वेद संगीत ।
साहब कबीरजूके मुकद्दमेरे अविगतब्रह्म अतीत ॥

यथा

पण्डित सतपद भाजो रे भाई। जाते आवागमन नशाई ॥
ज्ञान न उपजा ब्रह्म नहिं चीना आप कहांते आए।
एक योनिसे चार बरन भए ब्रह्मदेह कहा पाए ॥
बारह बेदी ब्रह्म बखानूं स्वर औ शक्ति समानी।
संध्या तर्पन तहां करलीना जहां कुशा नहिं पानी ॥
ऋग यजुरज्ञानको बुद्धी साम अथर्वन सोई।
सूक्ष्म वेदको भेद न जाने क्योंकर ब्रह्मन होई ॥
शूद्र शरीर ब्रह्म तेहि भीतर भिन्न भेद कछु नाहीं।
लखचौरासी जिया जन्तुमें बरत रहो सब ठाईं ॥
नौगुण सूतसँयोग बखानूँ तिरगुण गाँठ दयानी।
तासु जनेउ कबहुं ना टूटे दिन दिन बारह वानी ॥
कहें कबीर गुरुब्रह्म चीन्हले जगत जनेऊ सोई।
पाखण्डकी गति सबही मिटावे तब निज ब्राह्मण होई ॥

यथा

हिरवा गँवाए सास चली वारी धनियां।
कौन सौतिन है कौन सुमन है कौन वेद तुम जानियां ॥
कौन पुरुषको ध्यान धरत हो कौन है नाम निशानियां ॥
एही तनु ओंकार सुमन है सूक्ष्म वेद हम जानियां ॥
सत्य पुरुष तो ध्यान धरत हैं सत्य है नाम निशानियां ॥
यह मत जानो हिरवा जरवा बनियां दूकान बेगानिया ॥
अलख मूलक हिरवा मोरा अगम देशते अनियां ॥
एक है चोर सकल जगमोंसे राजा रैयत रनियां ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो अलख है नाम निशनियां ॥

कबीरपन्थका प्राकट्य

जब कबीर साहबने अपना धर्म पृथ्वीपर प्रचलित किया और सत्य पुरुषकी भक्ति प्रकट की और सत्यलोका समाचार दिया तब किसीको निश्चय नहीं हुआ। और वेद तथा पुस्तकोंकी लिखावटोंको सत्य माना और चार प्रकारकी मुक्तिको मोक्षमार्ग जाना तथा कबीर साहब इन चारों प्रकारकी मुक्तिको बंधन और कालपुरुषका महाजाल बतलाते और लोगोंको वह पथ छोड़ना तथा इस पंथको ग्रहण करना दुष्कर हुआ, इस कारण सब आपके वैरी हो गये और आपके साथ ऐसा व्यवहार करने लगे इस कारण मैं उन स्थानोंको परिलक्षित किया चाहता हूँ जिनसे संसार नितांत ही अनभिज्ञ तथा अज्ञ है और केवल चार मुक्तिको सत्य मानते हैं जो वस्तुतः बंधन है। निम्नलिखित विवरणको देखो।

दश सोहंगका वृत्तांत

कबीर साहबने ग्रन्थ मुहम्मदबोधमें जिन दश स्थानों का विवरण किया है वह यही दश सोहंग हैं। १-सत्यपुरुष सोहंग २-सहज सोहंग। ३-अंकुर सोहंग। ४-इच्छा सोहंग। ५-सोहंग सोहंग। ६-अचिन्त्य सोहंग। ७-अक्षर सोहंग। ८-निरञ्जन और माया सोहंग। ९-ब्रह्मा विष्णु और शिव सोहंग। १०-समस्त जीव सोहंग।

यह दश सोहङ्ग हैं और समस्त संसार सोहङ्ग है। जिसका गुरु जहांकी सूचना देगा वह उसी स्थानको पहुँचेगा और समस्त जीवोंमें वह प्रवेशित हो रहा है और समस्त शरीरसे यही शब्द निकल रहा है और समस्तका निचोड़ तथा सिद्धांत यह है कि इसके ध्यानसे ज्ञान है और उससेही शान्ति है।

जितने पृथ्वीके मनुष्य हैं सो सब इस विषयसे एकबार-गीही अनभिज्ञ हैं, उन लोगोंको केवल चार प्रकारकी मुक्तिकी सुध है और जितने अवतार पीर पैगम्बर पृथ्वीपर प्रकट हुए सो सब निर्गुण तथा सगुणका समाचार देते रहे। वेद तथा अन्यान्य पुस्तकोंमें इस बातका तनिक भी विवरण नहीं है कि, सत्यपुरुष कौन है। सब अचेत निद्रा तथा धोखेमें पड़े और कालपुरुको अपना पथदर्शक और मुक्तिदाता समझने लगे और जितने पीर पैगम्बर हुए किसीने भी सत्यपुरुषका स्थान स्वप्नमें भी नहीं देखा और न जाना। सब निर्गुण तथा सगुणका समाचार देते चले आये। यदि उनसे कहा जावे कि, तुम भूलकर यमके फंदेमें न पड़ो तो उनको कदापि निश्चय नहीं होता। अनुगृहीत होनेके स्थान वैर तथा विरोध करनेपर बद्धपरिकर हैं और कबीर साहबके धर्म प्रचलित करनेके समयसे आज पर्यंत कबीरपंथियोंके मतको सुनकर लोग अप्रसन्न होते हैं और तीर्थ व्रत मूर्तिपूजा आदिको भला समझते हैं और लोक तथा वेदकी आज्ञाओंको सर्वोत्तम समझते हैं और सत्य पुरुषकी भक्तिसे भागते हैं। कोई बड़भागी इस भक्तिमें लगता है इस भक्तिबिना किसीको पथ नहीं मिलेगा

कबीर साहबने दश स्थान प्रकट किये हैं उन दश स्थानोंके निमित्त इस प्रकारकी विद्याएँ कही हैं। १-शरीअत। २-तरीकत। ३-हकीकत। ४-मारफत। ५-तरौवहत। ६-ध्यान दोरहियत। ७ जुलकार चन्द्रगी। ८-हुक्म मुरतिद। ९-दए-नाका। १०-शब्दसार।

यह दश प्रकारकी विद्याएँ हैं। जिस किसीको जहांका ज्ञान देता है उसी स्थानको पहुँचता है बिना विद्याके कोई

पहुँच नहीं सकता। जिसके गुरुकी जहांलों पहुँच है वह अपने शिष्यको वहींलों पहुँचा सकता है। वेद और पुस्तकों द्वारा तो केवल चार प्रकारकी विद्या मनुष्य प्राप्त कर सकते हैं। कर्म जो है उसकी पहुँच नासूत स्थानपर्यंत है। उपासना मलकूत पर्यंत पहुँचाती है। योग जीवरूत स्थानमें स्थित करता है। जहां सहस्र पंखुड़ियोंका कमल है और अलख निरञ्जन ज्योतिस्वरूप रहता है। निर्विकल्प समाधि लगाकर योगी लोग उसी स्थानपर्यंत जा पहुँचते हैं और जिसको मार्फत-की श्रेणी प्राप्त हो और उरफानकी विद्याका प्रकाश धारण किये हो वह लाहूत स्थानको जाता है। लोक और वेद द्वारा मनुष्योंके निमित्त ये चार स्थान ठहराये गये हैं। अचिन्त्य द्वीपपर्यंत कभी कभी कोई कोई साधुओंमेंसे इंगित करने वाले हैं, मनुष्यको इससे पारका समाचार तनिक भी नहीं है, सब व्यर्थही हवाई बांधते और मुक्तिमार्ग बतलाते फिरते हैं और समस्त धर्मके मनुष्य प्रण रोपते हैं कि,हमारे धर्ममें मुक्ति है,और कोई कहीं नहीं पा सकता। जीवरूप स्थानमें तीनोंका सृजन कर्ता रहता है और उसीकी वंदना सब करते हैं और उसीके द्वारा चार प्रकारकी मुक्ति और समस्त स्वर्गोंका सुख प्राप्त करते हैं और इन समस्त स्थानोंमें शारीरिक आनन्द तथा पाशविक कामनाके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। त्रियाती-तकी श्रेणी जिसको वेद सबसे बढ़कर बतलाता है, इस श्रेणीमें अलख निरञ्जन अधिकृत है और जितने साधुगण उस श्रेणीको हस्तगत कर लेते हैं सो सब उसके समान हो जाते हैं और सब सृष्टिकी रचना करनेकी सामर्थ्य रखते हैं। और सबका हृदय उस विद्यासे प्रकाशित है और समस्त

सिद्धियां उनके वशमें हैं और वे सब अपनी रचनाके रचयिता और स्वामी हैं और वे लोग जगत्प्रभु कहलाते हैं। सांसारिक मनुष्योंमें वह बल और बुद्धि कहां है कि, साधुओंके भेदको पहचान सकें। ये बातें केवल सत्यगुरु द्वारा प्राप्त होती हैं जिनके ऊपर पारख गुरुकी दया हो वह इस विषयको जान सकता है और किसी मनुष्यमें इतना पौरुष नहीं। सात स्वर्ग, सात द्वीप, पृथ्वी और नरक यह ब्रह्मांडके इक्कीस भाग सब निरञ्जनके अधीन हैं और सबके ऊपर वह आज्ञा चलाता है। सात द्वीप जो पृथ्वीके हैं उनमें भांति भांतिके सुख दुःख हैं और जो सात स्वर्ग हैं उनमें बहुतसे सुख हैं पर वहां यह दुःख है कि, एक दूसरेकी ईर्षासे जलते रहते हैं और स्वर्गके लोगोंको किसी सीमापर्यंत ज्ञान होता है कि, अब हम स्वर्गसे गिर पडेंगे और हमारा सब सुख पृथक् हो जावेगा और आपत्तियों तथा दुर्दशाओंमें फँस जावेंगे, इस दुःखसे वे अत्यन्त कातरतासे विलाप करते और दुःख करते हैं, अन्त उनका स्वर्गीय शरीर छूट जाता और वे पृथ्वीपर आकर जन्म लेते और जैसे उनके ध्यान अच्छे अथवा बुरे होते हैं वैसा ही चोला वे पाते हैं। और जितने स्वर्ग हैं और क्रमानुसार जिस प्रकार एक दूसरेके ऊपर हैं वैसे ही उनका सुख विशेष होता जाता है। जैसे २ ऊपर हैं वैसे ही वैसे सुख तथा आनन्दका आयोजन विशेष होता जाता है और नीचेके विभागोंमें न्यून है। और वह सब सुख अस्थायी तथा अल्पकालिक हैं। कुछ समयके उपरांत स्वप्नके समान भंग हो जानेवाले हैं। सो सब स्वर्गों और चारों स्थान जिनको वेदने मुक्तिदाता कहा है यहांलों मनुष्योंको ज्ञान होता है इसके आगे कोई कुछ नहीं जानता। परन्तु

कबीर साहबने कहा है कि, ब्रह्मा विष्णु तथा शिव ये जो तीन देवता हैं वे सहज द्वीपपर्यंत पहुँच सकते हैं इसके आगे किसी-को तनिक भी सुध नहीं है। तीन देवता सहज द्वीप पर्यंतकी सुध रखते हैं परंतु मनुष्योंसे वे नहीं बतलाते, अपना भेद अपने मनमें रखते हैं और भलाई बुराईके समस्त कार्योंका रचयिता निरञ्जन हैं, भलाई करो तो स्वर्ग और वैकुण्ठमें जाय, यदि बुराई करे तो नरकमें प्रवेशित हो, चाहे मृत्युलोकमें जन्म लेता रहे। जैसे आकाशके सुखका विवरण है वैसे ही नरकयंत्रणा अत्यन्त भयानक है। सुतरां मुसलमानी पुस्तकोंमें मैंने पढ़ा था कि जिस समय हजरत दाऊद नरकयंत्रणाका विवरण किया करते थे उस समय सुननेवाले बेतरह रोते तथा तड़पते और कितने भयके मारे मर जाते थे।

और लिखा है कि एक बेर नरकयंत्रणाको सुनकर सत्तर मनुष्य मारे भयके मर गये । और स्वयम् दाऊद ऐसा रोता था और तड़पता था कि, अचेत हो जाता था। और ऐसा हाथ पाँव और शिर पीटता था कि, उसकी लौंडियां और लोग लासको पकड़ लेते और वह अत्यन्त विह्वल तथा बेशुध हो जाता था और दाऊद यद्यपि बादशाह था तथापि समस्त निशा वह ऐसा रुदन किया करता था कि उसका बिछौना भीग जाता था और जब वह परमेश्वरके प्रेममें गाता और नाचता तब स्थावर तथा जंगम हिल जाते थे।

और कबीर साहबकी आज्ञा है कि, जिसमें परमेश्वरका भय नहीं है और हार्दिक प्रेम नहीं है वे कदापि मुक्ति नहीं पा सकेंगे सो समस्त पीर पैगम्बरों और सिद्ध साधुओंका सच्चा

गुरु कबीर साहब हैं जिनमें परमेश्वरका भय और सच्चा प्रेम पाता है उनको परमधामको पहुंचाता है और सबकी ओर दया तथा उदारताको समान दृष्टिसे देखता है। अब जानना चाहिये कि, यह काल पुरुष इस प्रकार भय तथा यंत्रणाकी अवस्थामें फँसाकर बंधनमें डाल देता है, किसी युक्तिसे किसीका छुटकारा होने नहीं देता है और तप्त शिला पर सबको भून भूनकर खाया करता है जैसे भेड़ बकरी तथा गऊ कसाईको प्यार करती हैं जिनका परिणाम प्रकट है, ऐसाही मनुष्य निरञ्जनको प्यार करके उसका फल पाते हैं। और हांक मार २ कर कबीर साहब कहते चले आते हैं तो भी लोगोंको विश्वास नहीं होता है।

माया सृष्टि और पिण्डब्रह्मका जो समस्त मिथ्या बाँधनू है इन सबका रचयिता निरञ्जन है। जो कोई इस मिथ्या जाल तथा कामके वशीभूत होकर रहेगा वह कदापि मुक्ति नहीं पावेगा।

इस प्रकार कबीर साहबने अपना ज्ञान और शिक्षा पृथ्वी पर प्रकट की और लोग आपके वैरी हुए कारण यह कि, लोगों-का चित्त कामक्रोधादिके प्रपञ्चोंमें फँसा हुवा है और उनकी बुद्धि कालसे घिरी हुई है।

जबलों मनुष्योंके चित्तमें सुबुद्धि और स्वच्छ कामनाएँ उत्पन्न नहीं होतीं तबलों यह निश्चय कालका भोजन होता जाता है जब सुबुद्धि होगी तथा अच्छे विचार मनमें उदित होंगे तब तो कदापि कालकी राहमें न चलेंगे। सो थोड़े लोग हैं जो आपत्तिमय पथ देखकर भागते हैं और अभागे अपनी हठसे नहीं हटते।

साखी–कालको जीव माने नहीं, कोटिन कहूं बुझाय।
मैं खींचू सत लोकको, बांधा यमपुर जाय॥
बहता है बहजान दे, बहैं लगावन ठौर।
कहा हमारा न आदरै, ध्यों धक्का दो और॥

इस प्रकार कबीर साहबका धर्म पृथ्वीपर प्रचलित हुआ। और वैरी और दूत भूत सब निराश हो गये किसीका कुछ वश नहीं चला। जो समर्थ धनी स्वयम् सत्यपुरुषने धर्म प्रचलित किया फिर किसीका सामर्थ्य थी कि, रोक सकता? ऐसा वेगसे चला कि, लाखों सेवक और शिष्य हो गये और सत्य कबीर और सत्यनामकी पुकार समस्त संसार में पड़ी। किसीके रोके रुक नहीं सका। पश्चात् कबीरपंथ स्थापित करके कबीर साहब सत्यलोकको गये।

कबीरपंथकी स्थापना

पहले मैं वर्णन कर आया हूं कि, सत्यपुरुषने कहा कि, ऐ ज्ञानीजी! पृथ्वीपर जाओ और सुकृतिजी (धर्मदास) को जगाओ, वह भूलकर मूर्तिपूजक हो गये हैं उनको उनकी अचेत निद्रासे जाग्रत करो और सत्यपुरुषकी भक्तिमें लगाओ और सत्य पंथ पृथ्वीपर प्रचलित करो। और बयालीस वंश नियत करके कलियुगके मनुष्योंका उद्धार करो। सत्यपुरुषकी आज्ञानुसार कबीर साहबने धर्मदासको जगाया और सत्यपुरुषकी भक्तिमें लवलीन किया। फिर चारों दिशाके चार गुरु नियत किये।

चार गुरुका वृत्तान्त

पहले गुरु धर्मदासजी हैं और उनको उत्तरके ओरकी गुरुवाई प्रदान की है और उनके बयालीस वंश हैं। दूसरे चतुर्भुजदास

उनको दक्षिण ओरकी गुरुवाई प्रदान की गयी और सत्ताईस वंश हैं। तीसरे गुरुराज बंकजी हैं। उनको पूर्व ओरकी गुरुवाई प्रदानकी गयी और उनके सोलह वंश हैं। चौथे गुरु सहतीजी हैं और उनके सात वंश हैं और उनको पश्चिम ओरकी गुरुवाई प्रदान की गयी। ये चारों गुरु चार ओर ठहराये गये हैं और जब ये चारों गुरु चारों ओरसे सत्यनामका डंका बजावेंगे तब कबीर साहबका धर्म भलीभांति पृथ्वीपर प्रचलित होगा। इन चारों गुरुओंमें केवल धर्मदासजी अबलों प्रकट हुए और उनकी वंशगद्दी स्थिर हुई। और पूर्वोक्त लिखित तीनों गुरु अबलों प्रकट नहीं हुए जब वे भी प्रकट हो जावेंगे तब इस धर्मका प्रचार विशेष होगा। अब तो केवल धर्मदासजीके वंश बयालीसका विवरण करता हूँ।

धर्मदासके बयालीस वंशका वृत्तांत

धर्मदासके बयालीस वंशका यह ठीका सत्यगुरुने ठहराया है कि प्रत्येक वंश पच्चीस वर्ष और बीस दिवसों पर्यंत गद्दीपर बैठा करे और इससे अधिक तथा न्यून कोई न रहे। और सत्यगुरुकी आज्ञानुसार उनका अवतार और उनका अधिकार होता आता है। फिर वे अपनी इच्छासे शरीर छोड़ कर सत्यलोकको सिधारते हैं। जिस दिवस साहबका चलना होता है उसके पूर्व अनेक सन्त महन्त दर्शनार्थ एकत्रित होते हैं और जिस दिवस पच्चीस वर्ष तथा बीस दिवस पूरा होता है उस दिवस जो गद्दीका अधिकारी होता है उसको अपने स्थान गद्दीपर बैठा देते हैं और समस्त कार्य सौंप देते हैं। जब सब कार्य ठीक हो चुकता है उस समय आप पानका बीड़ा लेते हैं इसको चलानेका बीड़ा कहते हैं। जब वह चलाने-

का बीड़ा लेते हैं उस समय हंस तो सिधार जाता है और शरीर ठंढा हो जाता है और उस शवकी समाधि कर देते हैं। इतना कौतुक कबीर साहबका अबलों पृथ्वीपर प्रकट है। यही लोग अपने चेलों सहित इस भवसागरके मांझी और नावके चलानेवाले हैं।

चारों गुरुकी प्रशंसा--उर्दू सेर

गुरु चारको पहले ताजी मकर। सातए शकुनी स्वामए हाथ धर॥
गुरु वार सतगुरु कदमके हैं खाक। चढ़े अर्श ऊपर शबद बादपाक॥
मोअज्जित हुए खाक खाकी हुए। बाहरखू रजाजू खुदाकी हुए॥
बुजुरगी किया अजमुबारक जबाँ। बनाया इन्हें दुज्दके पासबाँ॥
बअतराफ चारों निगहबाँ किया। मकाँ मुक्तिके चार दरबाँ किया॥
जहां बैठे वहकादिरे जुलजलाल। किबरतख्तशाहंशहीला मिसाल
वजीरान चारों खिरदमंद हैं। यह अरकाने दौलत खुदावंद हैं॥
जबानिब जहाँमें किया चार हैं। बहर सिम्त यक यक मददगार हैं॥
जो इनसाँको सतगुरु हजूरी करें। निजाते शफाअतासो पूरी करें॥
परमधाम पहुँचावे चारों वजीर। चले साथ ले मर्दुमाने अफीर॥
धरमदासऔवलब सिमतेशुमाल। किरोशनहैजिसकीमुहब्बतकमाल
यह औवल गुरु सबके शिरताज हैं। कि सब आदमी पैरवां आज हैं॥
बयालीसवंश उनके रोशनजमीर। मुकाबिल है जिसहेच बद्रे मुनीर॥
गुरु दूसरे हैं बजानिब जुनूब। चतुर्भुजसाहबजिवअमांबरूशखूब
सत्ताईस वंश उनके हैं ताजदार। दखिन देशके आदमीबाजदार॥
गुरू तीसरे रायबनके बशिर्क। लियातख्त ओ ताजशाहीबफर्क॥
सोलहवंशले हुक्म जारी करें। जो सतगुरुतवस्सल तयारी करें॥
गुरू चौथे सदते बमगरब कहे। बमे सात फरजंदके छिप रहे॥
ये चारों गुरू मुक्तिके रास हैं। फकत एक जाहिर धरमदास हैं॥

धरमदासका सब पसारा हुआ । जहाँमें जहांतक हजारा हुआ ॥
न अबतक वह जाहिर गुरू तीन हैं। कि सतगुरुके फरमान आधीन हैं॥
गुरू चार दुनियांमें जब आयँगे । नहजदे करी दौर दिखलायँगे ॥
तो सारीजमींमें हो यह गुलगुलः। है सतनामसत और सब बुलबुलः॥
सिलहशोरतीनों कभी गाहमें । है पोशीदःसतगुरु हुकुम चाहमें ॥
निकलजब पड़ीं फौजसालार तीन। हो मुक्तिसे मामूरसारीजमीन॥
बमै वंश चारों हुकुम पायँगे । शपातीं किधरके किधर जायँगे ॥
पड़े शोरआलममें सत् नामका। हो शोदरः निजाते सरअञ्जामका॥
बहर सिम्र डंका है साहब कबीर । फिरें बोलते सत्यनामे सफीर ॥
गुरू चार सतनाम डंका दिया। पुरुषकालके दिलमें सनकादिया॥
बहरसू जुझाऊ बजेडङ्कढोल । कि सबकैदियोंकीही जंजीर खोल ॥
बजै झांझ औ शंख मिरदंग जो । जिसे देखते दूत दल दंग हो ॥
न वे जूर पुर नूर है सब समात । तुलू मह्रहै कटगई सारी रात ॥
गुरू चार हरजाय बोले नकीब । न बाकी रहा और कोई है कीब॥
करे गुफ्तगू उनसे जो दूबदू । मती सारे उनके न कोई अदू ॥

धर्मदास साहबके बयालीस वंशकी प्रशं ।

उर्दू शेर

धरमदासके जो बयालीस वंश । सो सब सत्य सुकृतिके रूपहंस॥
जुदागानः तारीफ उनकी लिखूँ । कदमदतकेपरअपनेशिरकोरखूँ॥
है औवल मचन वंशचौरामनी । गुरू सत्यमारग धरमके धनी ॥
कि इनसांका जिसमें गुजारः हुवा। परमपुर्ष यह परनजारः हुवा॥
वचन जो सतगुरुका अवतार है । उसीके महरजीव भवपार है ॥
सुदर्शन साहब दूसरे नाम जो । करे जीव भवपार कण्डहारसो ॥
जोकुलपतिसाहबतीसरेनामदार।पनह जिसकेसबजीवहों कामगार॥
जोपरमोदगुरुचौथेबाला हैं पीर। सोशाफीबनाजीजेखतर खतीर ॥

कमलनाम साहब कहूं पांचवाँ । जगतके गुरू पीर सो बेगमाँ ॥
हैं छठएँ खुदावन्दनामेअमोल। किजिसखौफसेभागजायमकेगोल॥
जो सूरत सनेही साहब सातवाँ । कि जंगी मेहर देखिये आतमाँ ॥
जो पैदा हुए आठवें नामइक। मलिकमौतका होगया सीनःशक ॥
नवैपाकसाहब हुए नामपाक ।मरमभूतको सो मिलाया है खाक॥
प्रकट नामसाहब प्रकट हैं दहम। किसामानमुक्ती किया सोबहम॥
धीरजनामसाहबइग्यारहवें जो आये। किधीरजनिगहजीवधीरज हुए॥
उगरनाम साहब हुए बारहवें । परमपंथ परचार इस अहूदमें ॥
तेरहवीं उदय पहने आदमकबा । तोजमशेर गुरांभगादुम दबा ॥
हुई तेरहवीं कुरसी आली दिमाग। कि दरजा हरे होगये खुश्कबाग॥
हुवा जोर वो शोरसंतनामको । सला है करमखास ओ आमको॥
मिलीं बारहों पथ इस अहूदमें।सतायश करें गुरुकी यकमहदमें ॥
कुरू नामसाहब कहे चौदहवां । कि जिनकी बुजुर्गी बदरहो जहां॥
जो परकाश परकाश हो रही । संना इम्दअस्त नाम दरजा कही॥
उदितसोलहवीं साथ जोशन हुए।तो जम जङ्गमें नाम रोशन हुए॥
कि जब सत्रहवीं होवें साहब मुकुन्द।हुएकालके दाँत इसवक्त कुन्द॥
अरधनाम अट्ठारवी दर्दमंद । कि आवागमनकी किया राह बंद॥
जो उन्नीसवीं नाम ज्ञानी गुरू । करै जीवको पुर्षके रूबरू ॥
कहो बीसवीं साहब हंस मन । न जिनसे लगे कालका कोई फन ॥
सुक्रुतिनामसाहबहुएबीसएक।तो सुरकीरतकी जगमें रहेखूब ठीक॥
अरजनाम बाईस जाहिर हुए ।तो इनसां परमपदके माहिर हुए ॥
हे रसनाम साहब जरसबीस तीन।सुन आवाजताबेहुई सबजमीन॥
हों चौबीसवीं गंग मुनिसाहब गुनहसे हों सब आदमी तायब ॥
पुरुषनामसाहबदरसबीसपांच । नजिउकोलगेसंगेसोजाकी प्रांच ॥
छबीसवीं जाग्रतनाम साहब जगे । नइनसाँकोरहजनवठगतबठगे ॥

हुए भृगुमुनि साहब सातबीस। रहेरास्त दुश्मनदियाजिसनेदींस ॥
अस्त नामसाहबकहेबीसआठ। कियमदूतकोजोदियामारकाट ॥
हैं उन्तीसवीं साहबकंठ मुन। कियाकालको मारकरसो दफन ॥
हैं सन्तोष मुनिसाहब तीसवें। पयान पुरुष आवें इस अहदमें ॥
यह खुशवक्त देरांदिखाया हमें। परमपुरुष पैगामा आया हमें ॥
जमीं सारीसतनामकी हांकहै। तोदरकौमको मुक्तिकी झाँक है ॥
हुई सारे आलममेंयहधूमधाम। तअस्सुबत जो और भजोसत्यनाम॥
जमी सारी पर हुक्मरानी हुई। बाहर कौमपर मेहरबानी हुई ॥
यहूदी तिसार मुसलमां हिनूदा। पढ़े कमलये सत्यनामसे हुरूदा॥
चातर्कनामसाहबकाएकतीसदौर। जमींपरनबाकीरहेयमकाजोर ॥
बत्तीसवेंबरामदहुएआदिनाम। हुएसारेनफसानीहरकतगुलाम ॥
हैं तेतीसवें वेद नामें बुजुर्ग। कि जिस सामने हो न शैता सतर्ग ॥
साहब आदिनाम हुए तीस चार। कि उसमेहसेजीवहों कामगार॥
महानाम साहब हैं पैंतीसवाँ। जमीपरहुवा है अमन ओ अमाँ ॥
छतीसवें हैं निजनामसाहबखदीन। नबाकीरहेरेवकुछनफ्सदेन ॥
साहबदाससाहबकासैंतीसअस्त्र। दियबारशइनसानकेजिसने वस्त्र॥
उदयदाससाहब हों अडतीस पुश्त। इलमतिल्मसबमें न कोई दुरस्त॥
कुरदनामसाहबकानौतीसवक्त। बहरहोजहांजिनकोहैताजोतख्त ॥
चेहले हग मुनीसाहबनामले। तोसत्यलोकको आदमीसबचले ॥
महामुनि साहबनामचालीसएक। बदी बेखकुन आदमीसारेनेक ॥
बयालीस मुक्तामनी साहब है। आखिर जमां सत्पुरुष नायब है ॥
यह जबतक बयालीस पीढ़ी रहे। परमधामकी जगमें सीढ़ी रहे ॥
बयालीसका जबतलक नाम है। नकब्बीरका जगतमें काम है ॥
यह सद्गुरुकेसबहंस हैं जानशीं। परमपुरुषके सारशब्द अभी ॥
बयालीस जबतक रहेंगे वजीर। जहांमें न जाहिरफिरेंफिर कबीर ॥

बहर एक करमाँ खाई खिताब । कहे हैं खुदावन्द ऐसा हिसाब ॥
बरसइनके पच्चीस ओबीसरोज । हरकेतख्तपरहोवेंरौनकफिरोज ॥
हजार एक ऊपर दो पञ्जाहसाल । महेतीनदिनबीसगद्दीबजाल ॥
इतेरोज सतपुर्ष फरमान है । जो आवे शरण सोई निर्वान है ॥
जो सतपुर्षके हंस गायब हुए । न होंबहर:वरकोइजो साहब हुए ॥
यहकलियुगमेंसतयुगगुजरजायगा । पुरुषकालकाअहदतबआयगा
करे आदमीफिरजोतदबीरकोट । कभीसोसकेनाबचाययमकी चोट ॥
मेरी बात जो कोइ जाने दरोग । कभीफेर उसको न होवे फरोग ॥
परमपुर्ष पीरों शनासिन्दगां । उसी लोक जावेंगे सो वन्दगां ॥
यहकलियुगमें सतयुगलगी है लडी । वहरसिम्तहैआवेहैवांवाझड़ी ॥
हैंगुरुमुखकोईउसकेनोशिन्दगां । जोसतगुरुमोब्बतमेजोशिन्दगां ॥
जोउसगुरुकेमिलनेकीकोशिशकरे । अजरओअमरजाम:पोशिशकरे
जो पहचानसोई हैं शाहशहाँ । न जाने जिन्हें आदमी इबलहां ॥
बयालीसका जबसे ठीका हुवा । नइनसानका बाल बीकाहुवा ॥
यह माहूद ठीका जो पूरा हुवा । तो यमजालका फिर जुहूरा हुवा ॥
मो इसअदहमें हो कोई बख्तमंद । जेदे बामबाला बनामें कमंद ॥

गजल

बयालीसवंशतगुरुकीनिशानी । हैं बखशिन्द:हयातेजानहानी ॥
उसीहमशक्ल सबनाखुदायह । रहे दुनियांमें जबतक यह कहानी ॥
सनाख्वानीहैंकरतेहंसजिनकी । कहे सौबारसत गुरुखुद जबानी ॥
तमीजो अक्ल से खुद परखलीजे । मकांमें हंस आये कामकानी ॥
दरोगोरास्त अब पहचाना होगा । जो मुतफर्रिक करेंगे दूधपानी ॥
कदमउनकेपकड़परवाज कर अब । गुजरबग चालसे अपने दुरानी ॥
हवासे अक्ल ओ हम लंगपा हैं । वहां पहुँचे नकुरआं वेदबानी ॥
समझओ बूझकरलीजेखमोसी । अब जसिरके मिलेगी आसमानी ॥

करे क्या यह बनी आदम बेचारा। मददपावे न जबतक आसमानी॥
पेयालाइश्क पीकर मस्त होजा। जो चाहें चेहरै खुद अरगवानी॥
पडे खाते हैं गोता भेष पाखंड। बरहमन भाट औं मुल्ला कुरानी॥
मेहर हो गाय बकरी मुरगिया। खुदावन्द मोहाफिजपासवानी॥
उतरचलपारइसदरियाकेआजिज। हुई तुझपरजौमुरशिदमेहवाणी॥

यह चार गुरु तथा बयालीस वंश जो मुख्य कबीरपंथी कहलाते हैं उनका विवरण हो चुका। इस समय धर्मदासके साहबके वंश उपस्थित हैं और उन्हींके पंथ दिखानेसे समस्त मनुष्य सत्यलोकको जाते हैं। दश स्थानोंका चिह्न जो मैंने दिया उन सब स्थानोंका पंथ इन्हींकी दया द्वारा प्राप्त होता है और नौ स्थानोंका पार करके दशमें स्थानको पहुँचता है। इन समस्त स्थानोंके बीचमें शून्यकी डोरी लगी हुई है। वे शून्य (खला) की डोरियाँ हैं उन डोरियोंके भिन्न २ नाम कबीर साहबने कहे हैं। उन डोरियों पर सत्यगुरुके पंथ दिखानेसे हंस चढ़कर पार जाते हैं। जबलों पारख गुरु नहीं मिलता तबलों उन डोरियोंकी तनिक भी सुध नहीं मिलती। ये गुरु लोग भवसागरके पार उतारनेवाले हैं। उनकी प्रशंसा अनेक बेर स्वयम् कबीर साहबने की है। देखो ग्रन्थ श्वासगुञ्जार।

साखी-बिरछा नाहीं फल भखैं, नदी न अचवैं नीर।
परमारथके कारणे, सन्तन धरा शरीर।
सन्त बड़े परमारथी, धन जो बरसै आय॥
तप्त बुझावे औरकी, अपनो पारस लाय।
साधु सराहैं ताहिका, जाको सतगुरु टेक॥
टेक बनाए देह भर, रहे शब्द मिल एक।
सत्य शब्द हित जानके, सुमिरे सतगुरु धीर॥
धरमदास तुम वंशको, सिरज्यो गुरू कबीर।

चौपाई

सत्य सुकृति सुमिरो मन माही। टूटत बज्र राखलेउ ताही।

साखी-सत्य सुकृतिकी बालक है, जो चितवै कर डीठ।
ताजन तोरौ चौहटे, गुनहगारकी पीठ॥
जदिया कहूँ तो जगतैं, परकट कहो न जाय।
गुप्त परवाना देत हौं, राखो शिरै चढ़ाय॥
जिन डरपो तुम कालका, कर मेरी परतीत।
सप्तद्वीप नौ खण्डमें, चलिहौ भवजल जीत॥

यहांलों तो चार गुरु और बयालीस वंशका लेखा लग चुका है इनके अतिरिक्त कबीर साहबके बारह पंथ और भी कबीर-पन्थी ही कहलाते हैं।

कबीर साहबके पंथोंका वृत्तान्त

१-नारायणदासजीका पंथ। २-यागौदासजीकापंथ। ३-सूरत गोपाल पंथ। ४-मूलनिरञ्जनका पंथ। ५-टकसारी पंथ। ६-भगवान्‌दासजी का पंथ। ७-सत्यनामी पंथ। ८-कमालीपंथ। ९-राम कबीर पंथ। १०-प्रेमधामकी वाणी। ११-जीवा पंथ। १२-गरीबदास पंथ।

यह तो कबीर साहबके बारह पंथ हैं। इनमें कोई २ अच्छे हैं। और कोई निर्बल विश्वासके हैं। और रामकबीरके लोग ठाकुरपूजा करते हैं। और सत्यनामियोंके ध्यान भी विचलित प्रायः हैं। इन बारह पंथोंका यही विवरण है और इन बारह पंथोंके अतिरिक्त कबीर साहबके और पंथ भी हैं।

कबीर साहबके भिन्न २ पंथोंका वृत्तान्त

नानकपंथ-दादू पंथ-यानिप पंथ-मूलकदास पंथ-गणेश पंथ इत्यादि।

इन पंथोंके अतिरिक्त हिन्दू और मुसलमानोंमें कबीर साहबके कितने ही पंथ हैं जिनकी यथार्थता अभीलों भली भांति ज्ञात नहीं हुई है इस कारणसे मैं कुछ लिख नहीं सकता हूँ। और कितने पंथके लोग ऐसे हैं कि, जिनके पंथके मनुष्य अब कबीर साहबको नहीं मानते सुतरां नानकशाह और दाउद राम और शिवनारायणदास इत्यादि।

जो लोग कबीर साहबको नहीं मानते उनका नाम शिष्योंमें लिखना किसी प्रकार युक्तिसंगत नहीं है। तो भी यह नहीं कहा जा सकता है कि, जो कबीर साहबको नहीं मानते हैं उसमें उनके गुरुओंका दोष है. अथवा उनके पंथदर्शकोंका जिसको दोष होगा वही दोषी माना जावेगा।

महाप्रलयका वृत्तांत

महाप्रलयके विवरणका निचोड़ यह है कि, प्रलयके अनेक भयानक चिह्न परिलक्षित होंगे और पृथ्वीपर पाप विशेष होंगे। महाप्रलयके सवासौ वर्ष पूर्वपर्यन्त बराबर ग्रहण लगता जावेगा, एकसौ वर्ष पर्यन्त बराबर चन्द्रग्रहण होगा और इसके उपरान्त सूर्यग्रहण होगा जब सूर्य और चन्द्रग्रहण समाप्त हो चुकेगा तब महाप्रलय आवेगी। इतनी पानीकी विशेषता होगी कि, पृथ्वीसे ऊपर इतना ऊँचा चढ़ेगा कि, जलकी लहर व झाग दश सहस्र योजन ऊँची उठेगी और समस्त जीव मर जावेंगे और समस्त शून्य हो जावेगा। पृथ्वी तथा आकाशमें कहीं कुछ दिखलाई नहीं देगा। और समस्त संसारकी रचनाको कालपुरुष समेट लेगा। और पांच तत्त्व तीन गुण कालपुरुषमें समाजावेंगे और आद्याको कालपुरुष निगल जावेगा। और निरंजनके मस्तकमें एक अर्ध गोलाकार

प्रसादशृंगके समान एक स्थान है उसी स्थानमें समस्त रचना सूक्ष्म वेषमें होकर प्रवेशित हो जाती हैं। और समस्त रच-नाको वह अपने मस्तकके उसी विशेष स्थानमें रख लेता है और समस्त रचनाको अपने शिरके बीचके गुम्बदमें लिये हुए सत्तर युगपर्यन्त बराबर शून्यमें फिरा करता है, सत्तरयुगके उपरान्त उसका चित्त व्याकुल होता है। जब एकान्त होनेके कारण उसके मनमें अत्यन्त घबराहट होती है और उससे कुछ हो नहीं सकता है और वह अपने चित्तमें यह सोचता है कि, मैं स्वयम् सत्यपुरुष हूं और वह बल अपनेमें नहीं पाता और दुःखी होता है कि अब क्या करूं ? तब वह सत्यलोककी छाया अर्थात् आस पास जाकर निवेदन करता है तब समर्थ-की आज्ञा होती है कि, ऐ ज्ञानी ! शून्यमें निरंजनके पास जाओ और कहो कि, वह जाकर अब कूर्मजीकी पीठके ऊपर तीन लोककी रचनाका प्रस्तार करे। उस समय ज्ञानीजी सत्यपुरुका समाचार लेकर निरंजनके पास जाते और समर्थ की आज्ञा सुनाते जब पुरुषकी आज्ञा सुनता है, उसी समय निरंजन दौड़कर कूर्मजीकी पीठके ऊपर तीनों लोककी रच-नाका सामान करते। तब निरञ्जन अपने मुँहसे आद्याको उगल देता और आद्या तथा निरञ्जन मिलकर तीन देवताको उत्पन्न करते फिर पांचों मिलकर सब सृष्टिकी उत्पत्ति करते और पहले सत्यस्वरूप सृष्टि उत्पन्न होती है और सब लोक नितान्त ही धर्मात्मा होते हैं और जैसा कुछ कि, मैंने पूर्वमें लिखा है उसी प्रकार समस्त रचना प्रकट होती है। इस प्रकार उत्पत्ति, स्थिति तथा विनाश हुआ करता है। और जब उत्पत्ति होती है तब इसी प्रकार कबीर साहब मनुष्योंकी शिक्षा

के निमित्त पृथ्वीपर आया करते और मनुष्योंको मुक्ति प्रदान किया करते हैं।

यह तो ब्रह्माण्डके महाप्रलयका विवरण हुआ और इसी प्रकार पिंडकी प्रलय भी होती है। कारण यह कि, जो कुछ पिंडमें है सोई ब्रह्माण्डमें है तनिक भी न्यूनता नहीं है। परन्तु सबसे बड़ा महाप्रलय भी एक दिवस होगा। जब केवल एक सत्यपुरुष और सत्य लोकही रह जावेगा और कहीं कुछ न रहेगा। अर्थात् दयाद्वीप नासूतसे लेकर सहज द्वीप अर्थात् आहूत स्थान पर्यंत सब विलोपित हो जावेंगे। केवल सत्य-लोकमें ही शान्ति रहेगी। और सत्य लोकके हंस सब सुरक्षित और सत्यपुरुषकी रक्षामें सदैव समान रहेंगे।

कबीर साहबके अन्तर्धान होनेका वृत्तान्त

जब काशीके मनुष्योंने कबीरसाहबकी अनेक लीलाएँ देखली और जान लिया कि, यह तो स्वयम् परमेश्वर हैं और न किसीके मारनेसे मरते हैं न काटनेसे कटते हैं और न डुबानेसे डूबते हैं और न जलानेसे जलते हैं और न कोई हथियार आपके ऊपर फलित होता है और न मनुष्य तथा पशु और देवता आदि आप पर किसी प्रकारकी क्षति पहुँचा सकता है। तब उन लोगोंने आपसे पूछा कि, आपकी मृत्यु क्यों कर होगी? उस समय आपने कहा था कि मैं मग्गह देशमें जाकर छिप जाऊंगा। अपने कथनानुसार जब कबीर साहब एकसौ बीस वर्ष पर्यंत काशीजीमें रह चुके। दो दिवस आपके जानेमें शेष रह गए तब आपने लोगोंसे कहा कि, अब मैं यहांसे कूच करूंगा और मग्गह देशको जाऊंगा-वहां छिप रहूंगा। यह बात सुनकर

काशीके लोगोंको अत्यन्त दुःख हुआ और दुखका बादल काशीजीपर छा गया और लोग अत्यन्त दुखित हुए और कहने लगे कि, आज काशी शून्य तथा उजाड़ जान पड़ती है। आज काशीका सूर्य छिप चला और नेत्रोंके सामने अन्धकार होने लगा, सब लोग कहने लगे कि हाय! हम बड़े ही अभागे हैं हमने ऐसे सत्यवादी महात्माकी आज्ञाको अंगीकार नहीं किया। समस्त नगरमें इस बातकी धूम मच गई कि, अब कबीर साहब काशीजीसे चले जावेंगे। समस्त नगर दुःख तथा कष्टसे भर गया। काशीके लोग हाहाकार करते और कहते थे कि अब हम क्या करेंगे? हाय! हमने ऐसे महात्माका कहना नहीं माना। पीछेसे खरा खोटा जान पड़ता है। अबलों हम लोगोंको दिखलाई नहीं दिया। राय वीरसिंह बघेल राजा बनारसने जब सुना कि, सतगुरु मग्गह देशको जावेंगे वहां जाकर अन्तर्धान हो जावेंगे। अब जानेके केवल दो दिवस शेष बचे हैं तब उक्त राजा अपने दलबल सहित पहलेहीसे वहां जा पहुँचा और वहांपर सत्यगुरुकी प्रतीक्षा कर रहा था। काशीवासी कबीर साहबको घेर रहे थे और उस समय आपके समीप दश सहस्र सेवक शिष्य उपस्थित थे, उनमें कुदराम पड़ रहा था और सब बिलाप कर रहे थे और मग्गह देशका अधिपति नब्वाब बिजलीखां पठान था। वह पठान कबीर साहबका शिष्य था। जब उसने सुना कि, कबीर साहब अपना अन्तिम दिवस यहां करेंगे तब बड़ा प्रसन्न हुआ कि, भली बात हुई कि, सत्यगुरु अपना अन्तिम दिवस यहां करेंगे मैं अंतिम क्रिया तथा कफन दफन सब कुछ अपने मत्यनुसार करूँगा। वह आपकी प्रतीक्षा

कर रहा था और कबीर साहब काशीसे चलकर मग्गहदेश को जा पहुँचे । आमी नदीके किनारेपर किसी साधुकी कुटी थी इस कुटीमें जाकर वह बैठ गये । और इस समय राजा बीरसिंह और नौवाब बिजलीखाँ और कबीर साहबके बहुत सेवक और शिष्य थे। वह नदी जिसके किनारेपर कबीर साहब आकर बैठ गए थे, वह अनेक दिवसों शुष्क पड़ी थी तब कबीर साहबने गुप्त रीतिसे कमलपुष्प तथा दो चादरें मँगाई और आप लेट गये और लोगोंसे कहा कि, अब ताला बंद कर दो । तब राजा वीरसिंहने कहा कि, गुरुजी मैं आपके शवको लेकर हिन्दू धर्मानुसार क्रिया कर्म इत्यादि करूंगा । तब नौवाब बिजलीखां बोले कि, मैं आपको ऐसा कदापि करने नहीं दूंगा, मैं मुसलमानधर्मानुसार उनकी कफन दफन करूंगा, तब कबीर साहबने देखा कि, ये दोनों युद्धके निमित्त प्रस्तुत हैं, इसमें व्यर्थका रक्तपात होगा और दोनों-को युद्धके निमित्त प्रस्तुत-दोनोंको दलबल सहित-प्रस्तुत पाया । तब आपने दोनोंसे समझाकर कहा कि, सावधान दोनों आपसमें विवाद न करना और कदापि शस्त्र मत चलाना जो मेरी बात मानेगा सो प्रसन्न रहेगा, और सत्यगुरुकी आज्ञाको दोनों दलने स्वीकार कर लिया । तब सबोंने सत्यगुरुको दंडवत् प्रणाम किया और सबका चित्त खेदसे भर गया तब कबीर साहबने चलानेका शब्द पढ़ा और चादर तानकर लेट गये अपने मुंहपर कपड़ा ले लिया और लोगोंसे कहां कि, अब इस कोठरीका ताला वन्द कर दो लोगोंने वैसाही किया । जब ताला बन्द किया तब एक ऐसा शब्द हुआ कि, जिसको सुनकर उपस्थित मनुष्योंके चित्तपर बड़ा प्रभाव पड़ा और जयजयकार हुआ कि, सत्यगुरु सत्यलोकको सिधार गये ।

जब उस कोठरीका ताला खोला तब केवल दो चादर मिले और कुछ कमलके पुष्प मिले, इनमेंसे एक चादर और आधे फूल राजा वीरसिंहने लिये और दूसरी चादर और कमलके फूल नौवाब बिजलीखांने लिया । कबीर साहबका शव कहीं दिखलाई नहीं दिया । राजाने चादर तथा पुष्प लेकर सत्यगुरु की समाधि काशीमें बनायी और बिजलीखाँने भी समाधि बनायी जो मगहरमें है ।

हिन्दू मुसलमान दोनों गुरुभाइयोंने एक मंदिर बनाया । अद्यापि हिन्दू मुसलमान दोनों कबीरपंथी वहां मौजूद हैं । आमीनदी जो बहुत कालसे शुष्क पड़ी थी उसमें जल भर गया । जो अबतक प्रवाहित है, अगहन सुदि एकादशी सम्बत १५७५ विक्रमीको कबीर साहब छिप गये ! अन्तिम प्राकट्य में एक सौ उन्नीस वर्ष पाँच महीने और सत्ताईस दिवसों पर्यंत आम पृथ्वीपर लोगोंको शिक्षा देते रहे थे ।

कबीर साहबका आदि और अन्तमें शरीर नहीं था केवल एक तेजका प्राकट्य था । ऐसा ही कबीर साहबका प्रकट होना तथा छिप जाना है । जब इच्छा हो तब प्रकट हों और जब इच्छा हो तब छिप जावें । जब कबीर साहब मगहरमें गुप्त हुए तब पुनः मथुर नगरमें प्रकट हुए, वहां रत्नको शिक्षा देकर फिर धर्म्मदासजीको बाँधोगढमें दर्शन देकर उनको सब सत्यपंथका पथ और धर्म्म धर्म्मकी राह बता बयालीस वंशके नियम भली प्रकारसे कह और कालपुरुषके कपट जालसे भली भांति सावधान करके अन्तर्धान हो गये ।

गजल

खुरशेद परख परतव मालूम हुआ है इन्सान खबर खैरसे

महरूम हुआ है ॥ आई जो खिजां और गया वक्त बहारी । बुलबुल गुजरा जाए नशीं बूम हुआ है । है कौन जहांमें जो मिटा डाले वह तस्तीर । जो कुछ कि कजा काजी से मरकूम हुआ है ॥ तकदीर बयक नाकः बिठाला है दो महमल । एक नेकतुमा दूसरा बदशूम हुआ है बाकी न रहे और कहीं शम्स शोआय । अफवाज लिये तब महे मालूम हुआ है ॥ पा खाक तेरेसे धरा एक जर्रः सर अपने । सो रहम दो दारैन का मौसूम हुआ है ॥ जो जहर मो अस्सर बहमः सालिको मसलूक । हर इन्स व जिन उससेही मसमूम हुआ है ॥ आई सब और पुश्त दिखाया शहे आदल । रैयत जमाः जम जोरसे मजलूम हुआ है । इस अहदमें कोई न सुन मर्दुम फरियाद । मखलूक मलिक मौतका महकूम हुआ है ॥ है मौत का चारः आदम जाद बिचारः । अज रोजे अजल उसके ही मकसूम हुआ है ॥ क्या कह सके तुझसे न कहा जाय सो आजिज । जो कुछ कि तुझे गैंबसे मफहूम हुआ है ॥

कबीरपंथके धार्मिक नियम

कबीर मन्शूरसे

१–एक अविगत अतीत ब्रह्म सत्य पुरुषकी भक्ति करना, उसके अतिरिक्त किसी ओर भी ध्यान न करना । वह ब्रह्म (सत्य पुरुष) केवल पारख गुरुकी शिक्षा और स्वसंवेदक अध्ययन (पढ़ने) से जाना जाता है, अन्य कोई भी मार्ग उसके प्राप्तिका नहीं है ।

२–सत्य पुरुष और कबीर साहब एकही हैं, केवल नाम मात्रका ही भेद है ! वह एकही दो नामसे कहे जाते हैं, उनमें

लेशमात्र भी भेद नहीं समझना, जो भेद समझेगा उसकी मुक्ति होनेमें भी भेद रहेगा ।

३-अपने गुरुकी सेवा तन, मन, धनसे करना । गुरु बचन का विश्वास करना । गुरुका आज्ञाकारी रहना । सत्य कबीर और गुरुमें कुछ भी भेद न समझना, गुरुके ऐश्वर्य्य और सिद्धि आदिका विचार न करना । जो अपने गुरु को ईश्वर करके मानता है और ईश्वरके समान ही उसमें भक्ति रखता है उसीका कार्य्य पूर्ण होता है । जो गुरुमें भेद बुद्धि करता है वह हतभाग्य सदा निष्फलता ही पाता है ।

अपने उपार्जनका दशवाँ भाग अवश्य गुरुके भेंट करना । सदा अधीनतासे गुरुका धन्यवाद करते रहना ।

४-साधुकी सेवा, भेदबुद्धि त्यागकर, सदा प्रेम और भक्तिसे करना जिसपर सत गुरुकी दया होती है, वही दोनों लोकोंमें भाग्यवान होता है । वही दोनों लोकोंमें सफलकाम होता है ।

सर्व प्रकारकी साधुओंकी सेवा निष्कपट हृदयसे करना परन्तु ज्ञानी विचारवान, विवेकी पारखी सन्त जो सत्य पुरुकी भक्तिका उपदेशकर सदाचरणमें लगावें, उनकी सेवामें सदा तत्पर रहना । विशेषतः स्वधर्म्मके सच्चे विवेकी सन्तोंकी शिक्षाको सावधानीसे सुनना और उनको ध्यानपूर्वक विचारना चाहिये क्योंकि, स्वधर्ममें पूर्ण और दृढ़ सन्तोंके वचनसे धर्ममें दृढ़ आस्था और स्वधर्म प्रवीणता होती है।इसके उलटा परधर्म (विपक्षीधर्म) के पक्षपाती साधुओंके वचनसे स्वधर्ममें अश्रद्धा और भ्रम होता है ।

---

१ पर धर्मके पक्षपातीको अपने धर्म पुस्तकमें भी किसी प्रकारसे हस्ताक्षेप करने न दे । उनसे कभी भी अपनी धर्म पुस्तकके शुद्ध करने अथवा अनुवाद आदिकी अभिलाषा न करे ।

जिस साधुमें अपने गुरुसे मिलते हुए गुण पाये जावें उसको अपने गुरुसे भिन्न न समझना, अभेद बुद्धिसे श्रद्धापूर्वक निष्कपट भक्ति करना।

५-सर्व चराचर जीवधारियों पर समान भावसे दया रखना किसी स्वरूप आकारमें भी कोई जीवधारी हो सबको अपने शरीर और आत्मा समान जानना। किसी देशकालमें भी किसी जीवधारीको दुःख न देना। संसारमें अपना निर्वाह इस प्रकार करना कि कभी भी अपनी ओरसे किसी जीवधारीको किसी प्रकारकी हानि न पहुँचे। सब जलचर, थलचर, वनचर, पशु, पक्षी, स्थावर जंगम पर समान दया दृष्टि रखना, सबको अपने ही शरीर और प्राणके समझना।

६-मांस आहारको सब घोर पापोंमें बड़ा पाप समझना। मांस अहारी चाहे कैसे भी गुण और पुण्यसे पूर्ण क्यों न हो परंतु कभी भी वह सत्य मार्गको प्राप्त नहीं कर सकता। मांसाहारी आत्मज्ञानका अधिकारी नहीं हो सकता, उसकी मुक्ति कदापि नहीं हो सकती।

७-मदिरा तथा अन्य सर्व मादकपदार्थ भी मांसके समान ही त्याज्य हैं। कोई मादकपदार्थका व्यसनी ध्यान नहीं कर सकता, ध्यान बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता, ज्ञान बिना मोक्ष नहीं मिलता।

८-व्यभिचारी नर्कको प्राप्त होता है।

९-जितने आकार और रूप ब्रह्माण्ड हैं वे बुत कहलाते हैं, उनमेंसे किसीको भी पूजनेवाला मोक्षका अधिकारी नहीं हो सकता। जिस प्रकार बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) ज्ञान

१--आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति।

मार्गकी टट्टी है, उसी प्रकार गुरु मूर्तिका ध्यान और उसकी भक्ति, ज्ञानद्वारकी कुंजी है।

१०-जो कुछ भोजन, छाजन आदि अर्थात् अपने यात्रा सम्बन्धी पदार्थ होवे, सो सब प्रथम परमात्मा (सत्यपुरुष) को अर्पण करले तब स्वयम् स्वीकार करना।

कोई भी पदार्थ जो प्रथम किसी देवी देवताको अर्पण हो चुका हो उसे सत्यपुरुषके भक्ति करनेवालेको कदापि ग्रहण न करना चाहिये उसे कभी भी अपने काममें न लाना चाहिये क्योंकि सत्यपुरुषको अर्पण किये बिना किसी भी पदार्थका ग्रहण करना महापाप है और जो पदार्थ दूसरे देवी देवताको भोग लग गया वह सत्यपुरुषको अर्पण हो नहीं सकता क्योंकि दूसरे देवका अर्पित पदार्थ सत्यपुरुषको अर्पण करना एक तुच्छ सेवकके जूठे पदार्थका बादशाहको अर्पण करनेके तुल्य महान अपराध और अनर्थका कर्ता है।

सत्यपुरुषको भोग लगाये बिना भी कदापि कोई पदार्थ ग्रहण न करे। जो सत्यपुरुषको अर्पण करके किसी पदार्थको ग्रहण करता है उसका फल अमृत समान मिलता है इसलिये उचित है कि, अत्यन्त शुद्ध और स्वच्छ भोजन आदि काममें लावे।

११-न झूठ बोलना न झूठ वचन देना, न झूठे का संग करना और न झूठेसे किसी प्रकारका व्यवहार करना।

१२-न चोरी करना, न चोरोंको साथ देना, न उनकी सम्मतिमें सहमत होना, न उनको सम्मति देना न उनका माल लेना, न उनके निकट जाना।

१३-जूआ न खेलना, जूआ महान दुखका घर है,

जुआरियोंकी महान् दुर्दशा होती है। महाराज नल, महाराजा युधिष्ठिर आदि पुण्यस्वरूप धर्मावतारोंको भी इस जूआने कैसा नष्ट और दुर्दशाग्रसित कर दिया। जूआ, झूठ, चोरी, व्यभिचार और हिंसा आदि सब पाप परस्पर ऐसे संबन्ध रखते हैं कि, एक दोष आनेसे क्रमशः सर्व आपही आप आ जाते हैं। इनमेंसे एकको भी धारण करनेवाले पुरुष महान् कष्ट और दुःखोंको संसारमें अनुभव करते हुए परलोकमें नर्कके भागी होते हैं।

१४–शरीरके ऊपर द्वादश तिलक लगाना, कपालमें खडी लकीरके समान सीधी तिलक करना, वैसे ही मस्तक, दोनों आंख, नाभि, हृदय, दोनों भुजा और दोनों छातीसे लेकर मोढे-की ओर फिरता हुआ, पीठपर और कानपर तिलक करे।

१५–वस्त्र श्वेत और उज्ज्वल रखे।

१६–ग्रीवामें तुलसीकी माला और तुलसीकी कंठी धारण करे।

१७–सत्य नामका जप, कीर्तन और भजन करे।

१८–सत्य पुरुषकी भक्ति और सत्य पंथका उपदेश करे।

एक मनुष्यको सत्य पुरुषकी भक्ति और सत्य पंथमें प्रवेश करानेका फल क्रोड़ों गऊको कसाईके हाथसे बचानेके पुण्यसे भी बढ़कर है।

१९–यंत्र[1], मन्त्र, तन्त्रादिकी ओर कभी ध्यान भी न दे, ये मुक्ति और भक्तिके शत्रु हैं, इनका साधन करनेवाला छल कप-टके व्यसनमें फँसकर महा दुराचारी हो नर्कका अधिकारी होता है, जितने तन्त्रादिके साधन हैं सब नर्कके मार्ग हैं।

२०–स्वसंवेद[2]के बिना दूसरी पुस्तकोंसे मुक्तिपथ मिलनेकी

१ यंत्र मन्त्र तन्त्रका आशय देखो, पण्डित श्रद्धामणि फिल्लोरी विरचित सत्यामृत प्रवाह पृष्ठ १८० में।

२–वेदादी विद्या सबै, बोध हेतु हिय धार। सब मत महरम करे, तब देखो निजसैन॥

आशा न रखना, परन्तु अन्य पुस्तकोंको बोध और ज्ञान वृद्धिके हेतु पढ़ना।

२१-सत्य कबीर और उनके सच्चे हंस और कड़िहारके अतिरिक्त दूसरेको मुक्तिपथका दर्शन नहीं समझना।

२२-पारख गुरुकी शिक्षा बिना मुक्ति कदापि नहीं हो सकती।

२३-सत्य पुरुषकी भक्तिके अतिरिक्त अन्य सब भक्तियां भवसागरमें डुबानेवाली हैं।

२४-तीर्थ, व्रत आदि सब यमके बन्धन हैं।

२५-नौधा भक्ति और चार प्रकारकी मुक्ति सब बन्धनही हैं।

२६-निर्गुण और सगुणके ध्यान करनेवाले सदा बन्धनमें रहते हैं।

२७-हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहुदी आदि सब जाति और धर्म्मके लोग कबीरपन्थमें मिल सकते हैं सबके हेतु समान ही भक्ति और मुक्ति है।

२८-नर्क स्वर्ग तथा अन्य सर्व लोक अज्ञानियोंके हेतु ठहराये गये हैं जिसको सत्य आत्मज्ञान प्राप्त हुआ उसके हेतु सब असत्य और भ्रममात्र हैं।

२९-सार शब्दके अतिरिक्त मुक्तिका द्वार कोई भी नहीं।

३०-निन्दा, ईर्षा, वैमनस्य, छल, कपट, अभिमान आदि मुक्तिके शत्रु हैं।

३१-अधीनताके द्वारा सर्व शुभगुण और पुण्य प्राप्त होते हैं।

३२-मुक्ति मार्ग बहुत सांकरा और नर्कका मार्ग बहुत चोड़ा है।

१-कबीर-हम बासी वहि देशके, जहां जाति वरण कुल नाहिं। शब्दमिलवा होय रहा, देह मिलावा नाहिं॥ जाकी मर्यादा जौन विधि, वरते सोई प्रमान। जमा मांहि कछु भेद नहीं, उज्ज्वल धर्म औ ज्ञान।

३३-कबीर साहब विदेह हैं उनका देह कभी नहीं कल्पे ।

३४-कैसीहू विपति क्यों न आन पड़े अपने सत्यगुरुके अतिरिक्त किसी दूसरेकी सहायताका ध्यान न करें । सत्यगुरुके अतिरिक्त किसीसे भी किसी प्रकारकी आशा न रखे ।

३५-जो कोई सतगुरुकी शरणमें आवे उसे शरणके नियमोंको भली प्रकार पूर्ण करना उचित है । पूर्ण विश्वास रखे कि सत्य गुरु अवश्य कालके जालसे निकालेगा और दुःख सागरसे पार करेगा ।

३६-सत्यगुरुकी कृपाका धन्यवाद कभी न भूले, क्षण क्षण में धन्यवाद ही देता रहे । ऐसा नहीं कि, प्रथम तो प्रार्थना करता रहे और पश्चात् भूल जावे । कृतघ्नी कभी भी मुक्त नहीं होता ।

३७-ईश्वरीय भय मुक्तिका चिह्न है मृत्युको सदा स्मरणमें रखना ।

३८--सच्चे प्रेमके विना भक्ति निष्फल है ।

३९--धन्य हैं वे जो शरीरका मोह छोड़कर भक्तिमें लगते हैं ।

४०--उदारताके बिना कोई भी भक्तिता पद प्राप्त नहीं कर सकेगा । उदार दोनों लोकमें सुखी होता है उसका थोड़ा पुण्य भी बहुत फलदायक होता है । कृपणके भजन और तपस्या निष्फल होते हैं,चाहे वह जितना भक्ति और भजनका ढोंग करे परन्तु निष्फलताके अतिरिक्त उसको कुछ भी प्राप्त न होगा । कृपण दोनों लोकमें दुःखका ही भागी होता है ।

४१--मौन परम उत्तम गुण है । आवश्यकताके अनुसार यथा अवसर बोलना, निरर्थक बकबक न करना । मिथ्यालाप करनेसे आत्मा और शरीर सबकी हानि है ।

४२-सत्यगुरु (कबीर साहब) की वाणीका पाठ करना, बारम्बार मनन करना, उनके आशयके ऊपर विचार करना, उसके भेदको भली प्रकार सोचना, समझना और सदाकाल उन्हींका चिंतन रखना उनके आशय समझनेमें कोई भी युक्ति उठा नहीं रखना। सत्यगुरुके शब्दोंको यथा अवसर गाना और कीर्तन करना, सत्य गुरुकी प्रशंसा और प्रार्थना सदा करते रहना।

४३-जितने धर्म संसारमें प्रचलित हैं सबके आचार्य्य कबीर साहब हैं परन्तु मुक्तिदाता तो स्वयम् (कबीर साहब) और चार गुरु तथा उनके वशोंकोही ठहराया है, अन्यको नहीं।

४४-किसीको कभी शाप न देना,किसीको कुवचन न कहना, न किसीका अहित चिंतन करना।

४५-परमात्माको सर्वत्र पूर्ण जानना। किसी प्राणीको भी दुःख देनेको ईश्वरको दुःख देनेके तुल्य जानना।

४६-अभिमानी कभी परमात्माको व्यापक नहीं देख सकता।

४७-गुरुकी आज्ञाकारिता परम तपस्या है।

४८-जबतक शरीरसे लाड़ प्यार है उसकी पोषणमें वृत्ति लगी है तबतक आज्ञाकारिता असम्भव है।

४९-मूर्ख, शठ और विद्याहीनको मुक्तिपद कदापि नहीं मिलता।

५०-जबतक शरीरका भय और चिंतन है अर्थात् देहाभिमान है तबतक विदेह कदापि प्राप्त नहीं हो सकता। जो स्वयम् विदेह हो वही विदेहको प्राप्त हो।

कबीर साहबके लोक और हंसोंका वृत्तांत

कबीर साहबका वह लोक है जिसका गुण कहने और सुननेके बाहर है, केवल स्वसंवेद थोड़ासा विवरण करता है

जिस समय उस लोकको हंस चलते हैं उस समय उनके प्रतापका वर्णन कुछ किया नहीं जा सकता है, उनके सौन्दर्यका बखान किससे हो सकता है जिनका एक एक बाल ऐसा देदीप्यमान और तेजमय है कि, जिसके सामने करोडों सूर्य और चन्द्र छिप जावें, उनके सौन्दर्य्यका वर्णन कौन कर सके उन हंसोंके मनमें तनिक भी बासना नहीं रहती है और निरंजन, आद्या, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ऋषि, मुनि इत्यादि वासनाके ही अधीन हो वारम्वार संसारमें जन्म लेते हैं। राम कृष्ण सिद्ध साधु इत्यादि सब धर्म वासनासे जन्म लेते हैं।

जिस समय कोई मनुष्य मरता है तब उत्तरकी ओर होकर ऊपर चलकर प्रथम विष्णुके निकट अपने पाप पुण्यका लेखा देनेके निमित वैकुण्ठको जाता है और जब हंस कबीर चलते हैं तब सत्यगुरुके शब्दके लवद्वारा अपने पूर्ण बलसे ऊपर की ओर चढ़े चले जाते हैं जब ब्रह्माण्डके पार हुआ चाहते हैं तब धर्मरायकी तीन सौ साठ कन्या मिलती हैं जिनके वस्त्र आभूषण और सौन्दर्य आदिका मैं क्या विवरण करूँ? सत्यकबीरके अतिरिक्त ऐसा कोई भी तीनों लोकोंमें नहीं है कि, उनको देखकर आसक्त न हो जावे; वे कन्यायें उस स्थानपर इस कारण नियत की गई हैं कि, हंस कबीरको अपने जालमें फँसालेवें जब वे हंस कबीरके निकट जाती हैं तब नाना प्रकारके हावभाव कटाक्ष द्वारा उनको मोहित करना चाहती हैं। परन्तु वे उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते। वे कहते हैं कि, दूर हो और चली जा तुम्हारी तनिक भी इच्छा तथा कामना हमको नहीं है। तब वे निराश होकर लौटती हैं। भला मकडीके जालमें भारी पदार्थ कैसे फँस सकते हैं। जब

हंस उनको अनादर करके चलते हैं तब आगे धर्मराय मिलते हैं दंडवत् प्रणाम करते हैं और हंस ऊपरकी ओर चले जाते हैं। जब सत्यलोकको पहुँचते हैं तब सत्यलोकके हंस उनकी अगवानीके निमित्त बाहर निकलते हैं और प्रत्येक हंस अपने हृदयसे लगता मिलता और प्रसन्न होकर कहता है कि, बहुत दिवसोंके पृथक् हुए हंस आज हमसे आकर मिले। समस्त हंस मिलकर उनको सत्य पुरुषके निकट ले जाते हैं और वे हंस सत्य पुरुषका दर्शन पाते और दंडवत् प्रणाम करके कृतार्थ हो लोकमें बास करते हैं।

शेर

मुर्गे रूह आखिरी नफसको। जब छोड़े इस उनसरी कफसको॥
सतलोक सिधार साथ सतमाज। उसवक्त करे बुलन्द परवाज॥
दर सिम्त शुमाल सरबसर जाय।बासुर अत सो उबूर कर जाय॥
वह नूरो जलाल बेबयाँ है। गुफ्तारे कबीरमें अयाँ है॥
जब सुकृत लोक रूबरवाँ हो। रागोरंग देखते दवाँ हो॥
देखे कही सब्जः लाल जारों। बाहुस्नोजमाल गुलअजराँ॥
सदहा गुलशन चमनबहारी। शीरीं नहरों पुर आब जारी॥
गहे बर्क बदन है नाजनीनाँ। हे खूब लगी बजार मीनाँ॥
है फिरते कहीं ये हूरो गिलमाँ। बैठे कहीं जाहिदो मुसलमाँ॥

सैकड़ों प्रकार की बस्तियां और सृष्टिकी रचना देखते हुए ऊपरको चलता है-और स्वर्गों तथा वैकुण्ठोंकी सैर करते और समस्त बस्तियों और शून्यको पार करके तब सत्यलोकको पहुँच जाता है।

कबीर साहबका मंगल

चल हंसा सतलोक हमारे, छोड़ो यह संसारा हो।

यहि संसार काल है राजा, कर्मको जाल पसारा हो।
चौदह खंड बसे वाके मुखमें, सबही को करत अहारा हो।
जारबार कोयला कर डारन, फिर फिर दे अवतारा हो।
ब्रह्मा विष्णू शिवतन धरिया, और को कौन विचारा हो।
सुर नर मुनि सब छलछल मारले, चौरासीमें डारा हो।
मध्य अकाश आप जहँ बैठे, ज्योति शब्द ठहियारा हो।
ताको रूप कहांलग बरनो, अनंत भान उजियारा हो।
श्वेतस्वरूप शब्द जहां फूले, हंसा करत बिहारा हो।
कोटिन चांद सूर्य छिपि जैहैं, एक रोम उजियारा हो।
वही पार इक नगर बसत है, बरसत अमृत धारा हो।
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, लखो पुरुष दरबारा हो।

इस सत्य लोककी मनोहरता और हंसोंका रहन सहन और रीति व्यवहार सूक्ष्मवेदके पढ़नेसे जाना जावेगा।

मुसद्दस

यह हरदो जहां काल पुरुषके है हिजारे।
हर सिम्त व हर जायमें यम जाल पसारे॥
यक लोक व यक वेद दो दरियाके किनारे।
सैयादके काबूमें हैं सब जीव बेचारे॥
चलती है यहां तेग व तलवार दो धारे।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे॥
जब भूल गया आदमको आपही आपा।
पावन्द हुवा तिफली जवानी व बुढ़ापा॥
सबपर है लगा मलिक मौत मोह व छापा।
है आग लगी बेशः जलेगा यह सरापा॥
जलते हैं धोल उड़ते धुवें धार शरीरे।

चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ॥
अफसोस लिया लूट धरम धरमन धूरत ।
एक इश्क जदः भई है हुस्न है औरत ॥
हर कौन किया भौन है यह मोहिनी मूरत ।
दिल पार हुवा पारः बमह पारए सूरत ॥
बाजार खड़े मार वा बीमार नजारे ।
चल हंस अचल मोलि दो मावाय हमारे ॥
कैलास चलेगा व जिनूँ लोक चलेगा ।
अमरावती अलकावती गोलोक चलेगा ॥
सब स्वर्ग चलेगा व तपोलोक चलेगा ।
जो हद्द जनो मर्दमें सो लोक चलेगा ॥
वो भी चल जावे जहां नौलाख सितारे ।
चल हंस अचल मोलि दो मावाय हमारे ॥
कोई न रहे एक पुरुष लोक रहेगा ।
आवे जो वहांसे सो खबर उसकी कहेगा ॥
सब कौल कर शमः अजिले सोल बहेगा ।
जिसको वह नजर आवे सो फिर कछु न चहेगा ॥
निश्चल सो रहे कायक जहां अमृतधारे ।
चल हंस अचल मोलि दो मावाय हमारे ॥
हंसोंकी हुस्न खूबी कही जाए सो कैसे ।
यह नातिकः गुम सुम्म बयां कीजिए ऐसे ॥
एक मूय सुनौविर कह इस नूरका जैसे ।
छिप जायँ करोडों महेहुर तलअत तैसे ॥
सब हंसापुरुषरूप पुरुष उनको दुलारे ।

चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ॥
जहाँ रात न दिन है व नहीं सूरज चन्दा ।
सोहँग दुरै चँवर करे पुरुष अनन्दा ॥
यक मूरत सारे न खुदावन्द न बन्दा ।
इस मंजिल नजदीक नहीं कालका फन्दा ॥
जिस लोक महेशःको परमहंस पधारे ।
चल हंस अचल मोलि दो मावाय हमारे ॥
सतगुरुकी शरण लेके चलो बहके उसपार ।
वह कादिर मुतलक हुवा जिस जीवका मददगार ॥
कर पलमें सुबुकदोष उठा उसका गराँ बार ।
पहुँचावे वतनमें न बुतनमें होवे औतार ॥
आजिज से गुनहगार कतारोंको जो तारे ।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ॥

इति कबीर चरित्र बोध समाप्त

सत्यसुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त, पुरुष, मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतान, धनी धर्मदास, चुरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रबोध गुरुबालापीर, केवल नाम, अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रकट नाम, धीरज नाम, उग्र नाम, दया नामकी दया, वंश-ब्यालीसकी दया

अथ श्रीबोधसागरे

अष्टत्रिंशतिस्तरंगः

अथ गुरुमाहात्म्य-प्रारम्भः

★

धर्मदास वचन

धर्मदास कर जोरे ठाढ़े । एकटक सुरति प्रेमचित बाढ़े ॥
करहु दया तुम निर्गुण स्वामी । वचन सुनावहु अन्तर्यामी ॥
किमि गुरु ध्यान बन्दना कीजे । होहि सुदृष्टि मोहि कहि दीजे ॥
जा पद जीव तरे भवसागर । शोक हिये हंसनपति आगर ॥
तेहि मगाशिष गुरुपद लागू । नहिं धन धाम होय अनुरागू ॥

सतगुरुवचन

धर्मदास बूझे भल ज्ञाना । तुमसे कहौं सत्य चितमाना ॥
साहेब सम सतगुरु कहँ जानो । दुजी भावना चित्त न आनो ॥
जब गुरु मिले करे परनामा । छन छन पल पल आगे जामा ॥
गुरु चाहत जो शिष हे नागर । होय अधीन शीख मतिआगर ॥
शीष सुमिरि निशदिन अनुरागा । पानदेन वाइस मतभागा ॥
सद्गुरु शब्द गहे टकसारा । भवजल जीव उतारे पारा ॥
सद्गुरु कर्म देखि जिव केरा । तत्क्षण गुरू करहि निवेरा ॥
तिनुका तोरी देइ जिव याना । फिर नहिं जन्म धरे भवआना ॥
तुरते तब पावे टकसारा । होय हिरण्मय हंस हमारा ॥
वर्णभेद निर्णयकरि पावे । कालत्रास तेहि निकट न आवे ॥
प्रथमहि गुंजबरणको लेषा । सत्यशब्द गुरु कहै विशेषा ॥
गुंजवरण जो हंसा होई । गुरुलहि तेई हंस समोई ॥
गुंजवरण पावे परवाना । राय बंकेज हंस मगु जाना ॥
कर्म देखिकै तिरन तुरावे । राय बंकेजको पान जो पावे ॥
साखी–देहि पान जेहि जीवको, कर्म कटा तेहि जान ।
हंस होय सत्यपुर चले, सद्गुरु वचन प्रमान ॥

चौपाई

वरण भेद पावही प्रवाना । सो हंसाकर लोक पयाना ॥
पावे दर्श पुरुषके जाई । रहे अटल पुनि छत्र तनाई ॥
करे अटल युग युगका राजू । जिन पाया निर्णयका साजू ॥
होय बहुरि स्थिर गर्भ न आवे । वरण भेद परवाना पावे ॥
सो गुरुकी पुनि आरति कीजे । चरण पखारि चरणरज भीजे ॥
सो रज हिय अरु शीश चढावे । कालप्रबल तेहि निकट न आवे ॥
ऐसे गुरू मुक्तिके मूला । तेहि पद सम दूजा नहिं तूला ॥

गुरुसाहेब जाने दृढ़ हीता। जेहि परताप काल जग जीता॥
शिष्य जो करे गुरूसे चोरी। अजगर योनि होय तेहि केरी॥
शिष्य जो गुरुसे अन्तर करई। जन्म जन्म चौरासी परई॥
गुरु निंदा श्रवण सुने जबही। वेगिहि ठांव तजे पुनि तबही॥
जेहि कानन सुमिरन सुनि लीन्हा। निंदा सुनि चह मूँदन कीन्हा॥

साखी—गुरुनिंदा श्रवणन सुने, तत्क्षण छोड़े ठांव।
जेहि कान गुरुस्तुति सुने, निन्दा निकट न ल्याव॥
गुरुसे द्रोही शिष्य जो, संतन कीन्ह विरोध।
सो चौरासी भर्म ही, मारे काल करि क्रोध॥

चौपाई

गुरुकी आशीष नहिं मानी। करि अभिमान कालसम जानी॥
गुरुहि छोट करे शीष समाई। सोई जन्म जन्म भरमाई॥
शिष्य जो भोगै गुरुकी नारी। होइ अजगर बसै विपिन मँझारी॥
तन छूटै धरि वृष अवतारा। लहि अनेक विधि पाप दिकारा॥
काया छुटै वृभषकी जहिया। स्वानजन्म पुनि पावे तहिया॥
भूँकि भूँकि जग मरे गँवारा। विषय पाप पचवे संसारा॥
शूकर जन्म होय पुनि ताही। सकल अपावन निशिदिन खाही॥
निलज होय योनिनमें परई। लख चौरासी भ्रमता फिरई॥

साखी—पाप विषय नहिं परिहरे, मरि मरि ले अवतार।
कहें कबीर धर्मदाससों, ऐसे कर्म अपार॥

धर्मदास वचन—चौपाई

धर्मदास विनती अनुसारी। हे सद्गुरु मैं तुम बलिहारी॥
तेहि जीव किमि होय उबारा। फांसी डारै काल अपारा॥
सो साहब कहिये मोहिं सांचै। जैसे जीव कालसे बांचै॥

सद्गुरु वचन

धर्मदास बूझेहु भल बाता। सो अब तोहि कहों विख्याता॥

कुटिल है जीव कर्म अति आगर। तासु कथा भाषों सुनो नागर ॥
चौथी पीढ़ी अंश मम होइहैं। नाम प्रमोददास जग पैहैं ॥
दास प्रमोद प्रकटि संसारा। लेखा शब्द देहि टकसारा ॥
जीव अंध शरण कर्म जैहैं। तासु कर्म सब दूरि बहैहैं ॥
नरियर हाथ लेहि पुनि जाका। तिरन तुराव कर्मगति ताका ॥
ता पीछे परवाना देहैं। हंस उबार अपन कर लेहैं ॥
सत्यशब्द चले टकसारा। पलमें हंस उतारे पारा ॥
दास प्रमोद प्रकटे जगमाहीं। बिछुरे हंस लोककूं जाहीं ॥
अमृत धारी देहि प्रवाना। सो हंसा पूरुष मनमाना ॥

साखी-कर्म कटे तेहि जीवके, जाकहँ देहै प्रान।
ऐसे ऐसे पुरुषके, हंस करे निर्वान ॥

चौपाई

जेहि जीव देहैं कड़हारी। सत्यशब्द देहैं टकसारी ॥
ध्यानभेद भाषो समुझाई। निर्णय देख हंस मुकताई ॥
निर्णय पाय करे कडहारी। धर्मराय मुख जरत उबारी ॥
सो कडिहार सत्य धर्मदासू। जीवन कर्म करे जो नासू ॥
निर्पवनहिका करे विचारा। तासु जीव हम पार उतारा ॥
निर्पवनहि ले गहिहे हाथा। " " " ॥
छेहत्तरके आगे भाषा। तावट हंसलोक ले राषा ॥
सोई पवन हंसन रखवारा। भवजल जब उतारे पारा ॥

साखी-छेहत्तरके आगे, सतहत्तर गह योग।
जरा मरण भ्रम मेटके, कबहि न व्यापै सोग ॥

चौपाई

सात पाँच नरियरमें नाहीं। ता सजीव जानें गहिहो वाहीं ॥
ताहे जीव आपना जानी। कर्मरूपता कर्म न मानी ॥

युग बंधन पाये जो पाना। हंस होय सत्यलोक समाना॥
दृढ प्रतीत होइ करे गुरुसेवा। भक्तिहीन गुरु पावन देवा॥
साखी-दीन्ह नील जेहे नानहूँ, भक्तिभाव अनुराग।
निश दिन गुरु चरण गहे, हंस होवे बड़भाग॥

धर्मदास वचन-चौपाई

धर्मदास कहे हंसन पति राजा। भलविध कीन्ह हंसको काजा॥
तुमहि पुरुष हो तुमही ज्ञानी। तुमहीं वंश रूप हम जानी॥
पुरुष रूप तुम उत्पन्न कीन्हा। वंश रूप जग तारण लीन्हा॥
सतयुग कौन जीव जग रेहू। केहि विध हंसन आन उबारेहू॥
कौन नग्र कहवा तुम गयऊ। केतिक जीव शरण तुम भयऊ॥
कैसे सेवा कीन्ह बनाई। हिये दलक होके समुझाई॥

सतगुरु वचन

पुरुष अवाज आये भव सागर। सत्य सुकृत हम नाम उजागर॥
उत्तर दिशा गयउ निज ठामा। श्रीनग्रे पहुँचेउ तब ग्रामा॥
राय मोहम तहाँके राजा। भक्त करत भेटत कुल लाजा॥
सुन्दर बदन रूप अधिकाई। परजा सुखी राजसुख पाई॥
शुचि संयमआत्मज्ञान उजागर। दीन लीन्ह संतन सो आगर॥
करत खोज साधू सो प्रीती। अति आनंदरूप सुखरीती॥
भांति भांतिके मंडप छावा। साधु संत आदरके लावा॥
करे महोत्सव साधु बोलाई। प्रेम पुरुष निशदिन मनभाई॥
निश दिन वेद कथासों प्रीती। कौन भांति जिव यमसों जीती॥
साखी-खोज करत चित व्याकुल, ढूंढत सगलो भेष।
सिरजनहार बतावई, सबही कहत अलेष॥

चौपाई

चले राय तहां बद्रीनाथा। सुत सुमित्र लिये रानी साथ॥

साधुरूप हमही कर लीन्हा । रायसंग तत्क्षण पग दीन्हा ॥
गये नृप जहवाँ प्रीतम बिराजा । भांति भांतिकर बाजन बाजा ॥
कछुक द्रव्य ले आगे राषा । विनय दंडवत बहुविध भाषा ॥
होत कुलाहल मंगल चारी । भांति भांति गावे नर नारी ॥
बद्रीपरश रायकर आसन । बैठ नृपति जाय सिंहासन ॥
हम जीवन सौशब्य पुकारा । धार धार फिरे सेवनके धारा ॥
चेतहु प्राना शब्द सँदेशा । चलो जहां तहां हंस नरेशा ॥
तहवाँ जाय बहुरि नहिं आवे । एक चित्त होय नाम लोलावे ॥
सकल जीवसे कहेउ चेताई । एको जीव नहिं पतिआई ॥
सात दिवस रायहि तब बीता । कौतुक एक तहां हम कीता ॥

छंद–गयउ मंडपपास तत्क्षण जहां बद्रीनाथ हो ।
रूप पाहन कीन्ह पारस दिनेहु मस्तक हाथ हो ॥
बीति निशि भिनसार भो तब जाय पंडा पूजही ।
करत आरति भयउ चक्रित देखादे जावे तब बूझही॥

सोरठा–आरत आहेकू घात, प्रतिमापद कंचन भयो ।
कहत सकल सो बात, राजारामदास जाय जनायो ॥

चौपाई

राजा सुनत हर्षि चित दीन्हाँ । प्रभु मायाको जानन लीन्हाँ ॥
भयो अचम्भो लोगन सबही । लीला आप कीन्ह प्रभु अबही॥
स्तुति करत बहुत हर्षाहीं । सत्य भेष कोइ चीन्हत नाहीं ॥
राजा दिल केरे सब साधू । चले संत जुथ जुथ मतबाधू ॥
राजा झारी लीन्हे हाथा । सकल भेद कह नावहि माथा ॥
रानी साधुन चरण पखारा । राजा आपन कर जल ढारा ॥
सकल भेष कहे बैठे जेवनारा । जय जय मंगल होत उचारा ॥
तब हम तहां बैठे जाई । पूर्ण शशी सम रूप दिखाई ॥

श्वेत अंग कीन्हेउ अति पावन । बैठे अधर सुकृत मन भावन ॥
देखि लोग सब भये अचंभा । हर्षित राय चरण गहिथंभा ॥
बहुतक साधू मम गृह आया । ऐसे साधू नहिं हम पाया ॥
को तुम आहु कहांते आई । आपन परचे कहो बुझाई ॥

सुकृत बचन

जो तुम बूझहु राय सुजाना । आपन कथित कहां सैदाना ॥
अमरलोकते पुरुष पठाई । जीव उबारन हम जग आई ॥
आए उत्तर दिशि चितलावा । श्रीनग्र तुम कारण आवा ॥
बद्रीनाथ आवे तुम जहिया । पापपुञ्ज सब भागे तहिया ॥

छन्द–जीव सबसों कहेउ घरघर, शब्द काहू ना गहे ।
गयउ बद्रीजीको मंदिर, चित्त मम हर्षित अहे ॥
दीन्ह मस्तक हाथ तत्क्षण, रूपपारस जिन दियो ।
प्रीति तुव हिय देखि दृढ़ होय,दरश अब तोकह दियो ॥

सोरठा–भक्त हेतु तुव अंग, साधन प्रिय तुव हिये अहे ।
निश साधनके अंग, तातचित तोहे राचहे ॥

चौपाई

एतिक बचन राय सुने जबहीं ।राजा बचन माहि विहसि तबहीं॥
निःसंगत जिमि उगे अकाशा । कोक शोक मिट होत हुलासा॥
इमि राजा दर्शन आनंदा ।जिमि चकोर पायो निशिचन्दा॥
रानी राय चरण उर धारा ।क्रिया कीन्ह मम ब्रिथा बिसारा॥
मोहि सनाथ कीन्ह प्रभु पावन। मग अकर्म हारा मनभावन ॥
आपनकर कीजे मोहि दाया । हम चीन्हा यह तुम्हरी माया ॥
सकलजीव चकित मन भायउ । नगर लोग सब देखन धायउ ॥
तरुण वृद्ध औ बालक धाए । सबही देखि प्रदक्षिण लाए ॥
सन्त वृद्ध बहु जुरे अपारा । अस्तुति करे सकल बहु वारा ॥

छन्द-पाणि जोरे राय ठाढे दोहु पद मोहि पावनो ।
चरण कमलअधार तुम्हारे उभय ओर नभावनों ॥
छोड़ी नारी पुत्र पुत्री तुरग धन गज संपता ।
राज काज गूमान छोड़ेउ देखत तव पद मन रता॥
सोरठा-अब प्रभु तुमते काज, यहि विध मनमें मानि तोहि ।
तजे लोक कुल लाज, सत्यपद चित अनुराग मोहि॥

सतगुरु वचन-चौपाई

राजा विनय कीन्ह बहु मोरी । हृदय गुमान तजी है तोरी ॥
कैसे तोह काल उठ भाजा । ऐसी तब मति भई दराजा ॥
राजगुमान छोडि गहु चरणा । भेंटो तोर जरा औ मरणा ॥
सतगुरु चरण सीख मन लाई । काल प्रबल तब निकट न आई॥
सत्रह रानी कुँवर पचासा । एकचित होय भर्म सब नासा ॥
जब लग भर्म मिटे हिय नाहीं । तोलग काल गहे जिव बाही ॥
गृह जिव सुमत होय सब एका । तब तुम गहो सन्तका टेका ॥
एकही सुर्ति भक्ति होय ठाना । ते हंसा मम संग सिधाना ॥
बातन भक्ति होय नहिं राजा । बातन नाहे सरत कछु काजा ॥
जब तुम मोहत जो मद माया । तब तेहिले हम लोक सिधाया ॥
गृहसंपत सब देह लुटाई । राज काज छोड़ो चतुराई ॥
गज धन तुरग सकल तुम छोड़ो । दुर्लभ मारगमुख मति मोड़ो ॥
तब मैं तोहि अपनो करि जानो । भक्त प्रेमचित ज्ञान समानो ॥
छन्द-मोह मद अभिमान संयुत, लोभ तृष्णा अतिबली ॥
कामि कामिनी करत क्रीडा, देवऋषि जिव सब छली ॥
वह सकल त्यागै सबू पागै, ज्ञान अविचल पद गहे ॥
ताहि जीवले लोक पहुँचे, काल कर तेहि ना गहे ॥
सोरठा-सो जीव सँग मम होय, सकल त्याग एकनाम गह ।
और आश नहिं कोय, शब्द गहे मन हर्षिके ॥

राजामोह वचन-चौपाई

एतिक शब्द सुनो मतिमाना । दृढ प्रतीति उपजा चित ज्ञाना ॥
तत्क्षण हस्ती तुरग मँगवावा । धनसंपति सब तुरत लुटावा ॥
एकचित होय राय औ रानी । कुँवर पचास सुर्त एक आनी ॥
पुत्र पचास संग वे रहई । एक सुर्त ते बाते करई ॥
इमि सतगुरुकी सेवा कीजे । जेहि परतीत अभयपद लीजे ॥
हे सद्गुरु जीवन सुख दाता । देत राज युग युग यह बाता ॥
नेगी योगी राय बुलावा । सकल नग्र तुम कहैं गोहरावा ॥
सद्गुरु शरण राय गहि पाई । जेहि अनुराग होय हो आई ॥
नेगी जाय कहे सब पासू । राजा गह साहेब विश्वासू ॥
प्रजा सकल कीन्हा मत एका । होय सुमति गहो शब्दहि टेका॥
नेगा और प्रजा सब आये । राजासो उठि विनती लाए ॥
राय मता तुम है अवगाहा । हम सब जीव संग तुम आहा ॥
जो आयसु होवै महराजा । सो हम करें मेंटि कुल लाजा॥

राजाका मोह वचन

सफल जन्म चाहो रे भाई । सद्गुरु शरण गहो लौलाई ॥
एक सुर्त हर्षों दृढ नागर । गुरु रानिय हंसा होय आगर ॥
ऐसे गुरुसों बिनती लाऊ । सकलो नग्र संग ले जाऊ ॥

छंद-सकल जीवन सुर्ति करके, राय चल हर्षित भये ।
जहाँ आप विराजे सुकृती, धाय पदपंकज नये ॥
जीव सब तुम शरण आये, आपने करि लीजिये ।
दया करि जिव बन्दि छोरे, अमर वासा दीजिये ॥

सोरठा-रानी सत्रह साथ, कुँवर पचास पद गहि लिये ।
सब जीवन नायेहु माथ, दरस दान प्रभु दीजिये ॥

चौपाई

साहेब चलो महल पग दीजै । हंसराज आपन कर लीजै ॥
दूजो चित कीजै जनि मोही । बारबार बिनवौं प्रभु तोही ॥
हम अजान कछु जानत नाहीं । तुम तो पुर रहे सबही माहीं ॥
कृपा करो मम बिथा विसारो । कालजाल जीवन निर्बारो ॥
चलि मंदिर पगु दीजे स्वामी । विनय करों सुनो अन्तर्यामी ॥
चले सुकृत महल पगु धारा । परजा रानी कुँवर भूआरा ॥
राजा रतनसिंहासन लाई । चरण बंदि सुकृतहि बैठाई ॥
सत्रह रानी आरति करहीं । बहुविध चितसों विनती धरहीं ॥
सकल जीव हैं शरण तुमारे । भवसागरते जीव उबारे ॥
हंसमती जेठी नृपरानी । साहेब चरण पखारे आनी ॥
हाथे चवँर कुँवर सब ढावत । एकहिटक सबे रूप निहारत ॥
ठाढ़े राय जोर दोय पाना । साहेब कहो शब्द सहेदाना ॥
जेहि विध जीवमुक्त परभाऊ । सो साहेब मोहि भाषि सुनाऊ ॥

सुकृत वचन

छंद-वचन साहेब भाषे राजा, करहु आरति पावनं ।
चार गुरु किंकरहु साजी, कालकर्म नसावनं ॥
चित्र चै चित्र धोती, श्वेत वस्त्रहि लावनं ।
चित्र आरति साज राजा, करहु मंगल गावनं ॥
सोरठा-मेवा अष्ट प्रवान, चौका चंदन फेरहू ।
दलझारी तहां आन, सवासेर महँ चेतहू ॥

चौपाई

तंदुल सवासेर ले आना । हार आरती कलश परवीना ॥
पुंगीफल अरु श्वेतहि पाना । चौकामहँ धरो जो आना ॥
जिव पीछे नरियर कर लेहू । जनियर सुकृत हाथ सो देहू ॥

कञ्चन कलस पांच धरो बाती । ज्वलित कपूर धरो बहु भांती ॥
दल अमृतकी कञ्चन झारी । डार सुगन्ध धरो तेहि बारी ॥
खरचा सात मँगावहु सेता । गासे सात वजन कर लेता ॥
आगरु साते ताहि प्रवाना । सो खरचा ले दल ये आना ॥
खरचा सात धरे दल जबही । धर्म देख थरहर भये तबही ॥
कनक पटम्बर कीन्ह सिंहासन । तापर साहेब कीन्हे आसन ॥
आनंद मंगल कीन्ह उचारी । राय धरा नरियर तेहि बारी ॥
युथ युथ जूरे जीव सब आए । नरियर धरे सुकृत मन भाए ॥
सत्रह रानी सुत सुत नारी । ते सब आय चरण चितधारी ॥
युग बंधे राजा अरु रानी । सोविधिसकलजीवमिलजानी ॥
भावरि देय प्रदक्षिण दीन्हा । हंस उबार अपनकर लीन्हा ॥

छंद-तब चरण मृदु मंजुल पावन अतिहि सुहावन भावन ।
अमि मूरतिसूरत धारत त्रिविध ताप नसावन ॥
आदि अनंत अनादि पुरुष करहु दया जाहिको ।
जीव जेहि तुम पकरि बहियां कालग्रस नहिं ताहिको ॥

सोरठा-तुम प्रभु शब्दस्वरूप, अमित भाव लखि ना तरे ।
तुच्छ बुद्धि मनरूप, जीवनपकरि नचावहुँ रे ॥

चौपाई

दीजे मोहि शब्द सहिदानी । तुमते नहीं बड़ो कहु दानी ॥
जेते जीव अमरघर जाई । होइ अमर भव बहुरि न आई ॥

सुकृतवचन

राजा रानी तृणहि तूरावा । त्रिगुण पदवितें जीव बचावा ॥
कुँवर पचास रायमत लीन्हा । हर्षित होय सुमत इन कीन्हा ॥
प्रजा सकल नग्रनके आवा । सत्य सुकृतके दर्शन पावा ॥

बालक तिया वृद्ध सब आए। सो साहबके पद लपटाए ॥
पुरुष अंक दीन्हेउ मति आगर। पाय पान भये हंस उजागर ॥
स्मतकहाथ दीन्ह जिव सबही। जाते यम नहिं रोके कबही ॥
पाय पान तब भए सनाथा। सकल जीव तब नाये माथा ॥

राजाका मोहवचन-छन्द

जिमि घन नभमें शशि अवलोकत सिद्ध होत उमंगही ॥
शब्द नभ गुरुचरण इमि निशि कर्म सूर्त तरंगही ॥
तिमि हर्षं राजा सकल जिव मिला करत कोलाहल सोहही ॥
बृद्ध हंसन यूथ ठाढे निरखि सुकृतहि मोहहीं ॥

सोरठा-अब दीन्हा निज पान, अधम जीव अपने किये ॥
बिनय एक अनुमान, देश आपने ले चली ॥

चौपाई

यह भवसागर अति अवगाहा। सुर नर देव पाए नहिं पाहा ॥
दर्शन आय दीन्ह तुम जाही। आपनकर राखे गहि ताही ॥
निशदिन यमहीफंद लगावत। शब्दहि त्यागि विषयमन ध्यावत ॥
पलपल काल करत है घाता। शब्द तुम्हारा श्रुति नहिं राता ॥
ताते बिनय करों बहुबारा। सकल जीव हैं शरण तुमारा ॥
एकहि सुरत सकल जिव केरा। अब जनि साहेब लावहु बेरा ॥
बेगि लै चलो वाही देशा। अमरपुरी जहां हंस नरेशा ॥
अबजनि मोहि राखहु भवसागर। ले चलो जहवां हंस उजागर ॥
दीनबंधु प्रभु कीजे दाया। सकल हंस ले लोक सिधाया ॥
भेटे चरण पुरुषके जाई। अब भव चिर नाहीं ठहराई ॥

सकल हंस वचन-छन्द

जीव चढ़ावें करत करुणा सुनहु नरपति नागरा।
करहु सद्गुरु बिनय दृढ़ होय, नहिं रहब भवसागरा ॥

गुरु करे हिय दया त्यागे, मामा चिता व्याकुल अहे।
अमर शोभा देख वे गुन, हर्ष जीवन अति अहे ॥

सोरठा—अब जिन लावहु बेर, ठाढ़े सकल अकुलावहीं।
प्रभु दयावंत जो होइकै, वे पुरुष दर्श करावहीं ॥

राजाका मोहवचन—चौपाई

राजा रानी कुँवर पचासा। सकल जीव विनती परकाशा ॥
बेग लये चलो हंस पति राजा। वह विनती करे सकल समाजा॥
चातक स्वाति रटत जिमि जैसे। तृषावंत सबरे जिव तैसे ॥

सुकृत वचन

सत्य सुकृतमें सूरति समानी। होय निशंक करो रजधानी ॥
पुरुष नाम राजाकहँ दीना। संग लोग हंसन सब लीन्हा ॥
राय मोह इम लोक चलि जाई। सत्तर सहस्र हंस सँग लाई ॥
ऐसे सुमति करो जो बंदा। कालत्रास नहिं हो दुखद्वंद्वा ॥
एकचित होय सुरति जेहि लागा। सत्य शब्द सो तन मन पागा॥
देखि काल दूरहिते भागे। जो पदपुरुष नाम दृढ़ लागे ॥
राय गए जहां हंस समाजा। आए हंस आरती साजा ॥
गावहिं मंगल करहि कुलाहल। षोडश शृंगारा अंग भल ॥

राजाका मोह वचन

राजा देखि चकित मन पागा। बार बार सुकृत पद लागा ॥
देखेउ लोक वरन अतिपावन। अब हमपाये निज मनभावन ॥

सुकृत वचन

सुकृतहि चले राय ले साथा। जाय पुरुष कहु नायउ माथा ॥
छंद—दर्श पाय नित जीव वे सब, रूप भयो परकाश हो।
अमिय फल जब पाये हंसा, द्वीप द्वीप विलास हो ॥

सुबना सज्य शिर छत्र सोहे, बैठ हंस समाज हो।
भए हर्षित राय रानी कीन लोक निवास हो ॥

सोरठा--इमि हंसन परसंग, युग बाधे सो हंस होय।
लोक लाज तज रंग, ते पहुँचे अमरा पुरी ॥

इति श्रीगुरुमाहात्म्य ग्रंथ संपूर्ण